हिन्दी मासिक

# सच्चा राही

सामाजिक एवं साहित्यिक

लखनऊ

जनवरी, 2004 वर्ष 2 अंक 11

## दया और क्षमा

अल्लाह उस पर दया नहीं करता जो दूसरों पर दया न करे और उस व्यक्ति को छमा नहीं करता जो दूसरों को क्षमा न करे।

(फ़ारूक़े अअ़ज़म)

अगर इस गोले में लाल निशान है तो आपका वार्षिक चन्दा समाप्त हो चुका है। कृपया अपना वार्षिक चन्दा जल्द भेजिए।

—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

— सहायक —
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2741235
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

| | |
|---|---|
| एक प्रति | रु० 9/— |
| वार्षिक | रु० 100/— |
| विशेष वार्षिक | रु० 500/— |
| विदेशों में (वार्षिक) | 25 यूएस डालर |

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिस सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ—226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ्तर मजलिस सहाफत व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

# विषय एक नज़र में


| | | |
|---|---|---|
| • हमैं ज़र्रा ज़र्रा पता दे रहा है | सम्पादकीय | 3 |
| • कुर्आन की शिक्षा | मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०) | 5 |
| • प्यारे नबी की प्यारी बातें | मौलाना सय्यद अ़ब्दुल ह़यी ह़सनी | 6 |
| • इस्लाम एक परिचय | मौलाना सय्यद अबुल ह़सन अ़ली ह़सनी | 7 |
| • ह़ज्ज के सफर के आदाब | डा० एच०आर० सिद्दीकी | 9 |
| • उदारता और अमानत दारी के नमूने | डॉ० मु० इज्तिबा नदवी | 10 |
| • क्या इस्लाम तलवार से फैला | आमिना उस्मानी | 13 |
| • सलाम (पद्य) | हैदर अ़ली नदवी | 14 |
| • परामर्श प्रस्तुत है | सगीरा बानो | 15 |
| • जिन्नात का परिचय | अबू मर्गूब | 16 |
| • आप की समस्याएं और उनका ह़ल | मुहम्मद सरवर फ़ारूकी | 17 |
| • मुगल बादशाहों का व्यवहार | सै० सबाहुद्दीन अ़ब्दुर्रहमान | 20 |
| • शक्ति शाली महान देश अमरीका की दुर्दशा | आ़रिफ़ अ़ज़ीज़ भोपाली | 23 |
| • क्यों मुसलमान रस्मों में फंस गया ? | हैदर अ़ली नदवी | 24 |
| • ह़ज्ज से सम्बन्धित | इदारा | 25 |
| • श्रेष्ठ कौन है ? | मज़हर अ़हमद | 27 |
| • बच्चियों की तालीम व तरबियत | खैरुन्निसा बेहतर | 29 |
| • मुनाजात | मौ० मु० सानी ह़सनी | 30 |
| • यह कैसा अंधकार है? | मु० सरवर फ़ारूक़ी नदवी | 31 |
| • निकाह़ और पति पत्नी के अधिकार | सादिक़ा तस्नीम फ़ारूक़ी | 33 |
| • मानवता का सन्देश | इदारा | 34 |
| • ज़रूरी है रैगिंग पर रोक | योगेश कुमार गोयल | 35 |
| • इस्लाम यूरोपीय देशों में.... | ग्रीहित | 37 |
| • भारतीय धर्म निरपेक्षवाद की आज़माइश | प्रफुल्ल विदवई | 38 |
| • व्यायाम | इदारा | 40 |


❑❑❑

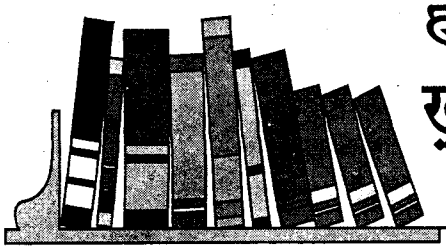

# हमें ज़र्रा ज़र्रा पता दे रहा है। ख़ुदा है ख़ुदा है ख़ुदा है ख़ुदा है।।

*डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी*

शैख़ सअ़दी कहते हैं :–

"बुद्धिमानों की दृष्टि में वृक्षों की पत्तियों की हर हर पत्ती अल्लाह तआ़ला (परमेश्वर) के परिचय में एक पुस्तक है।"

यों तो हर पत्ती एक पत्ती है। देखने में हरी है। आंखों को अच्छी लगती है। हम उसे तोड़ लेते हैं। उसके टुकड़े कर देते हैं। जानवर उसे खा लेते हैं। बिना किसी ध्यान के इस प्रकार की बहुत सी बातों से अल्लाह (परमेश्वर) की ओर ध्यान नहीं जाता परन्तु जब हम इस प्रकार सोचते हैं कि इस पत्ती का अस्तित्व कैसे हुआ। यह पेड़ से कैसे निकली? कैसे बढ़ी? कैसे हरी हुई? इसमें पशुओं का आहार कैसे है ? फिर यह पेड़ कैसे उगा, बढ़ा ? फिर ध्यान पेड़ के उगाने वाले और उसमें विशेष गुण पैदा करने वाले की ओर जाएगा तो अवश्य यह समझ में आएगा कि जब हमारी टोपी बिना बनाए नहीं बनी। हमारे कपड़े बिना काटे सिले नहीं सिल सके तो यह वृक्ष और उसका बनाने वाला अवश्य कोई है। इस प्रकार हर वस्तु अपने बनाने वाले का पता देती है।

अध्ययन करें तो पाएंगे कि पत्तियां तो पेड़ की नाक का काम करती हैं। उनके द्वारा वह सांस लेकर फ़ज़ा (वायुमण्डल) से कार्बन डाई आक्साइड को खींच लेता है जो पेड़ पत्तियों की ग़िज़ा है और सांस बाहर लाकर अन्तरिक्ष में आक्सीजन छोड़ देता है जिस पर जान दार का जीवन निर्भर है। फिर हर पत्ती में बहुत सी नसें, तथा धमनियां मिलेंगी जिन के द्वारा पत्ती के हर हर भाग तक उस की अजीविका पहुंच रही है। इन नसों का जाल और उनका प्रबन्ध देख कर बुद्धि हैरान रह जाती है कि यह मानव जिस को अपनी बुद्धि तथा ज्ञान पर गर्व है। वह अपनी बुद्धि से धरती की धरोहर और उसका कोष बाहर निकालता है। समुद्र की छाती पर दोड़ लगाता है। उसके भीतर पन डुब्बी दौड़ाता है। आसमानों में जहाज उड़ाता है। राकिट द्वारा चान्द तक पहुंच जाता है। टीवी तथा इन्टर नेट द्वारा दुन्या का कोना कोना घर बैठे देखता है। फून द्वारा दुन्या के किसी भी कोने से बात कर लेता है परन्तु क्या वह एक ऐसी पत्ती बना सकता है जिस में छोटी से बड़ी होने की शक्ति हो और उसके अन्दर इस पत्ती जैसी व्यवस्था हो ? कदापि नहीं। परन्तु इस प्रकार अगर पत्ती को पढ़ना शुरूअ़ करें तो हर हर पत्ती ईश परिचय में पूरी पुस्तक नज़र आएगी।

एक पत्ती क्या, संसार का एक एक कण ईश परिचय में एक पुस्तक है। ऐटम के गिर्द इलेक्ट्रान तथा न्यूट्रान की व्यवस्था कितनी जटिल तथा आश्चर्य जनक है। क्या यह व्यवस्था स्वतः है ? कदापि नहीं।

एक फूल पर ध्यान दें, किस प्रकार वह निकलता बढ़ता फिर खिलता है। उसकी बनावट पर ध्यान दें पंखड़ियों में समानता, उसकी गोलाई बीच में उसका ज़ीरा, उसमें सुगन्ध, उसमें रस, जिसे चूस कर मधु मक्खियां मधु (शहद) एकत्र करती हैं। क्या इतना जटिल तथा व्यवस्थति कार्य स्वतः हो सकता है? कदापि नहीं?

आप सूर्य को देखें उसके उदय, अस्त का समय कितना स्पष्ट, परिपक्व तथा व्यवस्थित है।

चन्द्रमा तथा दूसरे तारों और नक्षत्रों पर ध्यान दें इन सब की पैदाइश इन में सन्तुलित पारस्परिक खिंचाव तथा इन की व्यवस्था स्वतः सम्भव है? कदापि नहीं। अवश्य ही इन के पीछे सर्वशक्तिमान, सर्वज्ञानी व्यक्तित्व का हाथ है। मनुष्य स्वयं अपने में ध्यान दे उसका अस्तित्व, उसके शरीर की बनावट, उसकी बुद्धि सभी तो अपने अद्वितीय विधाता पर साक्षी हैं।

मनुष्य के शरीर का कोई अंग ज़रा भी इधर उधर हो जाए, आखों के बीच की दूरी बढ़ा दी जाए, नाक कुछ नीचे या ऊपर हो जाए, मुख ज़रा बढ़ा दिया जाए। दांत चौड़े कर के ३२ के स्थान पर १६ कर दिये जाएं। कोई भी अंग अपनी जगह से ज़रा हटा दिया जाए बल्कि साइज़ ही घटा बढ़ा दिया जाए तो मनुष्य की सारी सुन्दरता मिट्टी में मिल जाए। सुन्दरता ही नहीं अंगों का यह संतुलन न हो तो खाने पीने चलने फिरने में भी कठिनाई हो। क्या मनुष्य का यह सन्तुलित तथा सुन्दर शरीर स्वतः है? कदापि नहीं यह तो किसी सर्वज्ञानी का बनाया हुआ है।

पशुओं को मल मूत्र के पश्चात् शौच की आवश्यकता नहीं, उनको कपड़े पहन्ने की आवश्यकता नहीं, उनको खाना पका के खाने की आवश्यकता नहीं, उनका जीवन घर बनाए बिना बीत जाता है उनको घर बनाने की आवश्यकता नहीं। मनुष्य को इन सब की जरूरत थी तो इस को ऐसे हाथ मिले और ऐसी बुद्धि मिली कि यह सारे काम सरलता पूर्वक कर सकता है तथा अपने ज्ञान और बुद्धि से बराबर उन्नति कर सकता है। क्या पशुओं और मनुष्यों में यह आश्चर्य जनक अन्तर स्वतः है? कदापि नहीं, इसके पीछे किसी सर्वशक्तिमान सर्वज्ञानी का हाथ है।

हम देखते हैं कि किसी औरत या किसी मादा पशु की छाती में दूध नहीं होता परन्तु जब उसके पेट में बच्चा आ जाता है और उस को पैदा होना होता है तो मां की छाती में दूध आ जाता है। क्या यह स्वतः है ? कदापि नहीं। बच्चा पैदा होता है तो उसके दांत नहीं होते– क्यों ? इस लिए कि अभी उस का गुजर दूध ही पर होना है। फिर जब वह खाने के लाइक़ हो जाता है तो उसके दांत निकल आते हैं क्या यह सब स्वतः होता है? कदापि नहीं, इस के पीछे किसी सर्वज्ञानी का आदेश चल रहा है। इस प्रकार हम हर वस्तुओं में ध्यान दें तो कह उठें

हमें ज़र्रा ज़र्रा पता दे रहा है– खुदा है, खुदा है, खुदा है, खुदा है।

हर इन्सान के मन में यह बात अवश्य आती है कि उसका कोई पैदा करने वाला है। उसकी बुद्धि उसका साथ देती है। फिर वह जानना चाहता है कि वह पैदा करने और पालने वाला कैसा है ? मनुष्य अपनी बुद्धि से केवल इतना ही जान सकता है कि उसका कोई पैदा करने वाला और पालने वाला है परन्तु उसका उतना परिचय अपनी बुद्धि द्वारा नहीं पा सकता जितना ईश्वर (अल्लाह) की ओर से अभीष्ट है। ईश्वर (अल्लाह) ने अपनी कृपा से इस का प्रबन्ध स्वयं कर रखा है। उसने इन्सानों को अपना आवश्यक परिचय और अपने आदेश उन तक पहुंचाने के लिए नबियों और रसूलों को भेजा जिन की गिन्ती वही जानता है। सब के अन्त में हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को भेजा उन्होंने अल्लाह (ईश्वर) का जो परिचय दिया उसमें से कुछ महत्व पूर्ण बातें यहां लिखी जाती हैं।

वह जीवित है। उसको हर चीज़ पर सामर्थ्य है। कोई वस्तु उस के ज्ञान से बाहर नहीं। वह सब कुछ देखता है। सुनता है। बात करता है। लेकिन उसकी बात चीत हम लोगों की बात चीत जैसी नहीं। वह जो चाहे करता है उसको कोई रोक टोक करने वाला नहीं। केवल वही पूजने योग्य है। उसका कोई साझी नहीं। अपने बन्दों (भक्तों) पर कृपाशील है। वह बादशाह है। दोष रहित है। वही अपने बन्दों की सुरक्षा करता है। वही सम्मान (इज़्ज़त) वाला है। बड़ाई वाला है। सारी चीज़ों

( शेष पृष्ठ १६ पर )

# क़ुर्आन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

## मजलिस का अदब :

ऐ मुसलमानो जब तुम से कहा जाए कि मजलिसों में कुशादगी करो (जगह निकालो) तो कुशादगी करो। अल्लाह तुम्हारे लिये कुशादगी करेगा और अगर कहा जाए उठ जाओ तो उठ जाओ। (मुजादला : ११)

इस आयत में मजलिस में बैठने का अदब बताया गया है। अधिकांश ऐसा होता है कि लोग कोशिश कर के उसी जगह पर बैठते हैं जो किसी कारण विशेष स्थान रखती है। ऐसी दशा में जगह तंग हो जाती है। जिस से लोगों को तकलीफ़ होती है और अगर उनसे ज़रा हटने और दूसरों के लिए जगह बनाने को कहा जाता है तो वह बुरा मानते हैं। अतः अल्लाह तआला ने अदब (शिष्टाचार) सिखाया कि मजलिस में खुल कर बैठा करो और अगर किसी जगह तंगी हो जाने पर जब कहा जाए कि फैल कर बैठो तो फैल कर बैठ जाना चाहिए। सहाबा (रज़ि०) का नियम था कि जहां सरलता से जगह मिल जाती वहां बैठ जाते, भीड़ को चीर कर आगे बैठने की कोशिश न करते। मजलिस में किसी को उठाकर उसकी जगह न बैठना चाहिए। अगर कोई शख़्स मजलिस में एक जगह बैठा हो फिर किसी काम से उठ कर चला जाए तो पलटने पर वही उस जगह का अधिकारी है।

मजलिस में जो प्रतिष्ठित स्थान (मुअ़ज़्ज़ज़ जगह) है तो स्वयं वहां बैठने की कोशिश न करना चाहिए। किसी दूसरे के यहां जाना हो तो उसकी आज्ञा के बिना उसके विशेष बैठने के स्थान पर न बैठना चाहिए।

## दूसरों के घर जाने का अदब

"मुसलमानो! अपने घरों के सिवा दूसरें घरों में घर वालों के पूछे बिना और उनको सलाम किये बिना न जाया करो। यह तुम्हारे लिये अच्छी बात है (यह आदेश तुम को इस लिये दिया गया) ताकि (ऐसे औसरों पर) तुम इसका ध्यान रखो। फिर अगर तुम को पता चले कि घर में कोई आदमी मौजूद नहीं है तो जब तक तुम्हें अनुमति न हो उसमें न जाओ और अगर (घर में कोई हो और तुम से कहा जाए कि (इस समय) वापस जाओ तो लौट आओ यह (लौट आना) तुम्हारे लिये अधिक स्वक्षता की बात है। (सूर-ए-नूर : २७, २८)

किसी के घर में प्रवेश होने के लिए पहले अनुमत (इजाज़त) लेना चाहिए इस के बहुत लाभ हैं। किसी समय आदमी ऐसी दशा में होता है कि वह नहीं चाहता कि दूसरे उसको ऐसी हालत में देखें तो वह कह देता है या कहला देता है इस समय लौट जाइये तो बुरा न मानते हुए लौट आना चाहिए।

हमारे हुज़ूर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम जब किसी के घर जाते थे तो इजाज़त लेने से पहले दरवाज़े के दायें या बायें खड़े होते थे। सामने नहीं खड़े होते थे ताकि अन्दर की चीज़ पर निगाह न पड़े।

एक बार एक साहिब आये और आप के दरवाज़े के सामने खड़े हो गये तो आप ने फ़रमाया कि दरवाज़े के दायें, बायें खड़े हो क्योंकि इजाज़त लेने का हुक्म इसी लिए दिया गया है कि घर के अन्दर की चीज़ों पर निगाह न पड़ने पाए।

इजाज़त लेने का तरीक़ा (विधि) यह है कि सलाम कर के कहे कि क्या मैं अन्दर आ सकता हूं? जवाब न आने पर तीन बार तक सलाम करके इजाज़त मांगे फिर भी जवाब न आए या इजाज़त न मिले तो वापस जाना चाहिए। अगर कोई खुद से बुलाए तो यही इजाज़त है और इजाज़त लेने की ज़रूरत नहीं।

दुकानों में जाने के लिए या आम जगहों (सार्वजनिक स्थलों) में इजाज़त की ज़रूरत नहीं।

स्वयं अपने घर में भी सलाम कर के प्रवेश करना चाहिए।

कुछ लोग ऐसे भी हैं जिन को बार बार अनुमति लेने में कष्ट होगा जैसे छोटे बच्चे आदि यह हर समय घर में आते जाते रहते हैं इसलिए उनको आज्ञा लेने का आदेश नहीं परन्तु तीन समय ऐसे हैं कि उनमें इनको भी आज्ञा लेनी है अ़िशा की नमाज़ के बाद, सुबह की नमाज़ से पहले और दोपहर में आराम के समय।

●●●

# प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौलाना अब्दुलहयी हसनी

## ननिहाल वालों की मदद :–

२००. हज़रत उम्मुल मूमिनीन मैमूना (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने रसूलुल्लाह (सल्ल०) की बिना इजाज़त के अपनी एक लोंडी आज़ाद कर दी जब मेरी बारी का दिन आया और आप तशरीफ लाए तो मैं ने कहा या रसूलल्लाह (सल्ल०) क्या आप को मालूम है कि मैंने एक लौंड़ी आज़ाद कर दी आप सल्ल० ने फ़रमाया क्या तुम ने ऐसा किया है ? मैंने कहा हां फ़रमाया अगर तुम उसको अपने ननिहाल वालों को दे देतीं तो उसका तुम को बड़ा अज्र मिलता।(बुखारी, मुस्लिम)

## सिला रहमी से उमर में बरकत–

२०१. हज़रत अनस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया जो अपने रिज़्क में वुसअ़त चाहता हो और अपनी उमर में तरक्क़ी चाहता हो वह सिला रहमी करे।

(बुखारी, मुस्लिम)

## रिश्तों का लिहाज़ –

२०२. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने हुजूर (सल्ल०) से आहिस्ता नहीं बल्कि बुलन्द आवाज़ से सुना है आप फरमा रहे थे कि फलां खानदान के लोग मेरे दोस्त नहीं है, बल्कि अल्लाह मेरा दोस्त है और नेक मोमिन हमारे दोस्त है लेकिन उनका रिश्ता है उस रिश्ता का लिहाज़ रखता हूं।

## दोहरी फ़ज़ीलत –

२०३. हज़रत अब्दुल्लाह बिन मसऊद (रज़ि०) की बीवी ज़ैनब सकफी (रज़ि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्ल०) ने फ़रमाया ऐ औरतों तुम सदकः करो, चाहे अपने जेवर ही में से क्यों न हो फ़रमाती हैं कि फिर मैं अब्दुल्लाह बिन मसऊद के पास लौट कर आई और उनसे कहा कि आप खाली हाथ हैं (अर्थात ग़रीब) और हुजूर (सल्ल०) ने हमको सदकः का हुक्म दिया है आप जाकर हुजूर (सल्ल०) से पूछ लें अगर आप को मेरा सदकः देना दुरुस्त है तो अच्छा है वरना दूसरे लोगों पर खर्च करूँ अब्दुल्लाह बिन मसऊद ने कहा, बल्कि तुम ही जाओ अतः मैं हुजूर (सल्ल०) के पास गई देखती हूं कि अंसार हज़रात में से एक औरत हुजूर (सल्ल०) के दरवाज़े पर खड़ी है उसके आने का मक़सद भी वही था जो मेरा, हुजूर बड़े रोअ़ब में थे। ( बात करने की हिम्मत नहीं होती थी) तो हज़रत बिलाल (रज़ि०) निकल कर हमारे पास आये हमने उनसे कहा, आप हुजूर के पास तशरीफ़ ले जाएं और खबर दें कि दरवाज़े पर दो औरतें खड़ी हैं। आप से पूछ रही हैं कि क्या हम अपने शौहरों और उनके निगरानी वाले यतीमों पर सदकः दें, तो जाइज है यह न बताइये कि हम लोग कौन हैं ? हज़रत बिलाल (रज़ि०) हुजूर (सल्ल०) के पास तशरीफ़ ले गये और आपसे पूछा, आप ने दरयाफ्त फ़रमाया वह दोनों कौन हैं ? हज़रत बिलाल (रज़ि०) ने कहा एक अन्सारिया हैं दूसरी जैनब हैं हुजूर (सल्ल०) ने फिर पूछा कौन सी ज़ैनब? हज़रत बिलाल ने बतलाया अब्दुल्लाह की बीवी हुजूर सल्ल० ने फ़रमाया इन दोनों को दोहरा अज्र है रिश्ता का अज्र और सदकः का अज्र।

(बुखारी व मुस्लिम)

## अल्लाह की राह में महबूब चीज़ खर्च करनी चाहिए –

२०४. हज़रत अनस बिन मालिक रज़ि० से रिवायत है कि मदीना मुनव्वरह में खजूरों के बागान के एतिबार से अबू तल्हा (रज़ि०) सब से ज्यादा माल वाले थे और उनके बाग़ात में उनको 'बैरहा' सब से ज्यादा पसंद था वह मस्जिदे नबवी के सामने ही था हुजूर सल्ल० उसमें तशरीफ़ ले जाते और उसका उमदा पानी नोश फ़रमाते, जब यह आयत नाजिल हुई तो हज़रत तल्हा (रज़ि०) हुजूर (सल्ल०) के पास गये और अर्ज़ किया अल्लाह के नबी अल्लाह तआला का इर्शाद है।

अनुवाद – "मेरा सब से ज्यादा महबूब माल बैरहा है वह अल्लाह के लिए सदकः है, मैं अल्लाह के नज़दीक उसके नेकी और ज़खीरा होने की उम्मीद रखता हूं इस लिए ऐ अल्लाह के नबी, जो अल्लाह का हुक्म हो फ़रमाइए, हुजूर (सल्ल०) ने फ़रमाया, बहुत खूब यह फाइदेमंद माल है मैंने तुम्हारी बात सुन ली मेरा ख्याल है कि तुम इस को अपने अज़ीज़ों को दे दो। हज़रत अबू तल्हा (रज़ि०) ने कहा मैं यही करूंगा अतः अपने रिश्तेदारों और चचा के बेटों

( शेष पृष्ठ २२ पर )

# इस्लाम एक परिचय

मौ० सैयद अबुल हसन अली नदवी

## इस्लामी समाज में पेशे न स्थायी हैं न तुच्छ

इस्लाम में पेशे और सेवाएं स्थायी हैसियत नहीं रखती हैं कि उन्हें बदला न जा सके, न ही उनकी बुनयाद पर क़ौमों और तबक़ों का गठन होता है। लोगों ने विभिन्न समयों में ज़रूरत और सुहूलत के अनुसार कोई पेशा अपना लिया। कभी–कभी वह एक अवधि तक सीमित रहा और कभी कई पीढ़ी तक चला। अब भी कुछ बिरादरियों में एक ही तरह का काम होता है। लेकिन न तो इसकी कोई मज़हबी हैसियत है और न वह मुस्लिम समाज का अटल क़ानून है। इन बिरादरियों में जो व्यक्ति जब चाहता है अपना पेशा और व्यवसाय बदल लेता है। और इस पर किसी को कोई आपत्ति नहीं होती और न इस्लाम में कोई पेशा घटिया दृष्टि से देखा जाता है।

मक्का–मदीना और अरब देशों में बड़े महान विद्वानों और प्रतिष्ठित मुसलमानों के नाम के साथ उस पेशे का नाम लगा हुआ है जो उनके पूर्वजों ने किसी ज़माने में इख़्तियार किया था, और इसमें न उनको कोई लज्जा महसूस होती है और न किसी दूसरे की निगाह में वह तुच्छ होते हैं।

## विधवा का दूसरा विवाह

विधवा का दूसरा विवाह मुसलमानों के यहां कभी दोषपूर्ण और आपत्तिजनक कार्य नहीं समझा जाता था। यह उनके नबी की सुन्नत थी, और हर युग में महान विद्वान, ईश्वर के परम भक्त, और वैभवशाली राजा बिना हिचक विधवा नारी से स्वयं शादी करते थे, और अपनी विधवा बहनों और बेटियों का दूसरा विवाह कराते थे। अब भी बहुत सी मुस्लिम विधवाएं अपनी मर्जी या किसी मजबूरी से दोबारा शादी के बिना रहती हैं। किन्तु विधवा की दोबारा शादी का चलन होना चाहिए। अन्य देशों में यह चलन अब भी पाया जाता है और विधवा से शादी कदापि खराब बात नहीं है।

## सलाम करने का रिवाज

मिलने जुलने आने जाने में सलाम का रिवाज है। सलाम करने वाला "अस्सलामु अलैकुम" कहता है जिसका अर्थ है "तुम पर खुदा की तरफ़ से सलामती हो", इसका जवाब है। "व अलैकुमुस्सलाम" अर्थात और तुम पर सलामती हो। यह मुसलमानों का अन्तर्राष्ट्रीय सलाम है।

## इस्लाम में ज्ञान की प्रतिष्ठा

कुरआन की पहली 'वही' १२ फ़रवरी सन् ६११ ई० के लगभग हज़रत मुहम्मद सल्ल० पर मक्के के निकट 'हिरा' नामी गुफा में नाज़िल हुई। जिसमें सूरः अलक़ की प्रारम्भिक पांच आयतें उतरीं जिनका अनुवाद इस प्रकार है–

"ऐ मुहम्मद अपने परवरदिगार का नाम लेकर पढ़ो जिसने पैदा किया। जिसने इन्सान को खून की फुटकी से बनाया। पढ़ो और तुम्हारा परवरदिगार बड़ा दयालु है। जिसने क़लम के ज़रीअे इल्म सिखाया। इन्सान को वह बातें सिखाई जिन का उसको ज्ञान न था।"

सृष्टा ने अपनी वाणी की इस पहली क़िस्त और दया व रहमत की बरसात के इस पहले छीटों में भी इस वास्तविकता के उद्घोषण को स्थगित नहीं किया कि ज्ञान और कलम का चोली दामन का साथ है। हिरा की गुफा में और उसकी तनहाई में जहां एक नबी जो पढ़ा नहीं था, अल्लाह की तरफ से दुन्या के मार्गदर्शन का ज्ञान भी नहीं सीखा था, उस पर 'वही' नाज़िल होती है तो इसका शुभारम्भ 'इक़रा' शब्द से होता है अर्थात पढ़ो । क्या विश्व के इतिहास में इसकी नज़ीर कहीं मिल सकती है? यह संकेत था इस ओर कि आप को जो उम्मत दी जाने वाली है, वह उम्मत मात्र ज्ञानार्जन ही न करेगी बल्कि जगतगुरू और ज्ञानमयी होगी वह ज्ञान को इस दुन्या में फैलाने वाली होगी। जो ज़माना आप के हिस्से में आया वह भय का ज़माना नहीं होगा, अज्ञानता का नहीं होगा, ज्ञान के विरोध का नहीं होगा। वह ज़माना वह युग ज्ञान का युग होगा, ज्ञान के विरोध का नहीं होगा। वह ज़माना युग ज्ञान का युग होगा, बुद्धि का युगा होगा, हिक्मत का युग, निर्माण का युग तथा मानव प्रेम और विकास का युग होगा।

आगे कहा गया है कि उस परवरदिगार के नाम से पढ़ो जिसने पैदा किया। उस समय बड़ी ग़लती यह थी कि ज्ञान का रिश्ता परवरदिगार से टूट गया था, इसलिए ज्ञान सीधी राह से हट गया था। इस टूटे हुए

रिश्ते को यहां जोड़ा गया और ज्ञान के साथ परवरदिगार का नाम आया, इसलिए कि ज्ञान का संतुलित विकास संभव है। यह दुन्या की सबसे बड़ी क्रांतिकारी आवाज़ थी। जिससे दुन्या के कानों ने सुनी थी जिसकी कोई कल्पना नहीं कर सकता था। यदि दुन्या के साहित्यकारों और बुद्धिजीवियों से कहा जाता है कि आप बताइये कि 'वही' नाज़िल होने वाली है, जो ईशवाणी होगी उसका शुभारम्भ किस शब्द से होगा, तो मैं समझता हूं, उनमें एक आदमी भी, जो उस ज़माने की अज्ञानता से परिचित था, यह नहीं कह सकता था कि वह 'वही' 'इक़रा' शब्द से प्रारम्भ होगी।

ज्ञान और शिक्षा का मार्ग बहुत लम्बा, जोखिमपूर्ण और जटिल है इसलिए इसका शुभारम्भ खुदा के मार्गदर्शन में किया गया, यह वह यात्रा है जहां दिन दहाड़े काफ़िले लुटते हैं, पग–पग पर गर्त हैं, घाटियां और नदियां हैं, सांप और बिच्छू हैं, इसलिए इस यात्रा में एक परिपूर्ण पथप्रदर्शक की आवश्यकता है और यह परिपूर्णता केवल ईश्वर में है। बेल–बूटे बनाने का नाम ज्ञान नहीं, खिलौने से खेलने का नाम ज्ञान नहीं वह ज्ञान जो मात्र मनोरंजन के लिए हो, वह ज्ञान नहीं, एक दूसरे को लड़ाने का ज्ञान ज्ञान नहीं वह ज्ञान नहीं जो नेशन को नेशन से लड़ाने का काम करे, वह ज्ञान नहीं जो केवल अपने पेट की ख़न्दक भरना सिखाए वह ज्ञान नहीं जो ज़बान को केवल प्रयोग करना सिखता है, बल्कि कहा गया है कि पढ़ो तुम्हारा परवरदिगार बड़ा दयालु है, वह तुम्हारी आवश्यकता से, तुम्हारी कमज़ोरियों से कैसे अनभिज्ञ हो सकता है। आप विचार करें कि क़लम की प्रतिष्ठा इससे अधिक किसने बढ़ायी होगी कि हिरा की गुफा में जो पहली 'वही' नाज़िल हुई उसमें क़लम को भुलाया नहीं गया, वह क़लम जो उन दिनों शायद ढूंढने से भी मक्का में किसी घर में न मिलता।

अन्त में कहा गया कि ज्ञान अगाध और अपार है इसकी कोई सीमा नहीं। "इन्सान को सिखाया जिसका उसको पहले से ज्ञान न था।" साइंस क्या है ? टेकनालॉजी क्या है? इन्सान चांद पर जा रहा है, अन्तरिक्ष में उड़ानें भर रहा है, यह सब इसी ईशवाणी "इन्सान को सिखाया जिसका उसको पहले से ज्ञान न था।" का करिश्मा नहीं तो क्या है ?"

## ललित कलाएं और मुसलमान

इब्राहीमी सभ्यता की एक विशेषता उसकी गम्भीर यथार्थवादी दृष्टिकोण और ललित कलाओं के बारे में बहुत सोच विचार के मध्यम मार्ग अपनाने वाला दृष्टिकोण है। वह सौन्दर्य, सुव्यवस्था, सलीक़ा और सज–धज की क़दरदान है। किन्तु जिन मनोरंजक कलाओं को यूरोप ने 'फाइन आर्टस' का नाम दिया है उनकी कुछ शाखाओं को वह नाजायज़ क़रार देती है जैसे नाच, चित्रकला, (जीवधारी चीज़ों की) और बुत तराशी (मूर्तियों का गढ़ना), और कुछ में मध्यम मार्ग की शिक्षा देती है जैसे लय व नग़मा (गायन) की विशेष बन्धनों के साथ लाभान्वित होना या काम लेना जाइज़ है। इन ललित कलाओं में व्यस्तता बहर हाल इसकी आत्मा और इसके उद्देश्य के विपरीत और खुदा से डर, परलोक की चिन्ता और उसके नैतिक स्तर के लिए हानिकारक है और एक मुसलमान से यह आशा की जाती है कि वह इनका ध्यान रखेगा।

## मज़हब ज़िन्दगी का संरक्षक है

ज़माने के अन्दर ठहराव भी है और गतिशीलता भी यदि वह इन दोनों विशेषताओं में से किसी एक से वंचित हो जाये तो वह अपनी उपादेयता खो देगा। इसी प्रकार सृष्टि में जो भी चीज़े हैं, व्यक्तित्व है सब के अन्दर धनात्मक और श्रणात्मक लहरें बराबर अपना काम करती हैं। इन दोनों धाराओं के मिलने से कर्म और कर्तव्य का जन्म होता है। मज़हब हर परिवर्तन का साथ दे यह ज़रूरी नहीं और न ही वांछनीय है। यह किसी थर्मामीटर की परिभाषा तो हो सकती है कि वह तापक्रम बतलाएं, यह उस वेदरकाक (वायु की दिशा सूचक यन्त्र) की भी परिभाषा हो सकती है जो किसी हवाई अड्डे या ऊंचे भवन पर लगाया गया हो केवल यह मअ़लूम करने के लिए कि हवा किस ओर की चल रही है लेकिन मज़हब की परिभाषा नहीं हो सकती। मैं समझता हूं कि आप में से कोई भी ऐसा नहीं होगा जो मज़हब को उसके उच्च स्थान से उतार कर थर्मामीटर अथवा वेदरकाक का स्थान देना चाहता हो। और यह कि वह मात्र समय के परिवर्तन की पावती देता रहे, एकनालेज करता रहे। सहीह़ आसमानी मज़हब के तो *क्या किसी तथाकथित* मज़हब के अनुयायी अथवा उसके प्रतिनिधी भी इस पोजीशन को स्वीकार कर लेने के लिए तैयार नहीं होंगे।

मज़हब परिवर्तन को एक यथार्थ मानता है और इसके लिए वह सारी गुंजाइश रखता है जो एक सहीह़ और

जायज़ व स्वाभाविक परिवर्तन के लिए ज़रूरी हों। मज़हब ज़िन्दगी का साथ देता है लेकिन साथ मात्र साथ देने के लिए नहीं है। उसका कर्तव्य यह भी है कि वह सदाचारी परिवर्तन और सदाचार विहीन परिवर्तन में अन्तर करे। और देखे कि उसका झुकाव विध्वंसत्मक है अथवा रचनात्मक, उसका परिणाम मानवता के हक़ में या कम से कम उस मजहब के अनुयाइयों के हक़ में क्या होगा? मज़हब जहां गतिशील जीवन का साथ देने वाला है वहां जीवन का लेखाकार संरक्षक भी है। गार्जियन का काम यह नहीं कि जो उसके संरक्षकत्व में हो उसके हर सहीह ग़लत सोच का साथ दे और उसे प्रमाणित करे। मज़हब ऐसा सिद्धान्त नहीं है कि जहां एक ही प्रकार की मुहर रखी हुई है, एक ही तरह की रोशनाई है और एक ही तरह का हाथ है जो दस्तावेज़ और अभिलेख आये उस पर मुहर लगा दे। यह मज़हब का काम नहीं है। मज़हब पहले से उसका जायज़ा लेगा फिर उसपर अपना फ़ैसला सुनाएगा और अगर कोई ग़लत अभिलेख उसके सामने आया है जिससे वह सहमत नहीं अथवा जिसको मानवता के हक़ में अहितकर समझता है तो वह न केवल उस पर मुहर लगाने से इन्कार करेगा बल्कि यह भी प्रयास करेगा कि वह उसे रोके।

यहां नैतिकता और मज़हब में एक अन्तर पैदा हो जाता है। मज़हब अपनी ज़िम्मेदारी और कर्तव्य समझता है कि ग़लत सोच को रोके। नैतिकता और मनोविज्ञान के विशेषज्ञ की ड्यूटी केवल यह है कि वह ग़लत सोच को इंगित कर दे, या अपना दृष्टिकोण बता दे, लेकिन मज़हब का प्रयास होगा कि वह उसका रास्ता रोक कर खड़ा हो जाये।

# हज्ज के सफ़र के आदाब

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

जब हज्ज फ़र्ज़ हो जाए तो उसके अदा करने में देर न करे अल्लाह पर भरोसा कर के सफ़र की तैयारी करे। मां बाप जीवित हैं तो उनसे इज़ाजत लेना चाहिए अगर वह बूढ़े हैं या बीमार हैं तो उनकी आज्ञा बिना हज्ज को जाना मकरूह है। इसी प्रकार यदि रास्ता शान्ति पूर्वक नहीं है तब भी मां बाप की आज्ञा बिना हज्ज को जाना मकरूह है। अलबत्ता यदिरास्ता ठीक है और मां बाप को सेवा की आवश्यकता नहीं है तो बिना पूछे हज्ज को जाएंगे तो हज्ज मकरूह न होगा परन्तु यह अच्छी बात नहीं है आज्ञा ले लेने में बड़ा सवाब है और फिर उनकी दुआएं साथ रहेंगी। अगर हज्ज फर्ज़ नहीं है नफ़ल हज्ज है तो हर दशा में मां बाप से इजाज़त लेना चाहिए नहीं तो हज्ज तो हो जाएगा परन्तु सवाब कम मिलेगा। अगर मां बाप न हों दादा, दादी, नाना नानी हो तो उनसे इजाजत लेना चाहिए।

बीवी बच्चों और वह लोग जिन का रोटी कपड़ा हज्ज पर जाने वाले पर शरीअ़त से अनिवार्य है अगर उनको वापसी तक का ख़र्चा दे दिया, और उन लोगों के लिये हाजी की वापसी तक की जान व माल के विनाश का भय नहीं है तो उनसे भी आज्ञा लेने की आवश्यकता नहीं है परन्तु अगर उस के न होने से घर वालां के जान व माल के विनाश का ख़तरा है तो ऐसी दशा में उनकी आज्ञा के बिना हज्ज को जाएगा तो हज्ज मकरूह होगा।

यदि किसी का क़र्ज़ा है और क़र्ज़ा जल्द अदा करना है तो उसकी आज्ञा बिना भी हज्ज मकरूह होगा। या फिर किसी को ज़िम्मेदार बना दे या फिर हज्ज की वापसी तक कर्जा देने वाले की ओर से मुहलत हो।

इन बातों का मतलब यह हुआ कि हाजी अपने मां बाप से आज्ञा लेकर हज्ज को जाए इसी प्रकार जिन का रोटी कपड़ा उस पर है उन से भी आज्ञा ले और जिससे क़र्ज़ ले रखा है उस से भी इजाज़त ले और कुछ हालात में तो इजाज़त लेना अनिवार्य है। जैसा कि ऊपर बयान हुआ नहीं तो हज्ज मकरूह हो जाएगा और हज्ज के सवाब में कमी हो जाएगी यद्यपि हज्ज अदा हो जाएगा। सफर आरम्भ करने से पहले सच्चे दिल से तौबा करना चाहिए। अगर किसी का माल दबा लिया हो तो उस को अदा करे या उस से मुआफ़ कराए। किसी को कष्ट पहुंचाया हो तो उस से मुआफ़ कराए। और तौबा करे कि आइन्दा ऐसा नहीं करेगा।

नीयत दुरुस्त करे सिर्फ़ अल्लाह को राज़ी और खुश करने के लिए और फ़र्ज़ अदा करने की नीयत हो नाम व नमूद (दिखवा) और हाजी कहलाने की बात दिल में आई भी हो तो इस्तग़फ़ार पढ़े और दिल से निकाल कर नीयत ख़ालिस अल्लाह को खुश करने की कर ले।

बहुत अफ़सोस होता है कि एक अहम फ़रीज़े की अदाएगी के लिए

(शेष पृष्ठ १६ पर)

# उदारता और अमानतदारी के नमूने

डॉ० मुहम्मद इज्तिबा नदवी

सच्चे खलीफा हज़रत उमर रज़ि० का मुबारक शासन काल है। इस्लाम के प्रचार प्रसार व जिहाद के लिए शाम, रूम, इराक़ व ईरान की ओर सैनिक और प्रतिनिधि मंडल अत्यन्त सफलता के साथ आगे बढ़ते जा रहे हैं। लोग बढ़ चढ़ कर इस्लाम में प्रवेश कर रहे हैं। सत्य धर्म इस्लाम के मार्ग में बाधा बनने वाले तत्व पराजित हो कर पीछे हटते जा रहे हैं। ईरान की सलतनत सिमटते देख कर वहां के सैनिक सरदारों और जनता ने अपना बादशाह बदल कर प्रसिद्ध सेनापति रुस्तम के नेतृत्व में एक विशाल सेना तैयार करना शुरू कर दिया है, ताकि मुसलमानों से निर्णायक जंग लड़ें। उस समय हज़रत मुसन्ना बिन हारिसा के नेतृत्व में मुसलमानों की सेना ईरान व इराक़ की सीमा पर तैयार खड़ी थी।

ईरानियों की युद्ध के लिए तैयारियों की सूचना फ्रंट से अमीरूल मोमिनीन हज़रत उमर रज़ि० को भेजी गई और सैनिक मदद की मांग की गयी। हज़रत उमर रज़ि० ने स्वयं एक लश्कर के साथ ईरानियों से जंग का इरादा किया, मगर हज़रत अब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब रज़ि० और दूसरे सहाबा ने उनको रोक दिया और सलाह दी कि ख़लीफा के लिए मदीना में रहकर समुचित परिस्थिति पर नज़र रखना और आवश्यकता के अनुसार उचित प्रबन्ध करना ज़्यादा ज़रूरी है। रणक्षेत्र में युद्ध कौशल में अनुभवी और प्रतिष्ठित सहाबी के नेतृत्व में यौद्धाओं को भेज दिया जाए।

अतएव हज़रत सअ़द बिन अबी वक्क़ास रज़ि० के नेतृत्व में सेना ने कूच किया और कादसीया में ईरानी लश्कर से चार दिन तक घमासान जंग हुई। अन्तिम दिन ईरानियों का सेनापति रुस्तम और उसके अनेक विश्वसनीय और बहादुर सैनिक मारे गए। ईरानियों की बड़ी करारी हार हुई। क़ादसिया की जंग में ईरानियों ने अपने बड़े सरदारों शहजादों और सलतनत के दरबारियों को भेजा था। उनके साथ बहुत अधिक धन दौलत व माल था जो सब का सब मुसलमानों के हाथ लगा। इससे पहले इतनी सारी दौलत कभी नहीं मिली थी।

हज़रत सअ़द बिन अबी वक़्क़ास रज़ि० ने सैनिकों के हिस्से बांटे और पांचवा हिस्सा बैतुलमाल में दाख़िल करने के लिए मदीना भेज दिया। हज़रत उमर रज़ि० के सामने पांचवा हिस्सा रखा गया तो वह चकित रह गए। किसरा का मोतियों और हीरों से जड़ा ताज, सोने के काम के कपड़े, किसरा के कंगन आदि चीज़ें आंखों ने पहले कभी न देखी थीं, उस सामान में शामिल थीं। बहुत सा सोना, चांदी व हीरे जवाहरात थे। आपके हाथ में लकड़ी की एक छड़ी थी, उससे उस क़ीमती ख़ज़ाने को उलट पलट कर रहे थे। फिर कहा जिन लोगों ने यह ख़ज़ाना यहां तक पहुंचाया है, वे निश्चय ही ईमानदार लोग हैं।

हज़रत अली रज़ि० ने कहा कि अमीरूल मोमिनीन आपने स्वयं उच्च आचरण और संयम व पाकीज़गी का तरीक़ा अपनाया तो आपकी जनता भी वैसी ही बन गयी। यदि आप असावधानी बरतते तो वे भी वही रास्ता अपनाते। हज़रत उमर रज़ि० ने आकाश की ओर सर उठाकर कहा : ऐ मेरे पालनहार ! तूने यह ख़ज़ाना अपने रसूल को नहीं प्रदान किया, यद्यपि वे तुझे मुझसे कहीं अधिक प्रिय थे और तूने अबू बक्र रज़ि० को यह नहीं दिया, यद्यपि वे भी तुझे मुझसे अधिक पसन्द थे और तूने मुझे प्रदान किया, मैं तेरी शरण चाहता हूं कि कहीं तू मुझे परीक्षा में डाल दे और उससे मुझे सज़ा मिले।' इसके बाद आपने वहां से उठने से पहले सारे माल को मुसलमानों में बांट दिया।

हज़रत तलहा बिन उबैदुल्लाह तमीमी रज़ि० चौथे व्यक्ति थे जिन्होंने मक्का में नबी सल्ल० की दावत पर इस्लाम स्वीकार किया, वे कुरैश के प्रतिष्ठित और सम्मानित व सफल व्यापारी और धनी लोगों में से थे, मगर कुरैश की यातनाओं, अपमान और कष्ट से नहीं बच सके थे। हज़रत अबू बक्र रज़ि० के साथ उन्हें भी घोर यातनायें दी गयीं। मगर आप के इरादों में कोई कमज़ोरी पैदा नहीं हुई। आप दृढ़ता के साथ सत्य के मार्ग पर डटे रहे। नबी सल्ल० और इस्लाम की सेवा में

लगे रहे। आपने नबी सल्ल० की ज़बान मुबारक से जन्नत की शुभ सूचना सुनी।

नबी सल्ल० ने उनकी असाधारण दानी प्रवृत्ति के आधार पर इन्हें तलहतुल खैर और तलहतुल जूद के उपनाम प्रदान किए थे। वे बड़े खुले दिल से ख़ुदा की राह में ख़र्च करते थे और दीन, दरिद्रों, फ़क़ीरों और ज़रूरतमन्दों की ज़रूरतों को पूरा करते रहते थे। यदि उनके पास जरूरत से ज्यादा माल जमा हो जाता, तो घबराए और डरे हुए रहते। एक बार 'हज्र मौत' (एक जगह का नाम जहां बड़ी तिजारती मंडी थी) से उनके व्यापार में लाभ के सात लाख दिरहम आए। पूरी रात डरते और कांपते हुए गुज़ार दी। उनकी पत्नी उम्मे कुलसूम बिन्त अबू बक्र रज़ि० उनके पास आयीं और उनको इस हाल में देखा तो पूछाः ऐ अबू मुहम्मद क्या बात है, क्या तुम्हें मुझसे कोई तकलीफ पहुंची है ?' उत्तर दिया नहीं, तुम तो एक बेहतरीन पत्नी हो, लेकिन मुझे इस बात की चिन्ता है कि उस आदमी का क्या हाल होगा जो सोता रहे और उसके घर में इतना माल हो।'

पत्नी ने कहा तो इसमें संकोच की क्या बात है तुम्हारे घर के आस पड़ोस में और दोस्तों और रिश्तेदारों में बहुत से ज़रूरतमन्द हैं, सुबह उठकर इन लोगों में बांट देना। फ़रमाया खुदा तुम पर दया करे, तुम बड़ी नेक बाप की बेटी, नेक स्त्री और भाग्यशाली व्यक्ति की पत्नी हो। सुबह उठकर मुहाजिरों और अनसार के सारे ज़रूरत मन्दों को ये माल बंटवादीजिए।

एक बार उनके पास एक आदमी आया और कुछ आर्थिक मदद मांगी, उनसे अपना कोई रिश्ता भी बताया। हज़रत तलहा रज़ि० ने कहा इस रिश्ते का तो मुझसे किसी ने उल्लेख नहीं किया, हां मेरी एक ज़मीन है जिसकी क़ीमत हज़रत उसमान बिन अफ़्फ़ान रज़ि० ने तीन लाख दिरहम लगा दी है, यदि तुम चाहो तो वह ज़मीन ले लो और यदि चाहो तो मैं वह ज़मीन हज़रत उसमान को बेचकर तुम्हें क़ीमत दे दूं। उस आदमी ने जवाब दिया कि नहीं मुझे ज़मीन नहीं, क़ीमत ही चाहिए। आपने वह ज़मीन बेच कर क़ीमत उसके हवाले कर दी। इसी आधार पर उन्हें दानवीर और दानशील के नाम से जाना जाता था। अल्लाह की उन पर हज़ारों रहमतें हों।

## दानशीलता के कुछ और नमूने

कुरैश की एक महिला उम्मे अनमार खिज़ाइया ने मक्का में गुलामों के बाज़ार में से एक युवक गुलाम खरीदा। उसका नाम ख़ब्बाब बिन अरत था। उम्मे अनमार ने उनकी समझदारी व चुस्ती देख कर हथियार बनाने की एक दुकान में बैठा दिया ताकि वह हथियार बनाना सीख लें। थोड़े ही समय में वे मक्का के प्रमुख कारीगरों में माने जाने लगे। मगर दिल बेचैन और मस्तिष्क परेशान रहता कि अचानक हज़रत मुहम्मद की नुबुव्वत का प्रकाश फैलता नज़र आया। नबी करीम सल्ल० की दावत पर ईमान लाने वालों में वह छठे आदमी थे।

उम्मे अनमार उनके इस्लाम लाने की सूचना पाकर क्रोध से लाल पीली हो गयीं और उनको बड़ी यातनाएं दीं, मगर वे अडिग रहे और सब कुछ सहन करते रहे एक सहाबी ने उनको उस स्त्री से ख़रीद कर रसूलुल्लाह की सेवा में प्रस्तुत किया। उन्होंने रसूलुल्लाह के साथ मदीना हिजरत की और जीवन भर नबी सल्ल० के साथ रहे और आपकी सेवा करते रहे। आख़िरी उम्र में अल्लाह ने माल व दौलत से माला माल कर दिया। आप बड़े दानी प्रवृत्ति के थे, खूब जी खोल कर खुदा की राह में ख़र्च करते थे। नक़दी, घर पर एक निश्चित स्थान पर रखते, जब कोई ज़रूरतमन्द, दीन, दरिद्र आता तो उसे बता देते और वह स्वयं उस में से अपनी आवश्यकता के अनुसार धन ले लेता। कभी दरवाज़ा बन्द नहीं किया और न किसी पर कोई पाबन्दी लगायी।

अन्तिम समय में उनके कुछ मित्र उनका हाल पूछने आए तो बताया कि मेरे घर में फ़लां स्थान पर अस्सी हज़ार दीनार है, मैंने किसी को लेने से नहीं रोका उसे फ़क़ीरों में और मिसकीनों पर ख़र्च करो।

हज़रत उर्वह बिन ज़ुबैर उम्मुल मोमिनीन हज़रत आएशा रज़ि० के भांजे थे जो उनको बड़े ही प्रिय थे। उन्होंने मुख्य रूप से उनकी शिक्षा एवं प्रशिक्षण की निगरानी की थी, जिसके नतीजे में वे अपने दौर के बड़े आलिम, आबिद, और परहेज़गार माने जाते थे। उन्हें दुनिया और उसकी चमक दमक से कोई लेना देना नहीं था। बनू उमैय्या वंश के खलीफाओं ने उन्हें जो वजीफ़े दिए थे, उससे उन्होंने मदीना में एक बड़ा खजूरों का बाग खरीदा। उसमें मीठे पानी का स्रोत, घनी छाया और फलों से लदे हुए पेड़ थे। बाग़ के चारों ओर दीवार खिंचवा दी थी, ताकि जानवर आदि से बचा रहे। जब फल तैयार हो जाते और खाने के योग्य हो

जाते तो बाग़ के द्वार खुलवा देते और आम छूट दे देते कि जिस का जब जी चाहे आए और खजूर खाए और ठंडा पानी पिए और ठंडी छाया से आनन्द उठाए। अतएव हर आने जाने वाला और मुसाफ़िर इस बाग़ से लाभ उठाता। हज़रत उर्वह बिन ज़ुबैर जब भी अपने इस बाग़ में दाख़िल होते तो यह आयत पढ़ते –

इसका अनुवाद यह है कि– 'जब तू आया था अपने बाग़ में कहा होता जो चाहा अल्लाह ने किया, अल्लाह के सिवा और किसी में कोई ज़ोर, ताक़त नहीं है''

नबी अकरम सल्ल० मदीना हिजरत कर चुके हैं। दावत इस्लामी का कार्य क्षेत्र बढ़कर नज्द तक पहुंच चुका है। नज्द के एक प्रमुख सरदार ज़ैद हंज़ली के कानों में नबी सल्ल० और इस्लाम के गुणों की ख़बर मिलती है, तो आप सेवा में उपस्थित हो कर इस्लाम स्वीकार करते हैं। आप सल्ल० उनको ज़ैद हंज़ली के बजाए जैदुल ख़ैर के नाम से पुकारते हैं। उनकी दानशीलता की एक घटना पढ़ लीजिए–

बनू आमिर के एक बूढ़े व्यक्ति ने बयान किया है कि हमारे इलाक़े में बड़ा सख़्त अकाल पड़ा और कुछ खाने पीने को नहीं रह गया, तो हमारे एक आदमी ने औरतों बच्चों को हेरह पहुंचाया और कहा कि मेरा यहां इन्तज़ार करो और उसने क़सम खाई कि या तो माल लेकर वापस होगा या फिर रेगिस्तान में मर जाएगा। सात दिन तक चलता रहा तब दूर से एक ख़ेमा नज़र आया। उसके पास ऊंटों का एक बाड़ा था, वहां पहुंचा तो दौलत मन्दी के लक्षण नज़र आए। खेमे के अन्दर झांक कर देखा तो एक सुन्दर बहादुर नवजवान एक सुन्दर घोड़े पर सवार है, उसके दाएं बाए दो गुलाम चल रहे हैं और उनके साथ सौ ऊंट हैं, उनके आगे नर ऊंट खड़ा है, इतने में वह बैठ गया तो सारे ऊंट भी बैठ गए। नवजवान भी उतर आया और गुलामों को आवाज़ दी कि दूध निकाल कर बूढ़े शैख़ को पिलाओ। इन गुलामों ने एक बर्तन में पानी भर कर दूध निकाला और शैख को पेश कियां शैख ने एक दो घूंट पिया, मैंने चुपके से खिसक कर बर्तन उठाया और पूरा दूध पी गया गुलाम आया तो उसे बर्तन खाली मिला। अपने मालिक से जाकर कहा कि आज तो शैख ने सब दूध पी लिया। नवजवान ख़ुश हुआ और एक दूसरी ऊंटनी की ओर इशारा किया कि उसका दूध निकाल कर शैख को दे आओ।

शैख ने इस बार भी एक दो घूंट पिया और बर्तन दूर रख दिया। मैंने फिर बर्तन उठाया और आधा दूध पिया ताकि किसी को सन्देह न हो। इसके बाद इन लोगों ने खाना खाया और गहरी नींद सो गए। मैं धीरे से उठा और ऊंट खोले, तरकश में तीर रखे, उस नवजवान के घोड़े पर सवार हो कर निकल भागा। मैं बड़ा खुश था कि घर वालों के लिए बड़ा अच्छा इन्तिजाम हो गया और मेरी क़सम भी पूरी हो गयी। मैं तीसरे पहर तक चलता रहा। पीछे मुड़ कर देख लेता मगर कोई नज़र न आया। अचानक मुझे एक अदमी बिजली की तरह तीव्र गति से चलता हुआ नज़र आया, वह बिल्कुल निकट मेरे सामने पहुंच गया। मैंने अपने तीर निकाल लिए और उसे सचेत किया यदि और निकट आने की कोशिश की तो तीर मारदूंगा। मैंने ये ऊंट इस लिए हासिल किया हैं कि मेरे घर वाले भूखे हैं और अकाल का शिकार हैं। मैंने क़सम खायी है कि मैं या तो माल लेकर वापस आऊंगा वर्ना मौत को दावत दूंगा।' उस वीर युवक ने बिना घबराए जवाब दिया, तो फिर तुम अपने को मुर्दा मान लो। मेरा निशाना देखो। जरा नर ऊंट की रस्सी देखो, उस में तीन गांठें हैं, तुम जिस में कहोगे मैं उसमें तीर उतार दूंगा। यह चेतावनी देकर उसने तीन तीर चलाए तीनों ही तीर बारी बारी से एक एक गिरह पर लगे।

उसका ऐसा अचूक निशाना देख कर मैंने हार मान ली। अपना तीर फेंक दिया तो वह मेरे पास आया और बोला, क्या ख़्याल है, मैं तुम्हारे साथ क्या व्यवहार करूंगा? मैंने जवाब दिया कि जो कठोर से कठोर हो सकता है, क्योंकि तुम्हारा घोर अपराधी हूं। उस बहादुर नवजवान ने कहा 'तुम्हारी परेशानी सुनकर मैं तुम्हारे साथ अच्छा सुलूक करूंगा। मैं यह सारे ऊंट और सारा सामान तुमको दे देता, परन्तु यह मेरी सम्पत्ति नहीं है बल्कि मेरी बहन की सम्पत्ति है। तुम मेरे साथ ठहरो, मेरा माल आने वाला है उसमें तुम्हें देकर तुम को जाने दूंगा।

कुछ दिन के बाद जब उसका काफिला आ गया तो उसमें से मुझको सौ ऊंट दिए और कुछ आदमी साथ कर दिए जिन्होंने मुझे सुरक्षित हेरह पहुंचा दिया। उस समय मुझे मालूम हुआ कि यह जां बाज़ और दानवीर नज्द का प्रसिद्ध सरदार ''ज़ैदुल खैर'' हैं। ●●●

# क्या इस्लाम तलवार के ज़रिये फैला ?

आमिना उस्मानी

१९६८ में आन्ध्र प्रदेश में एक नौजवान ने यह जानने के बावजूद कि हिन्दुस्तानी मुस्लिम समाज में शामिल हो जाने पर उसे किन प्रकोप भरी आंखों से देखा जायेगा जबकि मुसलमान उसके लिए कुछ भी न कर सकेंगे। परन्तु पूरी सत्यता जान लेने के बाद कि डर भय व आशाओं व आकांक्षाओं का केन्द्र केवल ईश्वर ही होता है उस नवजवान का अपना बयान है –

"मैंने ईसाइयत, हिन्दूमत और इस्लाम का अध्ययन किया है। ईसाइयत की शरण में आंखें खोलने के बाद मुझे उस से बड़ा लगाव था परन्तु उसकी इस धारणा पर कभी सन्तोष न हुआ कि ईश्वर एक भी है और तीन भी है, मैंने अपने मां बाप से पूछा और ईसाई धर्म प्रचारकों से भी संतुष्ट होना चाहा परन्तु मेरी उलझन बराबर बढ़ती रही। इसके बाद मैंने सोचा कि हिन्दू मत का अध्ययन करूं मगर मैंने यह देखा कि कोई सीधा व साफ़ रास्ता है ही नहीं और इस मैदान में केवल वही लोग दृढ़ता के साथ खड़े रह सकते हैं जो धर्म से हट कर दूसरी चीजों से ताक़त प्राप्त करते हैं। फिर मेरे सामने इस्लाम को जानने व समझने का अवसर आया। हमारी तेलगु भाषा में कुछ इस्लामी साहित्य मिला। उसे मैंने ध्यान से पढ़ा। कुछ अंग्रेज़ी भाषा से मदद ली इसी के साथ आंखें खोलकर आस पास के मुस्लिम समाज को देखा। मैं यह मानता हूं कि आज का मुसिलम समाज और मुसलमानों का रहन सहन आदर्श मुस्लिम सोसाइटी नहीं कही जा सकती। परन्तु इसके बावजूद मैंने ऐसा महसूस किया कि अल्लाह के एक और उसके सिवा किसी और खुदा के न होने की जो धारणा इस्लाम ने पेश की है वह किसी अन्य धर्म में मौजूद नहीं है। इस्लाम में किसी प्रकार की मूर्ति पूजा का अंश भी दूर–दूर तक नहीं पाया जाता और तीसरी बात यह है कि मुसलमानों के अन्दर एकता और समानता का जो गुण है वह दूसरे धर्मों में है ही नहीं।'

कर्नल डोनाल्ड एस राकवैल ने इस्लाम की जिन विशेषताओं से प्रभावित होकर इस्लाम स्वीकारा, वह स्वयं उनके शब्दों में हम यहां पेश करते हैं –

"इस्लाम की सादगी, उसकी मस्जिदों का सुखद और प्रभावित कर देने वाला वातावरण, उसके अनुयायियों की निष्ठा और इस धरती के करोड़ों लोगों का पांचों समय नमाज़ अदा करने के धार्मिक आत्मसम्मान व गौरव ने मुझे सबसे पहले अपनी ओर आकृष्ट किया। इसके बाद पैग़म्बरे इस्लाम (सल्ल०) की जीवन सम्बन्धी उच्च धारणा, करनी व कथनी में समानता, आपकी बेहतरीन नसीहतों, सदक़ा व दया का आदेश, विश्वव्यापी मानवप्रेम, सम्पत्ति में महिलाओं के हिस्से की घोषणा। इसके अलावा हुजूर सल्ल० ने हमें एक पूर्ण जीवन व्यवस्था प्रदान की।"

दूसरे धर्मों के साथ इस्लाम की उदारता और उदार हृदय के गुणों में स्वतंत्रता के इच्छुक व्यक्तियों के लिए आकर्षण है मुसलमानों के निकट हज़रत इब्राहीम अलैहि०, हजरत मूसा अलैहि० और हज़रत ईसा अलैहि० भी अल्लाह के एक मात्र संदेष्टा थे। इसमें संदेह नहीं कि इस उदार हृदय के मामले में इस्लाम दूसरे धर्मों से आगे बढ़ गया। इस्लाम हर प्रकार की धार्मिक मूर्ति पूजा से भी पाक है यही इसके शक्तिशाली व अति उत्तम धर्म होने की भी एक निशानी है। इस्लाम की दृष्टि में मस्जिद में, घर में, मन मस्तिष्क में केवल अल्लाह है जिसकी उपासना में न तो पैग़म्बरों की सजी धजी तस्वीरें न धार्मिक नेताओं की मूर्तियां ही शामिल हैं। इस्लाम में एकेश्वरवाद ऐसी निखरी हुई धारणा है कि उसमें न किसी नबी को अल्लाह का बेटा मान कर शीश नवाया जाता है न नबी की मां से प्रार्थना की जाती है न अल्लाह के तीन टुकड़े किए जाते हैं न अल्लाह को मनुष्य के रूप में मुक्ति प्रदान दाता माना जाता है। पैग़म्बरे इस्लाम का मान सम्मान केवल अल्लाह के बन्दे और रसूल के रूप में किया जाता है। बीते युग की क्रान्ति और नयी बातें खोजने वालों के अनुमानों ने इस्लाम की वास्तविक शिक्षा पर पर्दा नहीं डाला। सारे मामलों व कामों में सन्तुलित और अल्लाह का भय इस्लाम का नियम है जिसने मुझे अपना मतवाला बना दिया। पैगम्बरे इस्लाम ने स्वास्थ्य को

ठीक ठाक रखने व स्वस्थ रहने के लिए पूर्णरूप से सफ़ाई रखने व रोज़े रखने और अपने मन को क़ाबू में रखने का आदेश दिया।

मैंने अपने सफ़र के दौरान इस्लाम की विश्वव्यापी आपसी भाईचारे की भावना का जिसमें नस्ल, रंग, राष्ट्र और राज्य का कोई भेदभाव न था बड़ी गहराई के साथ अध्ययन किया है कि जिसके कारण इस्लाम ने मेरा दिल जीत लिया।''

ब्रिटेन की महिला बिरजित हुनी अपने इस्लाम स्वीकारने की कहानी स्वयं बयान करती है वे कहती हैं –

''मेरी मां ईसाई हैं और मेरे बाप किसी भी धर्म को नहीं मानते। मैं ने बचपन में एक ईसाई पाठशाला में शिक्षा प्राप्त की लेकिन मैं वहां से नास्तिक बनकर निकली। कनाडा में मैंने हिन्दू दर्शन शास्त्र का अध्ययन किया और हिन्दुओं के पवित्र ग्रन्थों का अध्ययन किया। मैं अब तक चीनी दर्शनशास्त्र ताउना शिनग, बौद्धमत और हिन्दू मत से परिचित हो चुकी थी। परन्तु इनमें से कोई भी मेरे मन को शान्त न कर सका, मेरी चेतना को सन्तुष्टि न दे सका क्योंकि ये तीनों दर्शनशास्त्र इस विशाल सृष्टि और दैनिक सामूहिक जीवन में किसी संतुलन तक पहुंचने में पूरी तरह नाकाम थे वे किसी एक पहलू को छोड़ जाते हैं।

तावता दर्शन शास्त्र का संस्थापक एक सन्यासी व संयमी की भान्ति धरती के दूर तक जाने वाले कोने में सत्य को खोजता रहा था। बुद्ध ने सत्य की खोज में अपने परिवार को त्यागा था। और हिन्दुओं की किताबें केवल सदाचार की शिक्षा देती हैं परन्तु क्या मनुष्य के सामूहिक जीवन के समस्त मामले केवल अंधविश्वास व निरुद्देश्य विचार हैं ? इस प्रश्न ने मुझे परेशान कर दिया।

इस्लाम के बारे में मैं अब तक कुछ न जानती थी बल्कि दूसरे पश्चिमी लोगों की भांति उसके विरुद्ध बैर, कपट और भ्रम का शिकार थी। विश्वविद्यालय में मुझे मुसलमानों से परिचित होने का अवसर मिला। मुसलमान छात्रों ने मेरे सामने इस्लाम के मौलिक विश्वासों की परिभाषा बड़े सरल व अच्छे तरीक़े से की। उन्होंने मेरी हर आपत्ति का संतोषजनक जवाब दिया और मुझे पढ़ने के लिए कुछ पुस्तकें दीं। इन पुस्तकों को जब मैंने पढ़ा तो इस्लाम की महानता मेरे दिल में बैठ गयी और संदेह व भ्रम दूर हो गए। ये पुस्तकें मैंने दोबारा बड़े ध्यान से पढ़ीं तो उनकी मोहकता व अनूठेपन ने मुझे चकित कर दिया। एक ईश्वर, सारे उसके आज्ञापालक और मरने के बाद दोबारा जीवित होकर अपने कर्मों का हिसाब देने वाले इस्लामी दृष्टिकोणों ने मुझे बड़ा ही प्रभावित किया। इसके बाद उन मुसलमान छात्रों ने मुझे कुरआन का अंग्रेज़ी अनुवाद दिया। मैं अपने दिल पर कुरआन के प्रभाव का अनुमान नहीं लगा सकती। तीसरी सूरः ख़त्म करने से पूर्व ही मैं अपने वास्तविक पालनहार के आगे सज्दें में गिर चुकी थी। यह मेरी पहली नमाज़ थी। मैंने इस्लाम को अच्छी तरह से समझने में तीन महीने गुज़रने से पूर्व ही इस्लाम स्वीकार कर लिया।''

इतिहास में इस प्रकार की सैकड़ों घटनाएं मौजूद हैं और आज भी समाचार पत्रों में हम इस्लाम स्वीकार करने की ऐसी घटनाएं पढ़ते रहते हैं, जो इस बात का सुबूत है कि इस्लाम स्वयं अपनी आन्तरिक शक्ति से फैला है और बराबर फैल रहा है।

●●●

## सलाम

हैदर अ़ली नदवी

आपकी दीनी दावत पे लाखों सलाम
इन्क़लाबी क़ियादत पे लाखों सलाम
आमिना के चमन में खिला जो गुलाब
उसकी पाकीज़ा नकहत पे लाखों सलाम
जिनकी आमद से रौशन जहां हो गया
उनकी नूरानी सूरत पे लाखों सलाम
शरफ़ जिन को मिअ्राज का है मिला
उनकी इज़्ज़त वरफ़अ़त पे लाखों सलाम
जिनके अख़्लाक़ से सब क़बाइल जुड़े
उनकी वाज़िह हिदायत पे लाखों सलाम
आपने रब के परचम को लहरा दिया
आपकी शाने रहमत पे लाखों सलाम
हुक्मरां आप हों और सहाबा वज़ीर
उस मिसाली हुकूमत पे लाखों सलाम
जिनके सदक़े में अर्ज़ो समा सब बनें
उनकी शाने रिसालत पे लाखों सलाम
जिनका मख़लूक में कोई सानी नहीं
ऐसी बे मिस्ल अ़ज़मत पे लाखों सलाम
मुज़्ज़म्मिल मुद्दस्सिर के प्यारे खिताब
मिले जिनको उनपे हों लाखों सलाम
जिनको अ़ज़मत अ़ता की है वह्हाब ने
उनकी अ़ज़मत पे हैदर हों लाखों सलाम।

0522-508982
Mohd. Miyan
Jwellers
एक भरोसेमन्द सोने चान्दी के ज़ेवरात की दुकान
1-2 Kapoor Market, Victoria Street, Lucknow-226003

# परामर्श प्रस्तुत है

सगीरा बानो शीरीं

❑ मेरे चार बच्चे हैं। ज़रा सी चोट लगजाए या सिर पर थोड़ा सा बोझ उठा लें तो नाक से खून बहना शुरू हो जाता है। कोई ऐसा टोटका बताइये जिससे नक्सीर फूटनी बन्द हो जाए। (आबदा बेगम)

● आप जहां रहती हैं वहां गर्मी बहुत होती है। आप बच्चों को ठंडी चीज़ खिलाइये खीरा, तरोई, टिन्डे गर्मी की ऋतु की तरकारियां हैं। आप खीरे का रायता दही में बना सकती हैं। शुष्क नारियल खरीदिये, साफ सुथरा टुकड़ा हो, सफ़ेद रंग होना चाहिए। दो तीन इंच का टुकड़ा एक बड़े बच्चे के लिए काफी है। छोटा सा मिट्टी का घड़ा खरीदिये। पानी भर कर रख दीजिए। रात को नारियल का टुकड़ा घड़े में डाल दीजिए। प्रातः उठ कर बच्चे से कहिये नारियल चबा चबा कर खाए। नारियल खिलाने से नक्सीर ठीक हो जाती है। इसके साथ साथ सही आहार दीजिए। इंशा अल्लाह आप के बच्चे आइन्दा नक्सीर से सुरक्षित रहेंगे।

## ❑ मां बाप ध्यान दें –

*मेरे पास एक बीस वर्षीय लड़के* का पत्र आया है उसे अपने घर वालों से शिकायत है। वह लिखता है – "मेरी दो जवान बहने हें जो पश्चिमी वस्त्र पहेनती हैं। घर में टीवी पर रोज़ नए प्रोग्राम देखती हैं। रात को फ़िल्म लाकर देखी जाती है। यक़ीन जानिये मुझे बहनों के साथ बैठकर फ़िल्म देखते हुए शर्म आती है जबकि माता पिता को इस बात का ज़रा एहसास नहीं कि जवान बेटियां साथ बैठी हैं। मैं पुराने विचारों का नहीं मगर आज़ादी की एक सीमा पसन्द करता हूं। मुझे नंगा लिबास, नाइटी औ ऐसी चीज़े पसन्द नहीं। मैं किसी ग़रीब लड़की से शादी करना चाहता हूं मगर मेरे माता पिता बहुत लालची हैं। कम से कम दस बारह सेट सोने के और गाड़ी, कोठी की इच्छा रखते हैं। इन्हें मानवीय मूल्यों से कोई दिलचस्पी नहीं। बताइये मैं क्या करूं?

नौजवान ! आप के विचार मूल्यवान हैं। विडियो और डिशकलचर के आक्रामण से जो परिस्थिति पैदा हो रही है, उसमें आप की सोच बहुत सकारात्मक है। आप को अवश्य सफलता मिलेगी। हिम्मत न हारिये। नीति और धैर्य से मां बाप की सोच बदलने की कोशिश करते रहिये और निराशा को पास न फटकने दीजिए। सच्चे दिल से अल्लाह से दुआ भी कीजिए कि मां बाप के दिल बदल जाएं। आपके माता पिता को भी चाहिए कि अपना व्यवहार बदलें। वह आज़ादी जो औलाद को इख़लाक़ी कदरों (नैतिक मूल्यों) और लज्जा व शर्म से वंचित करें, ऐसी आज़ादी तथा बेराहरवी से अपने मासूम बच्चों को बचाना चाहिए। हम जो बोएंगे वही काटेंगे। आशा है आपकी नीतिगत सुधार की कोशिशों और सामाजिक दबाव से आपके मां बाप अपना व्यवहार बदलने पर मजबूर हो जाएंगे।

टाइफाइड के बाद बाल गुच्छों की शक्ल में उतर रहे हैं और शरीर भारी होता जा रहा है। भोजन कैसा होना चाहिए जिससे मेरा शरीर मोटा न हो? (खाल्दा बीबी)

खाल्दा बीबी कालेज की लड़कियों को चटपटी चीज़ें बहुत पसन्द होती हैं। आप पराठे, समोसे, तली हुई चीज़ें अपने भोजन से निकाल दीजिए और सबज़ी दही, ताज़ा फल, सलाद खाइये। एक होमियोपैथिक दवा टाइफाइडियम–२०० एक खूराक खा लीजिए। सिर में तेल की मालिश कीजिए और सादा खाना खाइये, बाज़ारी खाना मत खाइये।

## सेब का लाभ –

सेब कई प्रकार के होते हैं। बड़े लाल सुर्ख़ सेब देख कर दिल ललचाता है। मेरी अम्मी बाज़ार से छोटे सेब लाती हैं। क्या इनका कोई लाभ है। मुझे तो यह नन्हे सेब अच्छे नहीं लगते। घर वाले शौक़ से यह सेब खाते हैं और मैं परेशान रहती हूं। (साएरा हमीद)

साएरा बीबी! सेब बहुत अच्छा फल है। सेब की कई किस्में हैं। सुर्ख़ सेब अधिक मिलते हैं। इसमें मौजूद लोहा, कैलशियम, फासफोरस और दूसरे अंशों से अच्छा खून बनता है और अच्छा खून स्वास्थ के लिए आवश्यक है। छोटे सेब भी अच्छे होते हैं। इन्हें छिलकों के साथ खाना चाहिए। इस

(शेष पृष्ठ २८ पर)

# जिन्नात का परिचय

अबू मर्गूब

पिछले अंक के बयान से आगे....

सूरतुल हिज्र की आयत २६ से ४४ में यह अधिक बताया गया कि –

आदम अ़लैहिस्सलाम को सड़े हुए गारे से बनी बजती हुई मिट्टी से पैदा किया।

जिन्नों के प्रमुख पुर्खा को आदम अ़लैहिस्सलाम से पहले पैदा किया।

जिन्नों के प्रथम पुर्खा को नारे समूम (गर्म हवा की आग) से पैदा किया।

आदम अ़लैहिस्सलाम का पुत्ला तैयार हो गया तो उसमें अल्लाह तआ़ला ने रूह़ (आत्मा) फूंकी।

अल्लाह तआ़ला ने शैतान को क़ियामत तक छूट देने के साथ क़ियामत तक उस पर लानत भी फ़रमाई।

शैतान ने अल्लाह तआ़ला से इस को स्वीकारा कि मैं तेरे मुख़्लिस बन्दो (सच्चे भक्तों को नहीं बहका सकूंगा)

अल्लाह तआ़ला ने भी घोषित कर दिया कि मेरे सच्चे भक्तों (मुख़्लिस बन्दों) पर तेरा दांव नहीं चलेगा।

सूरतुलअस्रा की आयत ६१ से ६५ में यह बातें अधिक बताई गईं। अल्लाह तआ़ला ने शैतान से कहा कि जा अपने हल्ला गुल्ला से अपने पैदल और सवारों को ले कर बन्दों के माल व औलाद में शरीक हो कर तथा उनसे वअ़दे कर के उनको बहका। मगर मेरे सच्चे भक्तों पर तेरा दांव न चल सकेगा।

यह भी बताया गया कि शैतान के वअ़दे सब झूटे होते हैं।

सूर–ए–कहक़ की आयत ५० में यह अधिक बातें बताई गईं।

इब्लीस (शैतान) जिन्नों में से था।

शैतान के औलाद (सन्तान) भी है।

## इब्लीस फ़िरिश्ता नहीं था

कुर्आन से सिद्ध है कि फ़िरिश्ता नाफ़रमान नहीं होता जबकि इब्लीस ने ना फ़रमानी की, फ़िरिश्तों के औलाद नहीं होती जबकि इब्लीस की सन्तान सिद्ध है। अतः इब्लीस फ़िरिश्ता नहीं था जिन्न था। कुर्आन स्वयं बताता है कि इब्लीस जिन्न में से था,

इस कुर्आनी क़िस्से से ज्ञात हुआ कि :–

शैतान जिन्न जाति से है, और पहला शैतान इब्लीस है फिर उस की औलाद और उस के पीछे चलने वाले शैतान हुए। जो जिन्न अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम या आप (सल्ल०) से पहले के रसूलों पर ईमान लाए वह शैतान नहीं है। मोमिन व मुस्लिम है। जिन्नों में जो शैतान हैं वह भी खाते पीते चलते फिरते और सन्तान पैदा करते हैं और जो मुस्लिम व मोमिन वह भी । बल तथा शक्ति भी दोनों में है।

इब्लीस मलऊन (धिक्कारित) है। कियामत तक उस पर खुदाई फिटकार है न उस को तौबा की तौफ़ीक़ मिलेगी न ही उसकी तौबा क़बूल होगी।

जब शैतान को छूट मिली हुई है और वह मर्दूद हम इन्सानों को हर प्रकार बहकाने के काम में लगा हुआ है और न जाने कितनों को नमाज़ रोज़ा से हटा कर दुन्या के कामों में फंसा चुका है, कितनों को बड़े बड़े गुनाहों (पापों) जुवा, शराब बल्कि शिर्क तक में फंसा चुका है और कितनों को हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम के मुकम्मल (पूर्ण) दीन में इज़ाफ़ा (परिवर्द्धन) समझा कर बिदआ़त में फंसा चुका है। इनसब से निकलने और अपने भाइयों को निकालने की चेष्ठा (कोशिश) अनिवार्य है। और उसकी एक ही विधि है कि किताब व सुन्नत को दृढ़ता से पकड़ लिया जाए और उस की शिक्षा को फैलाया जाए।

कितने खेद की बात है कि लोग बीमारी आज़ारी और परेशानी को शैतान तथा भूत प्रेत से जोड़ते हैं और उससे छुटकारा पाने के लिए आ़मिलों और तअ़वीज़ गंडे वालों के पास दौड़ते हैं। यद्यपि वह केवल भ्रम में है वह यकीनसे नहीं जानते कि आया यह वास्तव में बीमारी है या शैतान का प्रभाव। जब कि वह देखते हैं कि उनका लड़का नमाज़ नहीं पढ़ता, रोज़ा नहीं रखता, जुआ खेलता है। जवान लड़की बे पर्दा घूमती है अैर उन को यकीन है कि यह अपने नफ़्स की कोताही के साथ शैतान की कोशिशों से भी है। परन्तु इस के लिए कोई किसी आ़लिम के पास नहीं जाता अपितु कोई आ़लिम इस विषय पर कुछ बोलना चाहता है तो वह भागने की कोशिश करता है।

बेशक शैतान इन्सान का खुला दुशमन है, लेकिन उस की दुशमनी ज़ियादातर आख़िरत बिगाड़ने पर है। न कि दुन्या बिगाड़ने पर इन्सान की आख़िरत बिगाड़ने पर उसको ज़ियादा खुशी होती है।

# आपकी समस्याएं और उनका हल

मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

**प्रश्न :** *आज कल शेयर कम्पनियां बराबर खुल रही हैं हालांकि कम्पनियां सूदी व गैर सूदी दोनों तरह के कारोबार में रक़में लगाती हैं क्या शेयर खरीदना शरअ़ी तौर पर दुरुस्त है।*

**उत्तर :** वह शेयर कम्पनियां जिन का कारोबार सूद से खाली हो, उनका शेयर खरीदना शरअ़ी तौर पर जाइज़ है लेकिन जिन कम्पनियों की रक़में सूदी कारोबार में लगाई जाती हैं उनके शेयर खरीदना शरअ़ी तौर पर जाइज़ नहीं है।

**प्रश्न :** *कुछ शेयर कम्पनियां वह है जो बुनियादी तौर पर सूद से बचना चाहती हैं और अपनी रक़मों को गैर सूदी कारोबार में लगाती हैं लेकिन कभी–कभी ऐसे मौक़े आते है कि मजबूरन सूद में फंस जाती हैं क्या ऐसी कम्पनियों के शेयर खरीदना दुरुस्त है।*

**उत्तर :** सूद के सिलसिले में किताब व सुन्नत में जिस तरह बयान किया गया है और इस मामला में फुकहा ने जितनी एहतियात की है उससे पता चलता है कि ऐसी कम्पनियों के शेयर भी खरीदना शरअ़ी तौर पर जाइज़ नहीं।

**प्रश्न :** *म्यूंस्पलटी में किसी भी कार्यकर्ता के रिटायर होने के बाद पेंशन नहीं होती उसकी तन्ख्वाह ही से फ़ण्ड माहवार कटता है और बोर्ड भी अपनी तरफ से आधा रूपया खुद भी कार्यकर्ता के फण्ड में जमा करता रहता है और हर पांच साल होने के बाद म्यूंस्पल बोर्ड बोंस देकर उसी के फण्ड में जमा कर देता है यह सब रू० बैंक में जमा होते हैं उस पर हर साल बैंक अपने वसूल के अनुसार इस फण्ड की रक़म का इन्ट्रेस्ट जमा करता रहता है इस सिल्सिले में अस्ल शरअ़ी हुक्म क्या है?*

**उत्तर :** कार्यकर्ताओं की तन्ख्वाह से हर माह जो फण्ड कटता है और कम्पनी मालिक या कार्यालय का इन्चार्ज खुद जमा करता रहता है और फिर इसमें अपनी खुशी से बढ़ाता रहता है चाहे बोनस के नाम से हो या किसी और तरह से जहां चाहता है उस रक़म को रखता है। इसमें कार्यकर्ताओं का कोई रोल नहीं होता है फिर अस्ल फण्ड जो तन्ख्वाहों से कटता है उस पर बढ़ा कर दिया जाता है जो दरअसल यह कम्पनी का कार्यालय की ओर से इन्आम है। इसको शरअ़ी तौर पर सूद नहीं कहा जा सकता है इसलिए उन रकूम का लेना और अपने काम में लाना शरअ़ी तौर पर जाइज़ है मगर जो रक़म कोई खुद ही से बैंक में जमा करे और बैंक अस्ल रक़म के अ़लावा जायद रक़म दे तो यह सूद है इसका लेना और देना नाजाइज़ और ह़राम है।

**प्रश्न :** *हवाई जहाज़ जबकि उड़ रहा हो उस वक्त नमाज़ अदा करना जायज़ है या नहीं? कुछ लोगों का खयाल है कि हवाई जहाज़ पर नमाज़ अदा करने से नमाज़ नहीं होगी क्योंकि उस सूरत में सज्दः अदा नहीं होगा, क्योंकि सज्दः के लिए जरूरी है कि जमीन से किसी न किसी दर्जा में सम्बन्ध हो और उड़ते हुए जहाज़ पर सज्दः करने से ज़मीन से किसी दर्जा में भी सम्बन्ध नहीं रहता अस्ल शरीअ़त का क्या हुकम है।*

**उत्तर :** इस सिलसिले में शरीअ़त का हुक्म यह है कि उड़ते हुए हवाई जहाज़ पर भी नमाज़ हो जाती है जिस तरह ट्रेन और पानी के जहाज़ पर नमाज़ हो जाती है जहां तक ज़मीन पर सज्दः करने की बात है तो इस सिलसिले में शरीअ़त का अस्ल मंशा यह है कि सज्दः करने के लिए कोई ऐसी चीज़ हो जिस पर पेशानी टिक सके जिस तरह कश्ती और पानी के जहाज पर सज्दः किया जाता है जबकि कश्ती और पानी के जहाज़ और ज़मीन के दर्मियान बेपनाह पानी का फासला होता है खुलासा यह है कि ज़मीन की तरह हवाई जहाज़ पर उड़ने की हालत में नमाज़ अदा करना दुरुस्त है और नमाज़ के दोहराने की भी ज़रूरत न होगी।

**प्रश्न :** *एक साहब ने हमारे यहां फ़र्ज़ नमाज़ में सूरः फ़ातिहा के बाद दुरूद ताज पढ़ दिया क्या नमाज़ हो जाएगी।*

*उत्तर : नमाज़ नहीं होगी नमाज़ दोहरानी होगी इसलिए कि दुरूद ताज कुर्आन नहीं है।*

**प्रश्न** : *किन– किन लोगों से निकाह दुरुस्त नहीं है ?*

**उत्तर** : अपनी औलाद के साथ और पोती पड़ पोती और नवासी आदि के साथ निकाह दुरुस्त नहीं है और बाप, दादा, पर दादा, नाना, और पर नाना आदि से भी दुरुस्त नहीं है। इस तरह अपने भाई और मामू और चचा और भतीजे भांजे के साथ निकाह दुरुस्त नहीं है और शरीअ़त के अनुसार भाई वह है जो एक मां बाप से हों, या उन दोनों का बाप एक हो, और मां दो हो या दोनों की मां एक हो और बाप दो हों और जिस का बाप भी अलग हो और मां भी अलग हो वह भाई नहीं उससे निकाह दुरुस्त है। इसी तरह दामाद के साथ भी निकाह दुरुस्त नहीं है चाहे लड़की की रुखसती हो चुकी हो और दोनों मियां बीवी एक साथ रहे हों या अभी रुखसती न हुई हो, हर तरह हराम है जैसे किसी का बाप मर गया और मां ने दूसरा निकाह किया लेकिन अभी उस के घर रहने न पाई थी कि मर गई या उसने तलाक़ दे दी तो उस सौतेले बाप से निकाह करना दुरुस्त है हां अगर मां उसके पास रह चुकी है तो उससे निकाह दुरुस्त नहीं। इसी तरह सौतेली औलाद से निकाह करना दुरुस्त नहीं अर्थात एक मर्द के कई बीवियां हैं तो सौत की औलाद से किसी तरह निकाह दुरुस्त नहीं चाहे अपने मियां के पास रह चुकी हो या न रही हो हर तरह निकाह ह़राम है। इसी तरह खुसर और खुसर के बाप दादा के साथ भी निकाह दुरुस्त नहीं। इसी तरह जब अपनी बहन निकाह में रहे तब बहनोई से निकाह दुरुस्त नहीं हां अगर बहन मर गई या उसने छोड़ दिया और इद्दत पूरी हो चुकी हो अब बहनोई से निकाह दुरुस्त है और तलाक़ की इद्दत पूरी होने से पहले निकाह दुरुस्त नहीं।

इसी तरह एक मर्द का निकाह एक औ़रत से हुआ तो अब जब तक वह औ़रत उसके निकाह में रहे उसकी फूफी और उसकी खाला और भतीजी और भांजी का निकाह उस मर्द से नहीं हो सकता।

इसी तरह जिन औ़रतों में ऐसा रिश्ता हो कि अगर उन दोनों औ़रतों में कोई मर्द होती तो आपस में दोनों का निकाह न हो सकता ऐसी औ़रतें एक साथ एक मर्द से निकाह में नहीं रह सकतीं, जब एक मर जाए या तलाक मिल जाए और इद्दत गुज़र जाए तब दूसरी औ़रत और उस मर्द से निकाह करे।

इसी तरह अगर सगा मामूं नहीं है बल्कि किसी रिश्ता से मामूं लगता है तो उससे निकाह दुरुस्त है, इसी तरह अगर किसी दूर के रिश्ता से चचा या भांजा या भतीजा हो तो उससे भी निकाह दुरुस्त है ऐसे ही अगर अपना भाई नहीं है बल्कि चचाज़ाद भाई है या मामूज़ाद फूफीज़ाद या खालाज़ाद भाई है उससे भी निकाह दुरुस्त है।

इसी तरह अगर दो बहनें सगी न हों मामूज़ाद या चचाज़ाद या फूफीज़ाद या ख़ालाज़ाद बहनें हों तो वह दोनों एक साथ ही एक मर्द से निकाह कर सकती हैं। ऐसे ही बहन के रहते हुए भी बहनोई से निकाह दुरुस्त है यही हाल फूफी और खाला आदि का है अगर कोई दूर का रिश्ता निकलता हो, तो फूफी भतीजी और खाला भांजी का एक साथ ही एक मर्द से निकाह दुरुस्त है।

ऐसे ही जो रिश्ते नसब के एतिबार से हराम हैं वह रिश्ते दूध पीने के एतिबार से भी ह़राम हैं दूध पिलाने वाली मां के शौहर से निकाह दुरुस्त नहीं क्योंकि वह उसका बाप हुआ, और दूध शरीक भाई से निकाह दुरुस्त नहीं जिसको उसने दूध पिलाया है उससे और उसकी औलाद से निकाह दुरुस्त नहीं, क्योंकि वह उसकी औलाद हुई।

**प्रश्न** : *दूध शरीक दो बहनें एक मर्द के साथ रह सकती हैं या नहीं?*

**उत्तर** : दूध शरीक दो बहनें एक मर्द के निकाह में नहीं रह सकतीं।

**प्रश्न** : *किसी मर्द ने किसी औरत के साथ ज़िना किया तो अब उस औरत की मां और उस औरत की औलाद को उस मर्द से निकाह करना कैसा है ?*

**उत्तर** : निकाह दुरुस्त नही है।

**प्रश्न** : *किसी औरत ने जवानी की ख्वाहिश के साथ बदनियती से किसी मर्द को हाथ लगाया तो उस औरत की मां और औलादा क़ो उस मर्द से निकाह करना कैसा है?*

**उत्तर** : जाइज नहीं, इसी तरह अगर किसी मर्द ने किसी औरत पर हाथ डाला तो वह मर्द उसकी मां और औलाद पर हराम है।

**प्रश्न** : *वली किसे कहते हैं ?*

उत्तर : लड़की और लड़के के निकाह करने का जिसको अख्तियार होता है उसे वली कहते हैं।

**प्रश्न** : *वली कौन–कौन हो सकता है?*

**उत्तर** : लड़की और लड़के का वली सबसे पहले उसका बाप है अगर बाप न हो तो दादा वह भी न हो तो पर

दादा अगर इन में से कोई न हो तो सगा भाई, वह भी न हो तो सौतेला भाई, फिर भतीजा, फिर भतीजे का लड़का, फिर भतीजे का पोता, यह भी न हो तो बाप का चचा वली है फिर उसकी औलाद अगर बाप का चचा और उसके लड़के, पोते, कोई न हों तो दादा का चचा, फिर उसके लड़के पोते, पड़पोते न हों तो मां वली है, फिर दादी, फिर नानी, फिर नाना, फिर हक़ीकी बहन, फिर सौतेली बहन जो बाप शरीक हो फिर जो भाई बहन मां शरीक हों, फिर फूफी फिर मामू फिर खाला आदि।

(पृष्ठ ६ का शेष)

भारी रक़म और वक़्त लगा कर तकलीफ़ें उठा कर हज्ज को जाते हैं लेकिन साथ ही रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की सुन्नत पर उस्तुरा फेरना बन्द नहीं करते। अल्लाह तआ़ला समझ दे। दाढ़ी मुंडाना भी एक गुनाह है इससे भी तौबा लाज़िम (अनिवार्य) है। ऐसे हाजी जो अब तक दाढ़ी मून्डते रहे पिछले गुनाह से तौबा करें और आइन्दा दाढ़ी रखने का निर्णय लें। सोचें कि हम अल्लाह तआ़ला के घर की चौखट सर रखेंगे और हमारे चेहरे से अल्लाह के रसूल की सुन्नत गाइब होगी। हम मदीने में हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम को सलाम अर्ज़ कर रहे होंगे और हमारे मुख पर हुजूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की सुन्नत का खून हो चुका होगा जिस के अपराधी स्वयं हम होंगे अल्लाह हिदायत दे।

हज्ज करने वाले के लिए आवश्यकता है कि वह पहले से किसी जानकार से हज्ज करने का तरीका सीखे और हज्ज के अहम (महत्वपूर्ण) मसाइल सीखे। बेहतर होगा कि किसी आलिम से सम्पर्क करे। अगर पढ़ा हो तो उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी सभी जबानों में हज्ज पर किताबें लिखी गई हैं। सावधानी से उन का अध्ययन करे जो बात समझ में न आए जानकार से अवश्य समझे। मुअ़ल्लिम लोगों पर भरोसा करना ठीक नहीं है वह लोग आमतौर ज़ियादा इहतिमाम नहीं करते हैं।

हज्ज के सामान और रास्ते के खर्चे में कंजूसी न करे कि जो धन हज्ज की राह में खर्च हो जाता है उस का सवाब सात गुना या इससे भी अधिक मिलता है। अगर रूपया कम हो तो व्यर्थ खर्चों से बचे परन्तु जिन को अल्लाह ने दे रखा है। वह हाथ न बटोरें। खाना पीना अच्छा और ज़ियादा साथ लें परन्तु खूब पेट भर कर न खाएं ताकि बीमारी बद हज़मी आदि का भय न हो।

## लेखकों से अनुरोध

हमारे पाठक बराबर शिकायत कर रहे हैं कि सच्चा राही की भाषा (ज़बान) कठिन है। अतः हम अपने लेखकों से अनुरोध करते हैं कि सरल लिखने की चेष्ठा करें। शैली भी सरल हो, शब्द भी सरल हों और वाक्य सरलता भी हो। आशा है कि हमारे लेखक तथा अनुवादक हमारे अनुरोध को स्वीकृति देंगे।

(पृष्ठ ४ को शेष)

का पैदा करनेवाला है। उसका कोई पैदा करने वाला नहीं। पापों को क्षमा करने वाला है। प्रबल(जबरदस्त) है। बहुत देने वाला है। रोज़ी पहुंचाने वाला है। जिस की रोज़ी (आजीविका) चाहे कम कर दे जिस की चाहे बढ़ा दे। जिस को चाहे गिरा दे और जिस को चाहे ऊंचा उठा दे। जिसे चाहे अपमानित करे जिसे चाहे सम्मान दे। न्यायी है। धैर्यवान तथा सहनशील है। सेवा तथा उपासना को सम्मान देने वाला है। दुआओं (प्रार्थनाओं) को स्वीकार करने वाला है। समाई वाला है। वह सब पर हाकिम है। उस पर कोई हाकिम नहीं। उस के हर काम में हिकमत है। वह सब काम बनाने वाला है। उसीने सब को पहले पैदा किया वही क़ियामत में फिर पैदा करेगा। वही जिलाता है। वही मारता है। वह गुनाहगारों की तौबा कबूल करता है। सज़ा पाने वालों को सज़ा देता है। वही हिदायत देता है। जहां में जो कुछ होता है उसी के हुक्म से होता है। न वह सोता है न ऊंघता है। वह तमाम आ़लम (लोकों) की रक्षा से थकता नहीं। वही हर वस्तु को थामे हुए है। सभी अच्छे गुण उसके लिए सिद्ध हैं। वह अवगुण रहित है।

0522-264646
**Bombay Jewellers**
*The Complete Gold & Silver Shop*
84, Victoria Street,
Akbari Gate, Lucknow.

# मुगल बादशाहों का
# ईसाइयों के साथ स्वहार्दयपूर्ण व्यवहार

सै० सबाहुद्दीन अब्दुर्रहमान

ईसाइयों ने हिन्दुस्तान के मुसलमानों और उनके शासकों के साथ जो व्यवहार किया उस पर नज़र डालने की आवश्यकता है। हिन्दुस्तान के मुसलमान शासकों ने जिस धार्मिक स्वहार्दय पूर्ण ढंग से शासन किया उसका इतिहास हम पहले तीन भागों में लिख चुके हैं। इनको विस्तार से बयान करने की यहां ज़रूरत नहीं। मगर अंग्रेजों ने उनकी नर्मी और स्वहार्दय पूर्ण व्यवहार से जिस प्रकार लाभ उठाया और फिर सत्ता प्राप्ति के बाद मुसलमानों पर जो अत्याचार किये उसकी कुछ मोटी मोटी घटनाएं यहां बयान की जा रही हैं। इन ईसाई शासकों ने जो हिन्दुस्तान पर जुल्म ढाए और जो आर्थिक लूट घसोट की, उसका विस्तार पूर्वक वर्णन तो डी०बासू की पुस्तक "राइज़ आफ़ क्रिश्चियन पावर इन इण्डिया" के पांचवें भाग और रमेश चन्द्र दत्त की पुस्तक "हिन्दुस्तान की आर्थिक इतिहास में मिलेगा, हम यहां केवल उन घटनाओं की ओर संकेत करेंगे जिस का सम्बन्ध मुसलमानों से रहा –

अकबर ने अपन दरबार में ईसाइयों को आने की अनुमति दे रखी थी और उसके इबादत खाने में जो वाद विवाद होता था उन में ईसाई पादरी भी शरीक होते। वह दरबार में इंजील भी लाते। अकबर ने उसका अनुवाद फारसी में भी कराया और यह पादरी अक़ीद–ए–तस्लीस (तीन खुदाओं में आस्था) के सत्य होने पर दलीलें पेश करते और ईसाइयत को सच्चा धर्म करार देने की कोशिश करते। कभी कभी अपनी हद से बढ़कर नऊजबिल्लाह दज्जाल मलऊन और हजरत मुहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के गुणों में समानता भी दिखाते थे। अकबर इन को चुपचाप सुन लेता। इन पादरियों ने दरबार में खुल्लमखुल्ला ईसाइयत का प्रचार भी शुरू कर दिया। शाहज़ादा मर्दान ने उनसे कुछ पाठ भी पढ़े।

जहांगीर के ज़माने में इंगलैण्ड के बादशाह जेम्स प्रथम की तरफ से १६१५ में टामस दूत बनकर आया तो शाही दरबार में उस को बड़ा सम्मान दिया गया और धीरे धीरे वह जहांगीर के इतने निकट हुआ कि बादशाह अपने निजी जलसों में भी उसे बुलाया करता था जिसके बाद उसने बादशाह से यह सुविधा मांगी कि अंग्रेज़ी माल पर कोई कर न निर्धारित किया जाए। जहांगीर ने अपनी शराफ़त व सज्जनता से यह सुविधा तो दे दी मगर क्या मालूम था कि यह हिनदुस्तान की गुलामी और मुग़ल सलतनत के पतन का कारण बन जाएगी।

१६५० में बंगाल के सूबेदार ने उन्हें व्यापार करने की अनुमति भी दे दी और हुगली और क़ासिम बाजार में कोठियां बनाने की भी इजाज़त मिल गई जिस से उनके हौसले और भी बढ़े। फिर औरंगज़ेब के ज़माने तक आते आते उन्होंने सूरत में भी अपनी फ़ैक्ट्री बनाली। उस समय तक ईस्ट इण्डिया कम्पनी बहुत प्रभावशाली होती गई और अब कम्पनी ने अपने व्यापार की सुरक्षा के लिए पक्की चहार दीवारियां भी बना ली और शान्तिपूर्ण व्यापार के बजाए क़िलाबन्द तिजारत करने की तरफ़ अधिक ध्यान देने लगी। इनकी बढ़ती हुई गतिविधियों को देखते हुए बंगाल के सूबेदार नवाब सइश्ता खान ने उनके माल पर कर लगा दिया तो वह युद्ध पर आमादा हो गए और दस जहाज़ों में फौज के दस्ते इंगलैण्ड से मंगवाए। उसी जमाने में एक बादशाही जहाज़ को अंग्रेजों ने लूट लिया और उसके यात्रियों को नंगा करके तलाशी ली। इस पर जो औरतें थीं वह अपनी बेइज़्ज़ती से बचने के लिए समुद्र में कूद पड़ीं या खंजर मार कर अपने को हलाक कर लिया। औरंगज़ेब को जब इस की सूचना मिली तो उसने सूरत के हाकिम एतमाद खां को आदेश दिया कि अंग्रेज़ गुमाश्ते कैद में डाल दिये जाएं और बम्बई के द्वीप से उन को निकाल दिया जाए। हुगली और क़ासिम बाज़ार की कोठियां अंग्रेजों को छोड़नी पड़ीं। वह सूरत और मछली पटम से निकाल दिये गए मगर उन्होंने मुग़लों की नर्मी और सद्व्यवहार से फिर लाभ उठाया।

उन्होंने डेढ़ लाख रूपया वार्षिक कर देना स्वीकार कर लिया तो फिर उनको व्यापार करने की अनुमति मिल गई। उन्होंने बंगाल के सूबेदार से तीन गांव खरीद लिये जहां अपने माल की सुरक्षा के बहाने चहार दीवारी बनवाई जो बाद में फोटविलियम कहलाने लगी और यह अंग्रेज़ों की सामराजी साजिश का बड़ा केन्द्र बन गया।

क्लायू को बंगाल में भी उसकी चालबाज़ियों से सफलता प्राप्त हुई। नवाब सिराजुद्दौला के विरोधियों की सहायता अंग्रेज करने लगे, तो सिराजुद्दौला ने उनके विरुद्ध सेना भेजी परन्तु मानव इतिहास की बहुत ही लज्जा जनक घटना है कि अंग्रेजों ने सिराजुद्दौला के दरबारियों में से अमी चन्द्र और मीर जाफ़र को ग़द्दारी पर तैयार कर लिया। अमीचन्द्र से एक फर्जी और झूठा वादा किया कि वह उसको तीस लाख रूपया देंगे तथा मीर जाफर से उसको बंगाल का शासक बनाने की प्रतिज्ञा की। सिराजुद्दौला और अंग्रेजों में लड़ाई हुई आखिर में मीर जाफ़र की गद्दारी से वह हारा और मारा गया। यहीं से अंग्रेजी राज्य की बुन्याद हिन्दुस्तान में पड़ी।

मुग़ल बादशाहों की रवादारी, नर्मी और सद्व्यवहार तथा उनके धार्मिक स्वहार्दय और सहनशीलता का लाभ उठाकर उन्होंने अपना राज्य भारत में स्थापित कर लिया।

अंग्रेज़ों की चालबाजियों से हिन्दुस्तान का पूरा क्षेत्र उन के क़ब्ज़े में आ गया। परन्तु उनके ज़ुल्म व अत्याचार इतना बढ़ गया कि अन्ततः १८५७ में लोगों को एहसास हुआ कि एक बाहरी क़ौम के वह ग़ुलाम हो गए हैं तो वह ज्वालामुखी पहाड़ की तरह फट पड़े और फिर जो कुछ हुआ उसकी कहानी बड़ी भयानक है। यहां पर एक अंग्रेज़ इतिहासकार ही के हवाले से एक झलक देखी जा सकती है।

सर जान ने अपनी पुस्तक हिस्ट्री आफ़ सीपुआईवार में लिखा है कि –

बग़ावत के नाम पर अपराधियों के साथ औरतें और बच्चे हलाक किये जा रहे थे। उनको फांसी नहीं दी जाती बल्कि आग में डाल कर जला दिया जाता था उनको गोली मारदी जाती। तीन तीन रोज़ तक रोज़ाना लाशों की आठ गाड़ियां सुबह से शाम तक उन मुर्दों को लातीं जो बाज़ार में लटकी दिखाई देतीं।

मुगलों के अन्तिम बादशाह बहादुरशाह ज़फ़र के साथ अत्याधिक ज़ालिमाना व्यवहार हुआ। वह इंसानियत का दुखदाई इतिहास है। एक फौज़ी अफ़सर हडसन ने बहादुर शाह के पुत्रों में से मिर्ज़ा मुग़ल, मिर्ज़ा ख़िज़िर खां, मिर्ज़ा अबूबकर और मिर्ज़ा अब्दुल्लाह को हुमायूं के मकबरे में गिरिफ़्तार किया; उनको रथ पर सवार किया, एक मील चल कर उन को रथ से उतार दिया और उनको अपने कपड़े उतारने का आदेश दिया और फिर अपने हाथों से तीन गोलियां उनके सीनों पर मारीं और शहरग (गले की प्रधान रग) को संगीन से चीर दिया। कचेहरी में लाकर उनकी लाशों को डाल दिया। कहा जाता है कि हडसन ने उनको क़त्ल करके एक चुल्लू खून यह कह कर पिया कि अगर मैं इनका खून न पीता तो मेरा दिमाग खराब हो जाता। शाहज़ादों के सिर काटे गये और उसे बादशाह के सामने यह कह कर पेश किया और कहा कि यह आपकी नज़र (उपहार) है जो बन्द हो गई थी और जिस को जारी करने के लिए आपने ग़दर में शिरकत की। बहादुरशाह ने जवान बेटों और जवान पोतों के कटे हुए सिर देखे तो आश्चर्य जनक धैर्य के साथ मुंह फेर लिया और कहा अलहम्दुलिल्लाह तैमूर की औलाद ऐसी ही सुर्खरू होकर बाप के सामने आया करती थी। इस के बाद शाहज़ादों की लाशों को कोतवाली के सामने खूनीं दरवाज़े में लटका दिया गया जिनको हज़ारों आदमियों ने देखा।

दिल्ली के पास पड़ोस में जितने शाहज़ादे मिले पकड़े गये। उनकी संख्या २६ कही जाती है। इन में बूढ़े, लंगड़े, बीमार सब के सब फांसी पर लटका दिये गये। जो शाहज़ादे क़ैद में डाल दिये गये उन पर कठोर अत्याचार होते रहे। ज़ीनत महल के पिता का जेल ही में देहान्त हुआ।

अंग्रेज़ों ने जिस हुकूमत को समाप्त किया उसका बहुत लम्बा इतिहास है। उसने ३३० वर्ष तक शासन किया लेकिन उसके पूरे इतिहास में ऐसे अत्याचार की मिसाल नहीं मिलेगी जिस का वर्णन ऊपर किया गया है ब्रिटिश राज्य के ज़माने में हिन्दू इतिहासकारों ने भी मुग़ल राज्य के न्यायप्रियता, नम्रता, उदारता और धार्मिक स्वर्हादय, की प्रशंसा की है। इस के यहां पर एक दो उदाहरण निम्नवत हैं।

प्रोफ़ेसर राम प्रसाद घोसला अपनी किताब मुग़ल किंगशिप एण्ड नोबिलिटि में लिखते हैं : "मुगलों के ज़माने में न्याय व इंसाफ़ में जो व्यवस्था

होती और जो धार्मिक स्वहार्दय की नीति थी उससे जनता सदा संतुष्ट रही। इस्लामी राज्य में राजनीति और धर्म का गहरा सम्बन्ध रहा लेकिन मुग़लों की धार्मिक उदारता के कारण कोई ख़तरा पैदा नहीं हुआ। किसी ज़माने में भी यह कोशिश नहीं की गई कि शासक क़ौम के धर्म को प्रजा पर बलपूर्वक थोपाजाए यहां तक कि औरंगज़ेब ने भी सरकारी सेवा के लिए इस्लाम की शर्त नहीं रखी थी। एलिज़ाबेथ के काल में एक ऐसा क़ानून था जिसके द्वारा ज़बरदस्ती इबादत कराई जाती थीं मुग़लों के ज़माने में इस प्रकार की कोई ज़बर्दस्ती नहीं थी। क़त्ले आ़म से मुगलों का इतिहास कभी दाग़दार नहीं हुआ मुग़लों के ज़माने में किसी धार्मिक युद्ध की मिसाल नहीं मिलती बादशाह इस्लाम धर्म का रक्षक अवश्य समझा जाता लेकिन उसने कभी गैरमुस्लिम प्रजा की आस्था पर दबाव नहीं डाला।''

प्रम्थासरन ने अपनी पुस्तक में लिखा है कि मुगल राज्य अपने उत्थान काल में दुन्या के शान्दार राज्यों में से एक था ..... उसने हिन्दू मुसलमान दोनों के बीच एकता स्थापित की।

सरजान शोर जो शासन प्रबन्ध में निपुर्ण समझा जाता था। उसका बयान है कि मुग़लों की हुकूमत में विभिन्न सम्प्रदायों के अधिकारों की पूरी सुरक्षा थी। हिन्दुओं के लिए क़ानून उन्हीं के बनाए हुए थे जिसकी पूरी तत्परता से पाबन्दी कराने की कोशिश की जाती थी। अनुवाद – हबीबुल्लाह आज़मी

**छूट हलाक करता है और सच नजात देता है। (हदीस)**

( पृष्ठ ६ का शेष )

में तकसीम कर दिया।

(बुखारी, मुस्लिम)

## रिश्तेदारों का ज़ियादा हक़ है–

२०५. हज़रत सलमान बिन आमिना (रज़ि०) से रिवायत है कि हुज़ूर (सल्ल०) ने फ़रमाया मिस्कीन पर सदकः करना तो सदकः है और रिश्तेदार पर खर्च करने में दोहरा अज्र है। सदकः का और सिला रहमी का। (तिर्मिजी)

## घर वालों पर सवाब की नियत से खर्च करना –

२०६. हज़रत अबू मसऊद बदरी (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फ़रमाया मुसलमान अपने घर वालों पर अज्र तलब करते हुए खर्च करे तो यह सदकः है। (बुखारी, मुस्लिम)

## बीवी को खिलाने का सवाब–

२०७. हजरत सअ़द बिन अबी वक्कास (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि सल्ल० ने फरमाया, तुम अपने वारिसों को खाता पीता छोड़ो, यह उससे बेहतर है कि तुम उनको नंगा भूखा छोड़ो और वह लोगों के आगे हाथ फैलाए, तुम अल्लाह तआ़ला की रज़ा चाहते हुए जो कुछ भी खर्च करोगे, उस पर अज्र के हकदार होगे, यहां तक कि अपनी बीवी के मुंह में एक लुक्मा भी रखो। (बुखारी, मुस्लिम)

## औलाद पर खर्च करने का सवाब –

२०८. हज़रत उम्मे सलमा (रज़ि०) से रिवायत है कि मैंने नबी करीम (सल्ल०) से अर्ज किया, कि ऐ अल्लाह के रसूल! क्या मैं बनू सलमा पर खर्च करूं तो क्या मुझे सवाब मिलेगा ? मैं उनको बुरी हालत में नहीं छोड़ना चाहती, वह मेरी ही औलाद है, आप ने फरमाया हां, तुम उन पर जो कुछ भी खर्च करोगी उस पर तुम्हें अज्र मिलेगा।

(बुखारी व मुस्लिम)

## सबसे अफ़ज़ल दीनार –

२१०. हज़रत सौबान (रज़ि०) मौला (आजाद किया हुआ गुलाम) रसूलुल्लाहि (सल्ल०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फरमाया, सबसे अफज़ल दीनार वह है जिसको आदमी अपने घरवालों पर खर्च करे और उन जानवरों पर खर्च किया जाय जो अल्लाह के रास्ते में काम आते हैं और वह दीनार जो अल्लाह के रास्ते में अपने साथियों में खर्च किये जायें। (मुस्लिम)

## अपने करीबी की मदद न करना बड़ा गुना है –

२११. हज़रत अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस (रज़ि०) से रिवायत है कि रसूलुल्लाहि (सल्ल०) ने फ़रमाया इन्सान का वह गुनाह काफी है कि वह जिस के देख रेख की ज़िम्मेदारी हो उसकी किफालत (परवरिश, निगरानी) से हाथ उठा ले। (अबूदाऊद, मुस्लिम)

**जब तक आदमी अपने भाई की मदद में रहता है अल्लाह उसकी मदद में रहता है। (हदीस)**

0522-508982

अनस मैरेज हाल

बारात, वलीमा व किसी भी खुशी के मौके के लिए कम खर्च में हमसे सम्पर्क करें ।

कपूर मार्केट (मलिक मार्किट)
विक्टोरिया स्ट्रीट, लखनऊ

# शक्तिशाली महान देश अमरीका की दुर्दशा

आरिफ़ अज़ीज़ भोपाली

किसी हिन्दुस्तानी से पूछिये कि दुन्या का सबसे वैभवशाली देश कौन सा है? तो साधारणतयः यही जवाब मिलेगा कि 'अमरीका' लेकिन अमरीका में भुखमरी और बेकारी का हाल यह है कि एक वक़्त के खाने के लिये बहुत से लोग हैं जो छोटे मोटे जुर्म (अपराध) कर डालते हैं, खड़ी हुई मोटरों या खिड़कियों का शीशा तोड़ डालना, सड़क पर पेशाब कर देना, किसी लड़की को इस प्रकार छेड़ना कि वह आजिज़ होकर किसी कांस्टेबिल को पुकार ले, खाली जेब किसी रेस्तोरान में घुसकर डटकर पेट भर लेना ताकि पकड़े जाएं। यह छोटे मोटे जराइम (अपराध) अमरीका के बेकार निवासी केवल इसलिये करते हैं कि पुलिस उन्हें पकड़ कर और अदालत (न्यायालय) के सम्मुख करके सज़ा दिलवा दे। ऐसे जराइम (अपराध) की सज़ा लम्बी नहीं होती, ज़ियादा से ज़ियादा एक दो हफ़्ते की क़ैद बा मशक़्क़त (परिश्रम के साथ कारावास) क़ैद में ऐसे बेकार और भूखों को नाशता और दो वक़्त का भरपूर खाना मिल जाता है। वर्तमान हालात में यही उनकी प्रथम और अन्तिम इच्छा होती है। पिछले दिनों एक चौंसठ साल की अमरीकन महिला का क़िस्सा "लास इंजलिस वीकली" में छपा है, महिला सरल स्वभाव थीं लेकिन उनके पति ने अपने घर से धक्के देकर निकाल दिया, पूरे चौबीस घन्टे भूखे रहने के बाद एक दूसरे बेकार व्यक्ति ने उसे उपाय बताया कि पुलिस की जो गाड़ी सामने खड़ी हुई है उसके शीशे पर ढीला मार दे, उस महिला ने यही किया, पुलिस ने पकड़ कर अदालत (न्यायालय) के सम्मुख किया, अदालत ने तीन महीने का कारावास बिना परिश्रम का आदेश दिया और उस महिला के खाने की समस्या हल हो गई, लेकिन अदालतों के लिए एक समस्या खड़ी हो गई कि ऐसे बेकार कैदी (बन्दी) जब रिहा (मुक्त) होते हैं और थोड़े दिनों में कोई काम नहीं कर पाते तो फिर कारावास जाने की कोशिश में इस प्रकार का जुर्म (अपराध) कर डालते हैं और लगातार अदालतों में पेश (प्रस्तुत) होते रहते हैं, जिस महिला का अभी उल्लेख किया गया वह तीन बार जेल जा चुकी है, आज अमरीका जैसे देश की लज्जा जनक और ख़राब आर्थिक दशा है तो अमरीका का अनुसरण करने वाले पूर्व साम्यवादी देशों में पूंजीपति व्यवस्था क्या रंग लायेगी ? इसका अनुमान करना कठिन है, ताज़ा खबरें तो यही बता रही हैं कि रोटी और अन्डों के लिए रूस में पंक्तियां लगी दिखाई देती हैं, सवेरे से भोजन के लिए लाइन में लगे हुए दिखाई देते हैं, और आमतौर पर यही हो रहा है। आधी लाइन तक पहुंचते पहुंचते राशन खत्म हो जाता है और बाकी आवश्यकता वाले लोग वंचित होकर चले जाते है, पूर्व पछत्तर वर्षों के साम्यवादी राज्यों में सोवियत यूनियन के निवासियों की यह दुर्दशा देखने में नहीं आयी। आज टुकड़े टुकड़े हो जाने के बाद रूस की जनता यह देख रही है कि ज़ारशाही ज़माना वापस आ गया है, जिनकी जेबें रूबलों (रूसी सिक्के) से भरी होती हैं उन्हें मंहगाई के बावजूद हर चीज़ प्राप्त है जो मुहताज और बेकार है उनके लिये भुखमरी के अतिरिक्त कुछ बाकी नहीं बचा है।

(राष्ट्रीय सहारा उर्दू के शुक्रिये के साथ।)

## दुआ

एच०ए० नदवी

हमको तैबा दिखा दीजिए ऐ खुदा
आपसे है हमारी यही इल्तिजा
हम मदीने से वापस न होंगे कभी
हम दयारे नबी से न होंगे जुदा
आप से पहले दुन्या में थी तीरगी
आप आए तो दुन्या में आई ज़िया
आज उम्मत नबी की परेशान है
हर तरफ़ चल रही है मुखलिफ़ हवा
ये तमन्ना है जब मौत आए मुझे
हो लबो पर दरूदो सलाम आपका
हां बुजुर्गों से हमने सुना है यही
है मदीने से फिरदौस का रास्ता
दिल से जिसने भी इक बार कलमा पढ़ा
दिल हुआ मुतमईन वह सुकूं पा गया
सब्ज़े गुम्बद जो देखा तो बे साख्ता
लब पे आया मेरे मरहबा, मरहबा
हर मुसलमान का ये भी ईमान है
पेश आएगा किस्मत में जो है लिखा
ऐ ख़ुदा क़ौम को अब बचा लीजिए
आज हैदर यही कर रहा है दुआ।

●●●

# क्यों मुसलमान रस्मों और पाखण्डों में फंस गया

हैदर अली नदवी

इस्लाम धर्म जो अपनी सरलता, शुद्धता तथा पूर्ण एकेश्वरवाद के कारण जनप्रिय धर्म है, और हमेशा लोगों को आकर्षित करता रहा है जो आज भी अपने शुद्ध रूप में मौजूद है लेकिन कुछ स्वार्थी तथा लोभी व लालची लोगों की बदकिस्मती कहिए कि वह क्षणिक लाभ के लिए इस्लाम के (स्वरूप) शक्ल को बदलने पर तुले हुए हैं लोग बनावटी इस्लाम का चोला ओढ़े हुए हैं और अनपढ़, भोले, भाले (या जदीद तालीम याफ़्ता तब्क़ा जो दीनी तालीम नहीं हासिल कर सका) ऐसे लोगों को वरग़ला कर अपनी मनगढंत रस्मों को दीन का काम बता कर अपना उल्लू सीधा करते हैं परेशान हाल मुसीबत व दुःख के मारे इन्सान ऐसे ढोंगियों का शिकार बन जाते हैं "मरता क्या न करता" उस बेचारे को क्या मालूम हमारी मुसीबत को भुनाया जा रहा है। अनेक त्यौहारों एवं अनेक स्थानों पर तो ऐसा दृष्य देखने को मिलता है जैसे कि (एकेश्वरवाद) तौहीद के बजाए इस्लाम ने अनेक खुदाओं (बहुदेववाद) की तालीम दी है – औलिया उल्लाह की आरामगाहों पर तिजारत की मण्डियां क़ाइम हैं। हज़ारों लोग अल्लाह के सिवा औलिया उल्लाह के नाम का विर्द (जाप) करते हैं उठते बैठते उन्हीं का नाम पुकारते हैं उन्हीं से मदद तलब करते हैं, उनकी नज़्रो नियाज़ करते हैं, उन्हीं से मन्नतें मनाते हैं, उनकी तस्वीरों को घरों में बरकत के लिए लगाते हैं उन पर अगरबत्ती की धूनी दी जाती है, उनके नाम पर अनेक मनगढंत रस्मों को बढ़ावा दिया जा रहा है इस्लामी फराइज़ व शरई तक़रीबात से ज़ियादा इहतिमाम इन मनगढ़ंत रस्मों की अदाइगी का किया जाता है जबकि इस्लाम की नज़र में ये खुला हुआ शिर्क है। औलिया उल्लाह की ज़िन्दगी और उनकी नसीहतों पर नज़र डाली जाए तो सब अल्लाह के वली इन बेहूदा मनगढंत रस्मों से कोसों दूर नज़र आते हैं बेशक औलिया उल्लाह की सुहबत ईमान बढ़ाती है उनकी महब्बत सवाब है, उनकी अज़्मत लाज़िम है – लेकिन औलिया अल्लाह की महब्बत और अज़्मत की आड़ में शिर्क के दलदल में लोगों को फंसाना महापाप है।

इस्लामी तालीमात का जो ग़ौर से मुताला करेगा कुरआन व हदीस के उस्लूब पर नजर डाली जाए तो पता चलेगा कि इस्लाम आया ही इसलिए था कि दुन्या का रिश्ता तौहीद (एकेश्वरवाद) से कट चुका था लोगों ने अपने अपने स्तर से अपने हाजत रवा मुश्किल कुशा बना रखे थे इन्सान–अल्लाह के बन्दों का पुजारी बन गया था– जनाबे मुहम्मदे अरबी (स०) ने सब को एक खुदा से जोड़ा ग़ैरुल्लाह का नाम जपने ग़ैरुल्लाह को हाजत रवा मुश्किल कुशा समझने से मना फ़रमाया ग़ैरुल्लाह के नाम पर ज़ब्ह करने से रोका ग़ैरुल्लाह का सज्दा मना किया। फ़रमाया अगर किसी तरह से सज्दे की गुन्जाइश होती तो मैं औरतों को हुक्म देता कि अपने शौहरों को सज्दा किया करें। वह सारी अक़ीदतें जो अल्लाह के साथ ख़ास थीं आज वह सब कुछ ग़ैरुल्लाह के नाम पर की जा रही हैं।

अगर यह सब ठीक है तो एक ग़ैर मुस्लिम को हमसे पूछने का पूरा हक़ है कि हम ईश्वर का प्रतीक मान कर गणेश, हनुमान, शिव की पूजा करते हैं तो हमें क्यों मुश्रिक कहा जाता है। हम भी तो अन्तिम शक्ति अल्लाह (परमेश्वर) ही को मानते हैं दुन्या में अनेक देवताओं को इसलिए पूजते हैं कि वह हमारी मदद करते हैं हमारी सिफ़ारिश खुदा तक ले जाते हैं अगर हम बहुदेववादी और मुश्रिक हैं तो ऐसा करने वाले मुसलमानों को किस गिरोह में शामिल करें।

मौलाना हाली ने इसी पर तो आंसू बहाए हैं –

करे गैर गर बुत की पूजा तो काफ़िर
जो ठहराए बेटा खुदा का तो काफ़िर
कवाकिब में माने करिश्मा तो काफ़िर
मगर मोमिनों पर खुली सब हैं राहें
परश्तिश करें शौक से जिसकी चाहें
न इस्लाम बिगड़े न ईमान जाए।

आज ज़रूरी हो गया है कि इस्लामी शरीअत कुर्आन व हदीस को आम जनता तक पहुंचाया जाए ताकि रस्मी और मन गढ़ंत इस्लाम से लोग बच सकें रस्मी इस्लाम की जांच बहुत आसान है । अगर कोई काम इस्लाम के नाम पर हो रहा है और उसका सत्यापन इस्लाम के चारों स्रोतों (१) कुर्आन (२) हदीस (३) इज्माअ (४) क़ियास से नहीं हो रहा है तो वह नक़ली मनगढ़ंत और रस्मी चीज है उसका सम्बन्ध इस्लाम से नहीं हो सकता। उसका छोड़ना सवाब है और करना गुनाह है।

●●●

# हज्ज से सम्बन्धित कुछ परिभाषिक शब्दों के अर्थ तथा कुछ स्थानों का परिचय

इदारा

**इहराम :** इहराम का अर्थ हराम करना है। हाजी जिस मसय हज्ज या उम्रा या दोनों की नीयत कर के तलबियः पढ़ता है तो उस पर कुछ हलाल और मुबाह चीज़ें भी इस इहराम के कारण हराम हो जाती हैं इस लिए इस को इहराम कहते हैं। इहराम उन दो चादरों को भी कहते हैं जिन को हाजी इहराम की हालत में पहनता है।

**तलबियः** लब्बैक् अल्लाहुम्म लब्बैक, लब्बैक ला शरीक लक लब्बैक्, इन्नलहम्द वन्निअ्मत लक वलमुल्क् ला शरीक लक्।

**इस्तिलाम :** हजरे अस्वद को चूमना और हाथ से छूना या हजरे अस्वद या रुक्ने यमानी को हाथ लगाना।

**इज़्तिबाअ़** — इहराम की चादर को दाहनी बग़ल के नीचे से निकाल कर बाएं कन्धे पर डालना।

**आफ़ाक़ी :** वह शख़्स जो मीक़ात के हुदूद (सीमा) से बाहर रहता है जैसे हिन्दी, पाकिस्तानी, मिस्री आदि।

**अय्यामे तशरीक़ :** नवीं ज़िलहिज्जः से तेरहवीं ज़िलहिज्जा तक जिन दिनों में तकबीरे तशरीक़ पढ़ी जाती है।

**अय्यामे नह्र :** दस ज़िलहिज्जः से बारहवीं ज़िलहिज्जः तक।

**इफ़राद :** सिर्फ़ हज्ज का इहराम बांधना और सिर्फ़ हज्ज के काम करना।

**बैतुल्लाह :** अर्थात कअ़बः यह मक्का मुअ़ज्ज़मा में मस्जिदे हराम के बीच में एक मुकद्दस मक़ाम (पवित्र स्थान और दुन्या का सबसे पहला इबादत खाना ) है इसको फ़िरिश्तों ने अल्लाह के हुक्म से आदम अ़लैहिस्सलाम की पैदाइश से पहले बनाया था फिर गिर जाने के पश्चात हज़रत आदम अलैहिस्सलाम ने बनाया फिर इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने फिर कुरैश ने फिर अब्दुल्लाह बिन जुबैर ने। इसके पश्चात् भी विभिन्न कालों में मरम्मत होती रही है। यह मुसलमानों का क़िबला है अत्यन्त शुभ तथा पवित्र स्थान है। मुसलमान अल्लाह के हुक्म से उसी की ओर मुख कर के नमाज़ पढ़ते हैं।

**बतने अ़र्ना :** अ़रफ़ात के क़रीब एक जंगल है जिसमें हज्ज का वक़ूफ़ अवैध है यह अ़रफ़ात के बाहर माना गया है।

**तसबीह :** सुबहानल्लाह ।

**तकबीर :** अल्लाहु अकबर

**तहलील :** लाइलाह इल्लल्लाह।

**जमरात या जमार :** मिना में तीन स्थान हैं जिन पर तीन खम्बे बने हुए हैं। यहां हाजी १०,११,१२ को कंकरीयां मारता है इनमें से पूरब वाला जम्रतुल ऊला, बीच वाला जमरातुल वुस्ता और इसके बाद वाले को जम्रातुल कुब्रा कहते हैं आम लोग इन को छोटो, मंझला और बड़ा शैतान भी कहते हैं।

**जहफ़ः** राबिग़ के क़रीब मक्का मुकर्रमा से तीन मंजिल पर एक मक़ाम है जो शाम वालों की मीक़ात है।

**जन्नतुलमुअ़ल्ला :** मक्का मुकर्रमा का क़बरिस्तान।

**जबले सबीर :** मिना में एक पहाड़ है।

**जबले रहमत :** अ़रफात में एक पहाड़ है।

**हज्ज :** निश्चित समय में इहराम बांधकर बैतुल्लाह का तवाफ़ करना , ९ जिलहिज्जः को अ़रफ़ात में ठहराना और उससे सम्बन्धित दूसरे काम करना।

**जबले क़ज़ह :** मुज़दल्फ़ा में एक पहाड़ है।

**हजरे असवद :** काला पत्थर, यह बैतुल्लाह के पूरब दक्खिन कोने पर आदमी की ऊंचाई पर गड़ा है, इसके चारों ओर चांदी का घेरा बना हुआ है। यह जन्नत का पत्थर है।

**हरम :** मक्का मुकर्रमा नगर के चारों ओर कुछ दूर तक का क्षेत्र हरम कहलाता है। इसकी सीमाओं पर चिन्ह लगे हैं इस हरम क्षेत्र में शिकार खेलना पेड़ काटना, हराम (वर्जित) है।

**हरमी :** वह शख़्स जो हरम क्षेत्र में रहता है।

**हिल्ल :** हरम क्षेत्र के बाहर और मीक़ात के अन्दर का क्षेत्र।

**हिल्ली :** हिल्ल क्षेत्र का रहनेवाला।

**हल्क़ :** सर के बाल मुंडाना ।

**हतीम :** बैतुल्लाह के उत्तरी और बैतुल्लाह से मिला हुआ एक भाग जो आदमी की ऊंचाई की दीवार से घिरा हुआ है। इसको कअ़बे में शामिल माना जाता है।

**दम** : इहराम की हालत में रोके गये कुछ कामों के कर लेने से एक बकरी ज़ब्ह करनी अनिवार्य होती है इसको दम देना कहते हैं। दम का अर्थ है खून।

**जुलहुलैफ़ः** मदीना मुनव्वरा से मक्के की ओर ६ मील पर एक स्थान है जो मदीना की ओर से आने वालों की मीक़ात है।

**ज़ाते अ़रक़** : एक स्थान का नाम है जो मक्के से इराक़ की ओर के रास्ते में पड़ता है यह इराक़ की ओर से आने वालों की मीकात है।

**रुक्ने यमानी** : बैतुल्लाह का पश्चिमी दक्खिना कोना।

**रुक्ने इराकी** : बैतुल्लाह का उत्तरी पूर्वी कोना।

**रुक्ने शामी** : बैतुल्लाह का उत्तरी पश्चिमी कोना।

**रमल** : तवाफ़ के पहले तीन चक्करों में कुछ अकड़कर चलना।

**रमी** : जमरात पर कंकरिया फेंकना।

**ज़मज़म** : बैतुल्लाह के क़रीब निकलने वाला वह सोता जिसे अल्लाह तआ़ला ने हज़रत इस्माईल अ़लैहिस्सलाम और उनकी वालिदा के लिए निकाला था उसका पानी बड़ी बरकत वाला है।

**सअ़ी** : सफ़ा व मरवा के बीच निश्चित नियम से सात चक्कर लगाना।

**शौत** : बैतुल्लाह के गिर्द एक चक्कर को शौत कहते हैं।

**सफ़ा** : बैतुल्लाह के करीब पूरब, दक्खिन और एक पहाड़ी जहीं से सअ़ी आरंभ की जाती है।

**ज़ब्ब** : मिना में मस्जिदे ख़ीफ़ के क़रीब एक पहाड़ी।

**तवाफ़** : बैतुल्लाह के गिर्द निश्चित नियम से सात चक्कर लगाना।

**अ़ुम्रः** हिल्ल या मीक़ात से इहराम बांध कर बैतुल्लाह का तवाफ़ करना और सफ़ा व मरवा के बीच सअ़ी करना।

**अ़रफ़ात या अ़रफ़ः** मक्का मुकर्रमा से पूरब की ओर १४ किलो मीटर पर एक मैदान जहां हाजी लोग ६ ज़िलहिज्जः को वकूफ़ करते हैं अर्थात ठहरते हैं।

**क़िरान** : हज्ज व अ़ुम्रः का इहराम एक साथ बांध कर पहले अ़ुम्रः फिर हज्ज करना।

**कारिन** : किरान हज्ज करने वाला।

**क़र्न** : मक्का मुकर्रमा से लगभग ६७ किमी० पर एक पहाड़ी है जो नज्दे हिजाज़, नज्देयमन और नज्दे तिहामा की मीकात है।

**क़स्र** : बाल कतरवाना।

**मीक़ात** : वह जगह जहां मक्का जाने के लिए इहराम बांधना अनिवार्य है।

**मताफ़** : तवाफ़ करने की जगह जो बैतुल्लाह के चारों ओर है ।

**मक़ामे इब्राहीम** : वह जन्नती पत्थर है जिस पर खड़े होकर इब्राहीम अ़लैहिस्साल ने कअ़बा बनाया था यह मताफ़ में बैतुल्लाह से पूरब एक शीशे के कुब्बे में रखा हुआ है।

**मुलतज़म** : हजरे असवद और बैतुल्ला के दरवाज़े के बीच की दीवार ।

**मिना** : मक्का मुकर्रमा से ५ किमी पूरक एक गांव है जहां हाजी कुर्बानी और रमी करते हैं।

**मस्जिदे ख़ीफ़** : मिना की बड़ी मस्जिद का नाम है।

**मस्जिदे नुम्र** : अ़रफ़ात की मस्जिद जो बहुत बड़ी है।

**मुज़दल्फ़ा** : मिना और अ़रफ़ात के बीच एक मैदान जो मिना से ५ किमी पूरब है।

**मुहस्सर** : मुज़दल्फ़ा से मिला हुआ एक मैदान इसी में अस्हाबे फ़ील (हाथी वालों) पर अ़ज़ाब आया था।

**मखः** — बैतुल्लाह के उत्तर पूरब कोने पर एक पहाड़ी जिस पर सअ़ी पूरी होती है।

**मीलैन अख़ज़रैन** : सफ़ा व मरवा के बीच दो हरे खम्बे जिन के बीच सअ़ी में दौड़ कर चलते हैं।

**मौक़फ़** : हज्ज में वकूफ़ (ठहरने) की जगह अर्थात मुज़दल्फ़ व अ़रफ़ात।

**मीक़ाती** : मीक़ात का रहने वाला।

**वकूफ़** : हाजी का अरफ़ात या मुज़दल्फ़ा में ठहरना।

**यौमे अ़रफ़ः** नवीं जिल्हिज्जः जिस में हाजी अ़रफ़ात के मैदान में वकूफ़ करते हैं।

**यौमुत्तरवियः** आठवीं ज़िल्हिज्जः

**यलमलम** : मक्का मुकर्रमा से दक्खिन और दो मंज़िल पर एक पहाड़ है जो हिन्दोस्तान, पाकिस्तान और यमन वालों की मीक़ात है।


*Anees Ahmad* 0522-2242385(S) 2241117(R)

**Famous Foot Wear**

**Wholeseller and Reteiler, Shoes, Chappal Sandle, Sleeper, Bally etc.**

301/11, Saray Bans Akbari Gate, Luknow

# श्रेष्ठ कौन है ?

# मनुष्य और कुत्ते में तुलना स्वयं कुत्ते द्वारा

मज़हर अहमद

जी हां मैं कुत्ता हूं एक तुच्छ चौपाया परन्तु मुझ में तथा मनुष्य में बहुत बड़ा अन्तर है। धरती तथा आकाश का अन्तर, अपितु पाताल तथा सर्वोच्च 'अर्श' का फिर भी हम दोनों में प्राण हैं, हम दोनों चौपाये हैं। इन के अतिरिक्त कुछ बातें हम दोनों में पाइ जाती हैं जैसे हमारी अनगिनत जातियां हैं तो मनुष्य भी अनगिनत जातियों में बंटा हुआ है परन्तु हम दोनों में अंतर यह है कि हमारी जातियां नस्ल (वंश) तक सीमित हैं परन्तु मनुष्य की एक नस्ल में अनेकों समुदाय हैं और हर समुदाय एक अलग मत रखता है।

एक और बात हम दोनों में सम्मिलित है। आप किसी मनोविज्ञानी से पूछिये कि क्रोध की स्थिति में मनुष्य तथा कुत्ते के शारीरिक कार्यों और प्रभावों में कुछ अंतर होता है? वह तुरन्त उत्तर देगा कुछ भी नहीं। इस लिये कि जब कुत्ता क्रोध में आता है तो पहले वह गुर्राता है, फिर ज़मीन पर पंजे सख़्त कर लेता है, उस की गरदन अकड़ जाती है, दांत बाहर निकल आते हैं आंखें उबल पड़ती हैं और वह पूरे शरीर की शक्ति लगाकर भौंकने लगता है। यहां तक कि उसका पूरा शरीर कंपन में आ जाता है और वह अपने मुकाबिल (प्रतिद्वन्दी) पर पिल पड़ता है। अब मनुष्य को लीजिए जब वह क्रोध में आता है तो पहले तो वह कटु भाषा बोलता है। फिर चिल्ला चिल्ला कर बोलने लगता है। उसके समस्त अंग विशेषकर मुखमण्डल की रेखाएं कड़ी हो जाती हैं। मुख से झाग निकलने लगता है। आंखें उबलने लगती हैं। शरीर कांपने लगता है यहां तक कि वह अपने प्रतिद्वन्दी से हाथा पाई करने लगता है।

परन्तु मुझे खेद है कि इतनी समानता पाते हए भी किसी आलोचक या समालोचक ने हम दोनों की तुलना पर कलम न उठाया अतः मैं स्वयं ही इस आवश्यक कार्य पर उठ खड़ा हुआ। स्पष्ट है कि मुझ में इतनी बुद्धिमत्ता तथा विवेक नहीं कि मैं अपने लेख में सुवाक्य तथा सुभाषण पर से पर्दे उठाऊं और एक एक वाक्य को कई कई अर्थों के वस्त्र पहनाऊं। मैं तो सीधी सादी और मोटी मोटी बातें जो हम दोनों के समीकरण में समान तथा एक खुली पुस्तक की भांति हैं उन ही को प्रस्तुत करूंगा।

जब से दुन्या बनाई गई उसी समय से न तो मेरा कोई घर है न मैंने कभी कोई घर बनाया। हम बे घर पैदा होते हैं और बेघर मरते हैं। अतः हम कह सकते हैं कि सारा संसार हमारा घर है। हां एक बात ज़रूर है कि किसी स्थान पर रहते रहते हमें उस स्थान से प्रेम सा हो जाता है फिर भी उतना कभी नहीं होता जितना किसी मनुष्य को अपने घर धन तथा पद से होता है। अब मनुष्य पर ध्यान दीजिए यह भी हमारे समान बेघर पैदा होता है और समसत संसार उसके लिये था परन्तु उसने अपनी संकीर्ण दृष्टि से अपनी विस्तृत सम्पत्ति को सीमित कर लिया और आज वह धरती उस के विधाता की नहीं रही अपितु मानव जाति में विभाजित हो गयी है। अब हर मनुष्य का अपना अपना देश तथा उस देश में अपनी अपनी ज़मीन है। वैसे बहुत से मनुष्य अब भी भूमि बिना ही पैदा होते और बिना भूमि के मर जाते हैं उनको मानव की किस जाति में गिना जाए यह स्वयं भूमि घर मनुष्य ही बता सकेगा।

कहते हैं मानव जाति में झगड़े का कारण तीन वस्तुएं हैं धन, भू और नारी, मैं कहता हूं झगड़े की वास्तविक जड़ वह शक्ति है जिस के द्वारा अति किया जाए। इसी के द्वारा एक बलवान बड़ी सरलता से निर्बलों की सम्पत्ति पर अधिकार जमा लेता है और बेचारे निर्बल दुहाई देते रह जाते हैं। क्षमा कीजिएगा नारी पर झगड़ा जभी होता है जब कोई व्यक्ति नारी को अपनी सम्पत्ति बना लेता है दूसरे को उसके पास फटकने नहीं देता । हम ने अपनी नारी जाति को किसी एक की सम्पत्ति कभी नहीं बनाया न इस के कारण हम में स्थाई झगड़ा हुआ। यह बात ज़रूर है कि कभी इस विषय पर सामेयिक झगड़ा उठ खड़ा होता है और हम एक दूसरे को नोच भंभोड़ लेते हैं। परन्तु हम में कोई भी अपनी नारी जाति को अपनी सम्पत्ति नहीं बनाता। हमें हर्ष है कि कुछ पश्चिमी मनुष्य भी हमारी प्राकृतिक नीति को अपनाने लगे हैं उनकी स्त्रियां स्वतंत्रता पूर्वक किसी से भी सम्पर्क स्थापित कर सकती हैं

परन्तु पूर्वी लोग अभी तक बैकवर्ड हैं।

अब एक बात और सामने आ रही है कि मनुष्य जब अपने भाई को अत्यन्त निर्लज्ज प्रकट करना चाहता है तो उसको निर्लज्ज कुत्ते की उपाधि प्रदान करता है। मैंने बहुत सोचा परन्तु इस उपमा की सत्यता को समझ न सका। क्या यह सत्य है कि हम मनुष्य से अधिक निर्लज्ज हैं कि हमारा नाम रखा जाए? परन्तु ठहरये थोड़ी देर के लिए हम अपने को निर्लज्ज माने लेते हैं पर हम पूछते हैं कि हमारी इस निर्लज्जा का कारण क्या है ? क्या यह कि हम नंगे रहते हैं? परन्तु यह बात मन को नहीं लगती इस कारण कि हम दोनों नंगे पैदा हुए थे। मनुष्य ने धीरे धीरे लज्जाग छुपाने का नियम अपना लिया और हम वैसे ही रहे। लेकिन अब मनुष्य के उन्नति प्राप्त सज्जनों को इस मूर्खता का आभास हो चला है और वह बड़ी तीव्रता से वस्त्र कम से कम कर रहे हैं और शीघ्र ही वह वस्त्र छोड़ भागें गे। नग्न कलबों का रिवाज बढ़ता जा रहा है। अब वह दिन दूर नहीं जब मनुष्य हमारी पंक्ति में आ जाएगा। अतः सिद्ध हुआ कि नंगा रहना निर्लज्जा नहीं और इस विषय में हम दोनों समान हैं।

अब एक बात और सामने है कि जब दो लोग लड़ते हैं तो तीसरा कहता है कि कुत्तां की भांति मत लड़ो। हम को अपना झगड़ालू होना स्वीकार है, परन्तु आप ने देखा होगा कि सदैव अपने बचाव में लड़ते हैं। जहां तक लड़ाई झगड़े की बात है। तो हम से अधिक मानव जाति में पाई जाती है और जब वह लड़ता है तो आन की आन में बस्तियों की बस्तियां मिट्टी में मिला देता है। लाखों बच्चों को अनाथों को जवानों को, अपाहिजों को मार डालते तथा स्त्रियों को विधवा बना देता है। शान्ति के नाम पर बम बरसाता है। धर्म के नाम पर अल्प संख्यकों के गले काट डालता है। उनके पूज्य स्थानों को मिटा देता है। गर्भवतियों के पेट फाड़ देता है। दूध पीते बालकों को आग में झोंक देता है। उनके मकानों दुकानों को जला देता है उनको लूट लेता है। जब वह यह सब कुछ कर गुज़रता है तो मनुष्य ही उसको प्रतिकिया कह कर उसके कुकर्मों को छुपा देता है। परन्तु आप मनुष्य हैं आप अपने करतूतों पर पर्दा डाल सकते हैं हम कुत्ते हैं हम जो पर्दे के आगे हैं वही पर्दे के पीदे भी हैं।

एक और बात है जो हम दोनों में पाई जाति है। वह है लालच। यह सत्य है कि हम रोटी के एक टुकड़े के लिए देने वाले के पीछे पीछे लग जाते हैं परन्तु मनुष्य भी लालची है। वह भी कुछ टकों के लिए अपनी आबरू, अपना कर्तव्य, बल्कि अपना धर्म तक बेच देता है। कुछ टकों के लिए वह अपने नायक का बध कर देता है। विरोधी देश के लिए अपने देश की ज़ासूसी कर गुज़रता है। हम अपने मालिक के पांव अवश्य चाटते हैं पर हम में लालच के साथ प्रेम भी होता है परन्तु मनुष्य केवल अपने लाभ के लालच में नौकरी पाने या कुछ पैसे पाने के लिए किसी पद वाले या माल वाले के पांव चाटता है। अतः कृपया आप किसी लालची मनुष्य को तिरस्कारित करने के लिए उसे लालची कुत्ता कह कर हमें अपमानित न किया करें बल्कि हम में का कोई अपने मालिक से बे वफाई करे तो उसे लालची मनुष्य कह दिया करें। मनुष्य जानता है कि हम जान दे देना स्वीकार कर लेते हैं परन्तु बे वफ़ाई नहीं करते। यह प्रकृति की देन है। मैं कभी कभी सोचता हूं कि अब तक कितने पैग़म्बर सुधारक, नायक मानव को मानव बनाने के लिए आए पर मानव जाति पूर्णतया मानव न बन सकी परन्तु यदि एक भी सुधारक हमारी जाति में आ जाता तो हम मानव बन जाते। परन्तु ऐसा न हुआ। हम कल भी कुत्ते थे आज भी कुत्ते हैं परन्तु मनुष्य पूर्णतया न कल मनुष्य था न आज मनुष्य है फिर भी हम में और उसमें बड़ा अंतर है। धरती आकाश का अन्तर, पाताल तथा अर्श (सातों आकाशों से ऊपर ईश सिंघासन) का अन्तर इस कारण कि वह सर्वश्रेष्ठ सृष्टि है और हम सर्वहीन सृष्टि। पर आप से अनुरोध है कि आप इस वृतांत के सुनने के पश्चात् निर्पेक्ष हो कर निर्णय करें कि श्रेष्ठ कौन है ? आप का निष्ठावान कूकुर आपके निर्णय की प्रतीक्षा करेगा। ।

---

(पृष्ठ १५ का शेष)

तरह मसूढ़े मज़बूत होते हैं। आज कल लोग डिपरेशन का शिकार रहते हैं। काम बहुत अधिक होता है। अपने भोजन में केवल एक सेब शामिल कर लें तो बहुत लाभ होगा। शरीर के दोषित पदार्थ बाहर निकल जाएंगे। तबीअ़त बहाल रहेगी। सेब का रस भी पिया जाता है। मगर अच्छा यही है कि अच्छी तरह घुला सेब धीरे धीरे चबा कर खाएं ताकि दांत भी साफ़ हो जाएं। इस में दो प्रकार के तेज़ाब होते हैं जिनके कारण जिगर अच्छा काम करता है। जोड़ों का दर्द भी नहीं होता दिल को शक्ति मिलती है। आप सेब खाइये आप की परेशानी दूर हो जाएगी।

## सुन्दर रहन सहन

# (बच्चियों की तालीम व तर्बियत)

(ग्यारहवीं क़िस्त)

ख़ैरुन्निसा 'बेहतर'

### घुट्टी :–

गुले बनफ़्शा एक ग्राम, बादियान एक ग्राम, बीख़कासनी एक ग्राम, बर्गे गाव ज़बान एक ग्राम, मवेज़ मुनक्कः एक ग्राम, अंजीर विलायती एक ग्राम, अस्लुस्सूस मुक़श्शर एक ग्राम, गुले सुर्ख, एक ग्राम, तुख्म ख़बाज़ी एक ग्राम, सपिस्तान एक ग्राम, उन्नाब विलायती एक ग्राम, मुन्डी एक ग्राम, बर्ग सनाय मक्की एक ग्राम, उबाल कर के खमीरा बनफ़शः छः ग्राम में मिला कर स्वयं भी पीना चाहिए और बच्चे को भी देना लाभदायक है। बच्चे को घुट्टी पिलाते समय उस में आधा बादाम घिसकर मिला दो।

### पेट का दर्द :–

पुदीना सूखा दो ग्राम, बादियान दो ग्राम, इलायची सफेद दो ग्राम, काला नमक दो ग्राम पानी में पीस कर पिलाओ। अगर दस्त भी आते हों तो उनमें तेजपात मिला कर जोश देकर पिलाओ। अगर जुकाम हो और पेट में बिगाड़ हो तो यह दवा दो गुले बनफ़शः दो ग्राम, बादियान दो ग्राम, बीख़ कासनी दो ग्राम, बर्ग गाव ज़बान दो ग्राम, मवेज़ मुनक्का दो ग्राम, जोश देकर एक ग्राम शर्बत बनफ़्शः मिलाकर पिलाओ। अगर मतली हो तो शिकंजबीन नअ़नाई मिलाकर पिला दो।

### पेचिस :–

अगर पेचिस हो और आंव भी आती हो तो यह दवा दो लुआ़बे बर्ग गावज़बान एक ग्राम, लुआ़बे रेश–ए–ख़त्मी एक ग्राम, लुअ़तो इस नुस्खे में शीर गुलनार फारसी ज़ियादा कर दो, अगर पाखाना मुलय्यन और बार बार होता हो और बच्चे की कमज़ोरी बढ़ती जाती हो तो ऊद ग़र्क़ी एक ग्राम, अस्ले बादियान एक ग्राम, ज़ीरा सफेद एक ग्राम जोश देकर उस में ज़हर मुहरा खताई घिस कर मिला दो, और दिन में कई बार पिलाओ बड़ा लाभदायक है। अगर मतली हो तो बजाय ज़हर मुहरा ख़ताई के ज़रशक बिहीदाना पीस कर मिला दो।

### सूखा :

अगर बच्चा दुबला हो गया हो, पाख़ाना बहुत आता हो और वह फूला फूला सा हो, और मुंह में मक्खियां भी लगती हों तो यह लक्षण सूखे की बीमारी का है। बच्चों को अक्सर हो जाती है। पहला नुस्खः जो अभी बता चुकी हूं पिला कर देखो। अगर मर्ज़ की शुरूआत है तो इंशाअल्लाह फायदा होगा। अगर न हो तो गूलर का दूध और दूधिया कत्था इस में मिला कर पिलाओ। अगर चालीस दिन इस्तेमाल करोगी तो फिर शिकायत न रह जायेगी। बार बार तजर्बा किया गया है। यह भी सुनलो कि यह बीमारी अक्सर ऊपर का दूध पिलाने से हो जाती है। यह मर्ज़ बहुत ख़तरनाक होता है। बच्चा सूखता चला जाता है। मर्ज़ बढ़ता चला जाता है, आख़िरकार काम तमाम हो जाता है।

### पसली और सीना :–

अक्सर बच्चों को पसली की शिकायत पैदा हो जाती है। इसी से निमानिया पैदा हो जाता है। इसकी जल्द खबर लेना चाहिए। अगर बच्चे की सांस नाक से लेने में फूलती हो और पसली में गड्ढा पड़ जाता हो तो तुरन्त हींग और अन्डी का तेल लगा दो, या एलवा लगाकर बंगला पान गर्म करके बान्ध दो एल्वे का लेप भी गर्म कर लो। अक्सर थोड़ी शिकायत में प्याज़ भी लाभदायक है। अगर सीना भी जकड़ा हो और पसली की शिकायत भी हो, यहां तक कि निमोनिया का पूरा असर हो तो यह दवा करो मुस्तगी रूमी छः ग्राम, बालछड़ छः ग्राम, मोम खालिस छः ग्राम, मग़्ज़ बादाम दस अदद, रौग़न गुल तेईस ग्राम। मुस्तगी और बालछड़ को बारीक करके बादाम को इतना पीसो कि तेल निकलने लगे, फिर मोम और रोग़न ख़ालिस में यह सब मिला कर आग पर रख दो और फिर लकड़ी से एक जान कर लो, फिर डिबिया में रख दो। पसली और सीने में हाथ गर्म कर के लगाओ। इस तरह दिन में कई बार लगाओ, और रूई का पहल गर्म करके रख दो। यह नुस्खः बड़ा लाभदायक है। राई का प्लास्टर भी बड़ा लाभप्रद है, मगर इसे बच्चे सहन नही कर सकते । यह बड़ों को भी लाभदायक है।

**क़ब्ज़ :–** अगर पेट में भारीपन

हो, पाख़ाना न आता हो और बुख़ार भी हो तो यह समझ लो कि पेट की तकलीफ़ से बुखार आ गया है तो कस्टर आयल पिला दो, दो एक पाख़ाना के होने से यह तकलीफ दूर हो जायेगी। अगर कस्टर आयल नहीं है तो मकोय सूखी, पुदीना सूखा, काला नमक सब तीन तीन ग्राम जोश देकर पिलाओ। इससे पाखाना हो जायेगा। या चने की दाल बिर्यां बाबरंग की मूसी, काला नमक पीस कर घूरा कर दो। जल्द खबर लो क्यों कि अक्सर क़ब्ज़ से पसली की शिकायत हो जाती है। और कभी ठंडक से भी। अगर यह नुस्खा तैयार रखो तो समय पर कठिनाई न हो। छोटी हड़ ढाई सौ ग्राम, पुदीना एक सौ पचीस ग्राम, अदरक एक सौ पचीस ग्राम, हींग दस ग्राम, काला नमक साठ ग्राम, सुहागा बिरयां पचास ग्राम, इनको जोश दे लो कि हड़ नर्म हो जाये पानी इतना डालो कि इन में सोख ले बाकी न रहे। जब यह सूख जाये तो नीबू के रस में डाल कर किसी हांडी में भर लो, जरूरत पर तुम भी खाओ और बच्चे को भी हाथ से मल कर खिलाओ क़ब्ज़ न रहेगा। अगर फफून्द भी लग जाये तो कोई हर्ज नहीं, खाती रहो। अगर धूप में रख दो तो असर कम न होगा। यह नुस्खः भी तैयार रखो लाभप्रद है – अदरक का रस एक सौ पचीस ग्राम, पुदीना का अ़रक़ एक सौ पचीस ग्राम, नीबू का रस एक सौ पचीस ग्राम, चारों नमक जो मशहूर हैं बारह ग्राम मिलाकर बोतल में रख दो। खाने के बाद एक छोटा चमचा कभी कभी जरूरत पर दे दिया करो किसी चीज़ का आदी न हो।

**दस्त कै :–** उन बच्चों के लिए जिनको कै भी आती हो और पाखाना भी यह चुटकी बना कर रख लो – बंस लोचन कबूद चार ग्राम, दाना हैल खुर्द तीन ग्राम, ज़र्द नबाद तीन ग्राम, बादियान तीन ग्राम पोस्त पीला तुरंज तीन ग्राम, गुले सुर्ख़ तीन ग्राम, जीरा सफेद, खाने वाला नमक, दाना हैल बड़ा, मुस्तगी रूमी, ज़रशक, बेहीदाना सब तीन तीन ग्राम। यह सब बारीक पीस कर चुटकी बना कर रखलो बच्चों की जरूरत पर देती रहो।

अगर दस्त भी है, खून आंव भी तो यह दवा करो – ऑवल सूखा, धनिया सूखी, जीरा सफेद, बादियान सब बराबर लेकर आधा कच्चा और आधा भून कर के बारीक पीस लो। थोड़ा थोड़ा देती रहो। इंशा अल्लाह फायदा होगा।

**पथरी :–** अगर पथरी की शिकायत है तो इलाज जल्द करो। इसके लिए आसान नुस्खः यह है – गेन्द की पत्ती का अ़रक़ काली मिर्च साठ साठ ग्राम पीस कर मिला कर पिलाती रहो। सफेद इलायची का इस्तेमाल रखो। बड़ों के लिए मिकदार (मात्रा) जियादा कर दो। (जारी)

अनुवाद तथा प्रस्तुति : मो० हसन अंसारी


ख़ैरा बाद में सच्चा राही
यहां से प्राप्त करें।
आ़रिफ़ अ़ली अंसारी
बुक सेलर
लतीफ़ मार्केट ख़ैराबाद
सीतापुर
फोन : 252321


# मुनाजात

मौलाना मुहम्मद सानी हसनी

शुक्र हर दम करें तेरे इनआम पर
सब्र से काम लें रंजो आलम पर
हम जियें तो जिये दीने इस्लाम पर
मौत आये तो आये तेरे नाम पर
दीन पर हम को साबित कदम रख मुदाम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

नूर है तू हमें नूरे ईमान दे
नूर है तू हमें नूरे इर्फान दे
नूर है तू हमें नूरे कुर्आन दे
नूर है तू हमें नूर हर आन दे
नूर वह जिस से रौशन हों अअ़ज़ा तमाम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

अ़िल्म दे रिज़्क दे हर मरज़ दूर कर
दिल को ज़िक्रे इलाही से मअ़मूर कर
हर ग़मों फ़िक्र को हम से काफूर कर
तू है सत्तार हर अ़ैब मस्तूर कर
दे खुशी वो मसर्रत हमें सुब्हो शाम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

हुस्ने अख्लाक़ दे हुस्ने अअ़माल दे
हम को होशो ख़िरद दे ज़रो माल दे
ख़ैरो बरकत हमें हर महो साल दे
आ़फ़ियतो सिहत हम को हर हाल दे
कर हमें नेक खू, नेक दिल, नेक नाम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

उम्रो ईमान में बख़्श बरकत हमें
दे शबो रोज़ जौके़ अ़िबादत हमें
कर अता नेक से नेक आदत हमें
हम करें ख़िदमते ख़ल्क का इहतिमाम
तू हमारा है मालिक तेरे हम गुलाम

# यह कैसा अंधकार है ?

मुहम्मद सरवर फ़ारूक़ी नदवी

आज सारे संसार में क़ानून, अदालत, इंसाफ़ की धज्जियां उड़ाई जा रही हैं, माल व दौलत की लालच का यह हाल है कि हवाई जहाज़ या ट्रेन की दुर्घटनाओं में घायलों को इन्सानी सहायता के बजाए ज़ेवर और मूल्यवान सामान हासिल करने के लिए उनको मार दिया जाता है और हाथ काट डाले जाते हैं, एक आम शहरी सुबह घर से निकलने के बाद इस सन्देह में गिरफ्तार रहता है कि शाम को सुरक्षित वापस होता भी है या नहीं, अगर हो भी गया तो घर के लोग किस अवस्था में होंगे।

जब कभी दुर्घटना सामने आती है उसको देख कर दिल थर्रा जाता है ज़रा सोचिए कि ट्रेन या जहाज़ में कैसे–कैसे लोग सवार होते हैं, कोई डियूटी पर जाने के लिए, कोई अपने घर वालों रिश्तेदारों से इस दुःख दर्द के साथ, कि अब साल छः महीने मुलाक़ात न होगी, विदा होने वाला आंसू पोंछ रहा होगा, विदा करने वाले माता–पिता, पत्नी बच्चे रो रहे होंगे, कोई व्यापारी होगा, जो नफ़ा और फ़ायदा का क्या–क्या सपना देखता हुआ घर से निकलता होगा, कि दो चार दिन में वापस आ जाऊंगा फिर जीवन में खुशियां ही खुशियां होंगी, कुछ ऐसे लोग भी होंगे, जो बहुत दिनों के बाद प्रदेश से अपने घरों को वापस आ रहे होंगे, साथ में उपहार और दिल में घर वालों और रिश्तेदारों के मिलने के सपने उमंगें ले रही होंगी उधर घर वाले उनके आने के दिन व घंटा तो अलग, मिनट व सेकेण्ड गिन रहे होंगे और घर में खुशी का माहौल होगा।

खुशी और अच्छे सपनों के साथ बूढ़े जवान औरत व मर्द छोटे बच्चे सो ही रहे थे कि अचानक एक ज़ोरदार धमाके ने कितनों को हमेशा की नींद सुला दिया, और कुर्आन मजीद की आयत (फिर न तो वसीयत कर सकेंगे और न अपने घर वालों में वापस जा सकेंगे) की थोड़ी सी झलक जो कुर्आन में इन्सान को सतर्क करने की बयान की गयी है, यह एक नसीहत है, कितनों की चीख व पुकार ने क़ियामत का माहौल पैदा कर दिया, जिसने जहां से आवाज़ सुनी हिन्दू मुसलमान दुर्घटना की ओर दौड़ा, जिससे जो कुछ बन पड़ा मुसीबत के मारे की सहायता में लग गया, ऐसा क्यों न हो, इन्सान तो इन्सान ही है उसको इन्सान से प्यार है चाहे वह किसी भी धर्म का हो, मालदार हो या ग़रीब, ऊंची ज़ात के हों या नीची जात का हो, वह कुछ भी हो, किसी सम्प्रदाय का हो, आखिर हैं तो एक ही माता–पिता आदम व हव्वा की सन्तान।

परन्तु बड़े ही अफ़सोस की बात है कि उस समय भी कुछ ऐसे पत्थर दिल इन्सान ही नहीं बल्कि इन्सानों के संरक्षक जो इन तड़पने वालों की फर्याद सुनने के बजाए उनके ज़ेवर और सामानों को हासिल करने के लिए उनको मार देते हैं और हाथ काट डालते हैं, घायलों से पीड़ित जिन्दा बच रहने वाला चिल्ला रहा होता है कि मुझे बचाओ, और लाशों के ढेर पुकार–पुकार कर कह रहे होते हैं मुझ को तुम इस नज़र से देखो जो तुम्हें तड़पा दे, परन्तु जिसके दिल मुर्दा हो चुके होते हैं और आंखों का पानी मर चुका होता है वह तड़पने और बचाने के बजाए लूटने में लगे हुए होते हैं दुर्घटना इतनी भयानक होती है कि उस पर जितना भी अफ़सोस किया जाए कम है, परन्तु इससे कहीं ज्यादा अफ़सोस और फ़िक्र की बात यह है कि हमारे समाज व सोसाइटी में ऐसे लोग हों जो दुख के आंसू बहाने और फ़रियाद सुनने के बजाए इन दुख के मारों का सामान लूटने लगते हैं और ज़िन्दा को मार कर बेहोश कर देते हैं।

यह कैसा अन्धकार है जो बढ़ रहा है ? दिलों की आवाज़ से हम परेशान क्यों नहीं होते ? जिस पर अत्याचार किया जा रहा हो उनको देख कर हमारे अन्दर मुहब्बत क्यों नहीं पैदा होती, किसी के बुढ़ापे का सहारा छीन लेने में मज़ा क्यों आ रहा है ? किसी विधवा की आह और अनाथ के रोने से हम क्यों नहीं थर्राते ?

ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती रह०, बाबा फ़रीद बख़्तियार काकी रह०, निज़ाम उद्दीन औलिया रह० की मुहब्बत का नशा क्यों उमड़ गया ? कबीर, तुलसी, रहीम, रसखान, टैगोर, इकबाल की मुहब्बत के जलाए गीतों के दिये क्यों कमजोर पड़ गये ? अज़ानों की पवित्रता, गुरूद्वारों की मधुर आवाज़,

गीता के श्लोकों की महक कहां उड़ गयी ? यह कैसा अन्धेरा है जो छा रहा है ? यह कैसी इन्सानियत और कैसी आत्मा है जिसने अच्छे बर्ताव और मानवता को समाप्त कर दिया है।

कुर्आन मजीद ने मुसलमानों को अच्छी उम्मत का होना फरमाया है और उनको संसार में अच्छाई और भलाई फैलाने के लिए नियुक्त किया है। इतना बड़ा पद साफ़ इशारा कर रहा है और दावा कर रहा है कि मुसलमानों का अच्छा होना, नेक होना, अच्छे आचरण का होना, अच्छे गुण का होना ही काफ़ी नहीं बल्कि जिस समाज और सोसाइटी के वह आदमी हैं उसकी अच्छाई और भलाई और सुधार भी उनकी ज़िम्मेदारी है, ज़बान की सच्चाई, दिल की पाकी, अमल, उदारता परहेज़गारी, ईमानदारी व अमानतदारी, शर्म व हया, न्याय, माफी, एहसान, सत्कार, दृढ़ता, निस्पृहता, शिक्षा व दीक्षा, रिश्तेदारों का हक़, पड़ोसी का हक़, अनाथों की देख रेख, विधवाओं के साथ अच्छा व्यवहार, ग़रीबों की ज़रूरत को पूरा करना, बीमार की देख–रेख और इन्सानियत के हक़ को पूरा करने के ज़रिये रहमत व मुहब्बत की वह बारिश की जा सकती है जिससे इन्सानी समाज में ख़ैर व बरकत आ जाए, इस्लाम की सही और सच्ची तारीख़ ऐसे महापुरूषों के आचरण से रौशन है जिन्होंने पूरे जोर के साथ गुमराही के अंधेरों को मिटाने के लिए एड़ी चोटी का जोर लगादिया, जैसे हज़रत उमर बिन अब्दुल्ल अज़ीज़ रह०, हज़रत हसन बसरी रह०, हज़रत इमाम अहमद बिन हंबल रह०, इमाम ग़ज़ाली रह०, हज़रत शेख अब्दुल क़ादिर रह० भारत में ख्वाजा मुईन उद्दीन अजमेरी रह० आदि का व्यक्तित्व इस दावत व तबलीग में इन्हीं लोगों की व्याख्या है जो हर मुसलमान पर फ़र्ज़ है, संसार किताब को नहीं किताब वालों को देखता है और इस्लामी शिक्षा किताबों में नहीं बल्कि मुसलमानों के अन्दर हर–हर समय तलाश करता है।

दावत व तबलीग़ अम्र बिल मअ़रूफ़ नहि अनिल मुनकर इस्लाम के शरीर की रीढ़ की हड्डी हैं शहर–शहर गांव–गांव जगह–जगह घूम कर सारे इन्सान को बराबर समझना, इन्साफ़ करना, इस घटाटोप अंधकार में मुहम्मद सल्ल० की सुन्नत को और सहाबा की मेहनतों को आम करने के लिए बेचैन होने की ज़रूरत है, जिस प्रकार हज़रत अबूबक्र रज़ि० ने कहा था (भला यह सम्भव है कि दीन में कतर बेवन्त हो और मैं जिन्दा रहूं।)

●●●

(Shop) : 266408
(Resi.) : 260884

**Iqbal & Co.**

**Deals :**
*FRIEND EMBROIDERY MACHINE*

**Deals in :**
Embroidery Raw Materials Machine & Spare parts etc.

Pul Firangi Mahal, Behind Pata Nala Police Chowki, Chowk, Lucknow- 2260063

**MOHD. ASLAM**
(S) 268845, 213736
(R) 268177, 254796

**Haji Safiullah & Sons**

*Jwellers*

Nagina Market Akbari Gate, Lucknow
Opp. Gadbad Jhala, Aminabad Road, Lucknow.

# निकाह और पति पत्नी के अधिकार

सादिका तस्नीम फ़ारूक़ी

निकाह अस्ल में मर्द व औरत का मेल, जोल, एक दूसरे की सहायता और आपस की हमदर्दी हमेशा के लिए एक प्रतिज्ञा है, निकाह होते ही पति पत्नी में एक खास क़िस्म का ऐसा गहरा और मज़बूत सम्बन्ध क़ायम हो जाता है कि जिसमें कोई बाधा डालने वाला नहीं होता और हर एक पर ऐसे हक़ हो जाते हैं जिनका पूरा करना वाजिब (ज़रूरी) हो जाता है।

इस प्रतिज्ञा के समय रसूल सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम से एक छोटा खुत्बा देना साबित है जो बहुत ही सादगी के बावजूद इतना लम्बा चौड़ा है, जिसमें दोनों की हर कठिनाई का हल और हर दंगा का निर्णय आसानी से हो सकता है, इस खुत्बा में बार–बार अल्लाह से डरने की सख्त चेतावनी दी गयी है ताकि पति व पत्नी लापरवाही के साथ खेल तमाशा न समझें बल्कि निकाह के समय अल्लाह से डरते हुए उन तमाम ज़िम्मेदारियों पर ग़ौर करें जो एक दूसरे पर होती हैं, और अपने दिल में उनके पूरा करने का संकल्प करें, और जो वचन अल्लाह व रसूल के हुक्म के अनुसार है उस पर उम्र भर जमे रहें। निकाह होते ही जो अधिकार पति के पत्नी पर होते हैं उनमें से पहला अधिकार पति की इज़्ज़त का खयाल रखे यानी पत्नी पति को अपने से बड़ा और हाकिम माने, अल्लाह ने मर्द को औरत पर एक खास किस्म की श्रेष्ठता देते हुए फरमाया है कि मर्द औरत पर हाकिम हैं।

हुज़ूर सल्ल० का इरशाद है कि अगर मैं किसी को सज्दः करने का हुक्म देता तो औरत को हुक्म देता कि वह अपने पति को सज्दः करे, परन्तु अल्लाह के सिवा किसी को सज्दः करना जायज़ नहीं, इसलिए यह हुक्म नहीं दिया गया, दूसरा अधिकार यह है कि पत्नी हर समय अपने पति की सेवा के लिए तैयार रहे।

हज़रत अस्मा रह० ने एक बार बारगाहे नबवी सल्ल० में अर्ज किया कि मैं औरतों की ओर से यह पूछने के लिए हाज़िर हुई हूं कि मर्द नमाज़े जुमा, और सवाबे जमाअ़त, बीमार को देखने, नमाज़े जनाज़ा व दफन मय्यत, और जिहाद आदि इबादतों के द्वारा हम पर प्रधानता ले जाएंगे, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि "तुम्हारा केवल अपने पति के लिए बनाव सिंगार करना, उसकी मर्जी के अनुसारा चलना मर्दों के उन आमाल के बराबर हैं, और उसमें तुम वही सवाब पाओगी जो मर्दों को मिलेगा।"

"हज़रत अनस (रह०) से रिवायत है कि किसी पत्नी को पति के खुश करने में ही जिहाद का सवाब मिलता है।"

तीसरा हक़ यह है कि पत्नी अपने पति के घर और उसके सामान की हर हालत में देख–रेख करे उसको किसी प्रकार बरबाद न होने दे और ज़रूरत भर खर्च करती रहे, चौथा हक़ यह है कि पत्नी पति की खुशी में खुश रहे, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि अच्छी पत्नी वह है जब पति उसकी ओर देखे तो उसको अपनी मुस्कुराहट से खुश कर दे।" पांचवां हक़ यह है कि पत्नी अपने पति के दिली प्यार रखे, पति के अ़लावा कोई मर्द कितना ही खूबसूरत क्यों न हो उस पर अपना दिल न झुकाए, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया अच्छी पत्नी वह है जो अपनी इज़्ज़त के बारे में संयमी हो और अपने पति से प्रेम करने वाली हो, छटा हक़ यह है कि पत्नी पति की अमानत में विश्वासघात न करे कि उसमें दुगना गुनाह है।

हज़रत अम्मार (रह०) बिन यासिर की रिवायत है कि हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि "जो औरत अपने पति के बिछौने में विश्वास घात करेगी उसको सारी उम्मत का आधा अ़ज़ाब भुगतना पड़ेगा, क्यों कि औरत का बनाव सिंगार और उसका शरीर केवल पति के लिए है," सांतवां हक़ यह है कि पत्नी पति के बच्चों की देख रेख करे, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि जो पत्नी बच्चों का पालन पोषण करेगी उसको जन्नत में मेरे नज़दीक जगह हासिल होगी।

इस्लाम ने जिस प्रकार पतियों के अधिकार पत्नियों पर किये हैं उसी प्रकार पत्नियों के अधिकार पतियों के ज़िम्मा ज़रूरी किया है। उनमें से पहला हक़ पत्नी का महर है, पत्नी खुशी से माफ कर दे तो यह उसका एहसान है वरना उस पर ज़ोर और दबाव डालकर

उससे माफ़ कराना जायज़ नहीं है, दूसरा हक़ पति के ज़िम्मा बीवी का खर्च है जिसका अदा करना वाजिब है, हुज़ूर सल्ल० ने फ़रमाया कि "पति को पत्नी पर खर्च करने का क़ियामत में बदला व सवाब दिया जाएगा।"

एक हदीस में है कि जो आदमी अपनी पत्नी बच्चों की फिक्र में रात गुज़ारता है उसको जिहाद के बराबर सवाब मिलता है, तीसरा हक़ यह है कि पति पत्नी के साथ खुशी और नर्मी से पेश आए, हुज़ूर सल्ल० ने फरमाया कि जो आदमी अपनी पत्नी को तसल्ली दे वह नफ़्ल नमाज़ से ज़्यादा सवाब पायेगा, चौथा हक़ यह है कि पति घर के काम काज में पत्नी की मदद करे क्योंकि खुद हुज़ूर सल्ल० घर के काम में पत्नियों की सहायता करते थे, पांचवां हक यह है कि पत्नी की ओर से जो तकलीफ पहुंचे उस पर सब्र करे उसको बदला लेने का इरादा न करे बल्कि अच्छे तरीक़े से उसका सुधार कर दे, छटा हक़ यह है कि फुरसत में और अकेले में पत्नी की शिकायात सुने उसकी कल्पनाओं का लिहाज रखे और उसकी तकलीफ दूर करने की हर हालत में कोशिश करे और उसको सन्तुष्ट रखे, सातवां हक़ यह है कि पत्नी अगर दीनदार न हो तो उसको दीनदार बनाए और दीन की तमाम ज़रूरी बातें सिखाए, इबादत का आदी बनाए, क्योंकि पति से जहां उसके आमाल की जांच पड़ताल होगी तो साथ ही पत्नी के आमाल के बारे में भी पूछ गछ होगी।

हदीस शरीफ में है कि मर्द अपने घर का ज़िम्मेदार है और क़ियामत के दिन उससे उसकी जिम्मेदारी का सवाल होगा, बात यह है कि पति अपनी सम्पत्ति के अनुसार पत्नी के लिए खाने कपड़े और रहने का प्रबंध करे, परेशान न करे महर अदा कर दे, नेकी और भलाई से उससे सख्ती न करे वरना आपसी लड़ाई झगड़े का अन्देशा है, और पत्नी पति की आज्ञा पालन व खिदमत करे, पति के हुक्म की नाफ़रमानी न करे, जो पत्नी पति की इज़्ज़त करेगी तो उसको सवाब आख़िरत के अलावा एक फायदा यह भी है कि दंगा व फसाद के वक़्त पति से मुक़ाबला न कर सकेगी, मुक़ाबला करने का अकसर परिणाम यह होता है कि पत्नी नाजुक मिजाज़ होने की वजह से मुकाबला की ताब न लाकर आपत्ति का शिकार हो जाती है परन्तु अगर पति की इज़्ज़त अपने दिल में क़ायम रखेगी तो आपस की लड़ाई व झगड़ा का जल्दी फैसला हो जाता है और पत्नी इस प्रकार अपने आप को हजारों तकलीफों से दूर रख सकती है।

यही पति पत्नी की रूह है कि पति पत्नी दोनों के मेल मिलाप से एक अच्छा जीवन होगा और यह उस समय होगा जब आपस में मुहब्बत व प्यार हो और अल्लाह की कायम की हुई हद से आगे न बढ़े। यही निकाह की हक़ीक़त है, और यही वह अधिकार है जो निकाह होने के बाद एक दूसरे पर ज़रूरी हो जाते हैं और यही खुत्बा है जो निकाह के समय पढ़ा जाता है।

परन्तु अफसोस है कि इस युग में ज्यादा इल्म होने के बावजूद लोग निकाह की रूह और पति पत्नी के अधिकारों से बेपरवाह हैं।

**सुन्नतों को अपनाओ और बिदअ़तों से दूर रहो।**

## मानवता का सन्देश

वास्तव में तो मानवता का सन्देश वही है जो मानव को पैदा करने वाले ने मानव को दिया जो आसमानी धर्म वालों के पास उपलब्ध है या होना चाहिए। परन्तु धर्म वालों में बहुत सी बातों में बड़ा मत भेद है जैसे पैदा करने वाले के विषय में क्या क्या मानना चाहिए तथा उस की इबादत (पूजा) किस प्रकार करना चाहिए आदि । परन्तु, बहुत सी बातें ऐसी हैं जो एक समाज के लिए बड़ी जरूरीहैं और वह हर धर्म में पाई जाती हैं तथा हर सज्जन को प्रिय हैं। भारत में कई धर्म प्रचलित हैं। हम विभिन्न धर्म वाले एक साथ प्रेम भाव से रहते हैं परन्तु कभी कभी धार्मिक बातों ही के कारण दंगा फसाद भी हो जाता है जिससे देश वासियों को बड़ी हानि उठाना पड़ती है।

इन्हीं बातों को देखकर हमारे धर्म गुरू मौलाना सय्यद अबुल हसन अली नदवी ने "मानवता का सन्देश" नाम की एक संस्था स्थापित करके एक आन्दोलन चलाया था। यह संस्था अब तक अपना काम कर रही है। इसका उद्देश्य है कि जिन सामाजिक आचरणों पर सभी धर्म तथा सभी मनुष्य सहमत हैं हम सब मिल कर उन बातों को समाज में प्रचलित करें तथा हर मनुष्य को उसका सन्देश दें जैसे–

असत्य छोड़ें सत्य अपनाएं, हम नौकर हों, मजदूर हों, कि व्यापारी हों, अपने अपने काम ज़िम्मेदारी से करें। निर्धनों, विकलांगों, नंगों, भूखों की बिना भेद भाव सहायता करें किसी पर कोई आपत्ति आ जाए तो उसकी सहायता करें, जुवा, शराब और तमाम नशों से, दूर रहें। दूसरों की बहन बेटियों को अपनी बहन बेटी समझें इसी प्रकार के बहुत से कार्य हैं जिन में हम सब सहमत हैं उनको अपनाएं, जल्से (गोष्ठियां) कर के लोगों को इस कार्य का सन्देश दें। ज़ियादा जानकारी के लिए सम्पर्क करें।

सेक्रेटरी "मानवता का सन्देश"
पो० बाक्स ६३ नदवा लखनऊ

# ज़रूरी है रैगिंग पर रोक

योगेश कुमार गोयल

अपनी आंखों में ढेरों स्वप्न सजोये छात्र जब स्कूलों की सीमित परिधि से निकल कर कॉलेजों में प्रवेश करते हैं तो उनके दिल में नयी उमंग व उत्साह के साथ–साथ 'रैगिंग' नामक हव्वा भी व्याप्त होता है। स्कूल के सुरक्षित वातावरण से निकलकर आये छात्रों के लिए एकदम अजनबी माहौल व अजनबी लोगों की भीड़ में सामंजस्य स्थापित करना बहुत मुश्किल होता है। ऐसे में उनकी तमन्ना होती है कि कॉलेज में उन्हें वरिष्ठ छात्रों से हर तरह का सहयोग मिले और उनके अनुभवों का लाभ उठाने का मौका मिले। लेकिन जब तक जूनियर व सीनियर छात्रों के बीच संवाद के पर्याप्त अवसर नहीं होते, तब तक ऐसा हो पाना बहुत मुश्किल होता है। इसी वजह से कॉलेजों में बरसों पहले 'रैगिंग' नामक प्रथा की शुरूआत हुई थी।

रैगिंग की शुरूआत का उद्देश्य यही था कि जूनियर छात्र अपने सीनियर छात्रों को सम्मान देने की मानसिकता बनाएं और सीनियर तथा जूनियर छात्रों के रिश्तों में मजबूती आये। इससे खासकर जूनियर छात्रों को बहुत फायदा भी होता था। जूनियर और सीनियर छात्रों के रिश्तों में प्रगाढ़ता आने से जहां जूनियरों को उनके अनुभवों से सीखने का मौका मिलता था, वहीं उनसे काफी मदद भी मिलती थी तथा उनमें अपनी प्रोफेशनल लाइफ में भी अपने से बड़ों या उच्च पदों पर आसीन लोगों को सम्मान देने की भावना विकसित होती थी।

शुरूआती दौर में जब रैगिंग की प्रथा आरंभ हुई थी, तब यह 'स्वस्थ रैगिंग' मानी जाती थी, क्योंकि उस समय रैगिंग का अर्थ होता था वरिष्ठ छात्रों द्वारा नये छात्रों से हल्के–फुल्के हंसी–मजाक के साथ परिचय तथा मेल–जोल का दायरा बढ़ाना और नये माहौल में उनका स्वागत करना लेकिन पिछले कुछ वर्षों से देश भर के कॉलेजों में रैगिंग का काफ़ी विकृत रूप उभर कर सामने आया है। देश के नामीगिरामी कॉलेजों में भी ऐसा माहौल बन चुका है कि ऐसा लगता है, जैसे सीनियर छात्रों ने रैगिंग को नये छात्रों के साथ अभद्र व्यवहार करने तथा मनमानी व उलूलजुलूल हरकतें करवाने के लाइसेंस के रूप में स्वीकार लिया है।

देश में रैगिंग का रूप कितना विकृत हो चुका है, इसका अनुमान इसी से लग जाता है कि विभिन्न राज्यों में सरकारों द्वारा रैगिंग पर पाबन्दी लगाने के लिए अध्यादेश जारी किये जा रहे हैं। गौरतलब है कि केरल के राज्यपाल द्वारा एक अध्यादेश जारी करके राज्य में सभी शिक्षण संस्थाओं में रैगिंग पर पहले ही प्रतिबंध लगाया जा चुका है और रैगिंग करने वाले या इसके उक्साने वालों को जुर्माना के साथ–साथ जेल की सजा का प्रावधान भी किया गया है।

इतना ही नहीं, ऐसे छात्र के खिलाफ़ शिकायत दर्ज किये जाने पर शिक्षण संस्थान के प्रमुख द्वारा उसके विरुद्ध एक सप्ताह के भीतर कार्रवाई न करने पर उसे भी दो वर्ष की जेल की सजा का प्रावधान किया गया है। ऐसा ही अध्यादेश तमिलनाडु में भी जारी किया जा चुका है। कर्नाटक में पुलिस स्टेशनों में भी रैगिंग रजिस्टर बनाया जाने लगा है, जिसमें रैगिंग के दौरान छात्र द्वारा दिये जाने वाले अपराधों को दर्ज किया जाता है, जिनका उल्लेख छात्र के चरित्र प्रमाणपत्र में भी किया जाता है।

माना जाता है कि रैगिंग की शुरूआत इंग्लैण्ड में हुई थी, जहां यह एक भद्रतापूर्ण परिचय का माध्यम हुआ करता था और सीनियर छात्र अपने जूनियरों की हरसंभव सहायता किया करते थे तथा जूनियर अपने सीनियरों को पूरा आदर–सम्मान देते थे। कुछ दिनों की रैगिंग के बाद 'फ्रैशर्स डे' मनाया जाता था और इसी के साथ रैगिंग बंद हो जाती थी। इस प्रथा का मूल उद्देश्य स्कूली माहौल से निकलकर आये जूनियर छात्रों को सीनियर छात्रों के और अधिक नजदीक लाना तथा उनके दिल से संकोच भावना को मिटाना होता था।

समय के साथ–साथ रैगिंग के स्वरूप और उद्देश्य में काफी बदलाव आया है। आज रैगिंग का जो स्वरूप हमारे सामने है, उसे 'स्वस्थ रैगिंग' की संज्ञा कदापि नहीं दी जा सकती बल्कि यह रैगिंग का पूर्णतया विकृत रूप ही कहा जा सकता है। रैगिंग के दौरान नये छात्रों को काफी परेशान किया

जाता है। कई कॉलेजों में तो नये छात्रों को मानसिक व शारीरिक तौर पर बुरी तरह प्रताड़ित भी किया जाता है। नये छात्रों को बात–बात पर गालियां देना आम बात हो गयी है। गलत प्रवृत्ति के कुछ सीनियर छात्र जूनियर छात्रों के साथ अश्लील आचरण करने, उन्हें बीड़ी–सिगरेट, शराब या अन्य नशीले पदार्थ का सेवन करने के लिए बाध्य करने से भी नहीं चूकते।

ऐसा नहीं है कि रैगिंग का स्वरूप केवल भारत में ही विकृत हुआ है, बल्कि अमेरिका जैसे सभ्य कहे जाने वाले देश में भी सीनियर छात्रों द्वारा जूनियरों पर रैगिंग के दौरान क्रीम, सॉस तथा ऐसे ही अन्य खाद्य पदार्थ डालने की घटनाएं सामने आती रही हैं। हाल ही में अमेरिका के शिकागो शहर के एक उपनगर के 'ग्लेनब्रुक नॉर्थ हाई स्कूल' की कुछ सीनियर छात्रों ने पारम्परिक 'पॉवडर पफ फुटबॉल मैच' के दौरान न सिर्फ जूनियर छात्राओं की जमकर पिटाई की बल्कि रैगिंग के दौरान उन पर पेंट, कूड़ा–कचरा, बियर तथा विष्ठा तक डाली। पुलिस द्वारा अब इस मामले की जांच की जा रही है।

देश की राजधानी दिल्ली के कुछ कॉलेजों में तो विगत वर्षों में रैगिंग के दौरान जूनियर छात्र–छात्राओं की आपस में बाकायदा मंत्रोच्चारित शादियां कराने के मामले भी प्रकाश में आये हैं। रैगिंग के दौरान की जाने वाली ऐसी ही कुछ अमानवीय हरकतों से परेशान होकर कुछ छात्र तो कॉलेज छोड़ने का ही आत्मघाती निर्णय ले बैठते हैं।

कुछ कॉलेजों में इतनी भद्दी व अश्लील रैगिंग से बचने के लिए होस्टलों की पहली या दूसरी मंजिलों से नीचे कूदकर भाग जाते हैं और इस भागदौड़ में कुछ अपने हाथ–पांव तुड़वा बैठते हैं तो कुछ को अपने प्राणों से भी हाथ धोना पड़ता है। कुछ वर्ष पूर्व ऐसे ही कुछ मामले हरियाणा में फरीदाबाद के एक इंजीनियरिंग कॉलेज में भी सामने आये थे। रैगिंग से शारीरिक व मानसिक तौर पर प्रताड़ित होने वाले छात्रों में आत्महत्या जैसे हृदयविदारक फैसले लेने की प्रवृत्ति भी बढ़ रही है। शायद यही वजह है कि अदालतों को देश भर के कॉलेजों में रैगिंग पर अंकुश लगाने के लिए आगे आना पड़ा है।

पिछले कुछ वर्षों में देश के कुछ कॉलेजों में तो रैगिंग का बहुत भयावह रूप सामने आया है। रैगिंग के दौरान सीनियरों के अमानवीय व अश्लील आदेशों का पालन न करने वाले नये छात्रों की हत्या किये जाने के मामलों ने रैगिंग के औचित्य पर ही प्रश्न चिन्ह लगा दिया है।

गौरतलब है कि ६ दिसम्बर १९९६ को अन्नामलाई वि.वि. में रैगिंग के दौरान घटी ऐसी ही एक बहुत ही वहशियाना घटना के बाद दोषी सीनियर छात्र डेविड को अदालत द्वारा उसके घृणित अपराध के लिए करीब ३६ वर्ष तक ही अवधि की तीन अलग–अलग सज़ाएं सुनाई गयी थीं, लेकिन लगता है कि ज़ियादा कालेजों में इस तरह की घटना के परिणामों के मद्देनजर भी छात्रों ने इनसे कोई सबक़ नहीं लिया।

शायद यही वजह है कि पिछले कुछ वर्षों से देश भर में रैगिंग पर कानूनी तौर पर पाबंदी लगाने पर विचार किया जा रहा है। सर्वोच्च न्यायालय ने तो स्पष्ट शब्दों में कहा है कि शिक्षा परिसरों में रैगिंग रोकना शिक्षा संस्थानों का नैतिक ही नहीं, कानूनी दायित्व भी है, जिसे न रोक पाना दण्डनीय अपराध की श्रेणी में लाया जाएगा और ऐसे संस्थानों की संबद्धता और उन्हें प्रदत्त सरकारी वित्तीय सहायता समाप्त की जा सकती है। सुप्रीम कोर्ट का कहना है कि रैगिंग के नाम पर किये जाने वाले दुर्व्यवहार को रोकना कॉलेज के प्रबंधन, उसके प्रधानाचार्य, अन्य अधिकारियों व छात्रावास के अधीक्षकों की जिम्मेदारी बनती है।

सर्वोच्च अदालत का यह भी कहना है कि शिक्षा सत्र आरंभ होने से पूर्व ही शिक्षा संस्थानों द्वारा प्रवेश के लिए विज्ञापन तथा अन्य सूचनाएं, जारी करते समय उन्हें यह भी बताना चाहिए कि रैगिंग दंडनीय अपराध है और इसके दंड के रूप में शिक्षा संस्थान से निष्कासन, निलंबन तथा सार्वजनिक क्षमायाचना के साथ–साथ आर्थिक जुर्माना भी हो सकता है।

## अनुरोध

अगर आप हज्ज के मसाइल से, हज्ज अदा करने के तरीक़े से भली भांति अवगत हैं और आप के आस पास से कोई भाई हज्ज को पहली बार जा रहे हैं तो आप उन से मिलें और उनसे हज्ज के विषय पर रोचक बातें करते हुए वह जो न जानते हों उनको बता समझा कर सवाब लें।

# इस्लाम यूरोपीय देशों में

## बड़ी तेज़ी से फैल रहा है

अम्न और शांति के एक मात्र ईश्वरीय पैग़ाम 'इस्लाम' को, पश्चिमी मीडिया और उसके सुर में सुर मिलाने वाले राष्ट्रीय मीडिया द्वारा भ्रामक दुष्प्रचार के माध्यम से आतंकवाद का पर्याय घोषित करने की कुचेष्टा लंबे अर्से से जारी है। विश्व में कहीं भी घटित होने वाली किसी भी घटना के मूल में सुनियोजित षड्यंत्र के तहत इस्लाम को घसीटने की कोशिशें अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर यहूदी और ईसाई शक्तियां तथा राष्ट्रीय स्तर पर एक वर्ग करता रहा है।

ये शक्तियां आख़िर किस आधार पर इस्लाम के ख़िलाफ़ दुष्प्रचार में संलिप्त है ? क्यों ये तत्व एक ईश्वरीय जीवन–व्यवस्था को जो सम्पूर्ण मानव समाज के लिए उपयोगी एवं ईश्वर की अनुकंपा प्राप्त करने का एक मात्र माध्यम है, को मिटाने के लिए कृत संकल्प है ? लेकिन क्या इन ईश्वर विरोधी शक्तियों की साज़िशों से एकेश्वरवाद का चिराग बुझ जाएगा ? क्या पूर्व में भी इस ईश्वरीय जीवन व्यवस्था को मिटाने के प्रयासों में ये शक्तियां सफल हुईं? नहीं, ये शक्तियां पहले भी इस्लाम की इस ईश्वरीय–व्यवस्था को समाप्त नहीं कर पायीं और भविष्य में भी इस पर किसी प्रकार की आंच नहीं आने वाली।

फिर जब भी इस ईश्वरीय जीवन व्यवस्था के खिलाफ़ भ्रामक प्रचार व दुष्प्रचार की रणनीति इसके विरोधियों द्वारा अपनायी गयी, तभी उनको मुंह की खानी पड़ी, कारण यह कि ईश्वर का यह संदेश तीव्रता से लोगां के दिलों को अपील करने लगा और थके, हारे निराश और हताश लोग इसकी शीतल छाया में आकर सुख व संतोष पाने लगे।

फिर वह काल चाहे अंतिम ईश्वरीय संदेष्टा हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) का हो, जहां अरब इन्कारियों ने इस जीवन– व्यवस्था को समूल नष्ट करने के लिए एड़ी–चोटी का जोर लगा दिया था, इस जीवन–व्यवस्था को अपनाने वालों को पीड़ाजनक भयंकर यातनाएं दी गयी थीं, या फिर आज का युग हो जब कि पूरे संसार में इस व्यवस्था को उखाड़ फेंकने के षड्यंत्र रचे जा रहे हैं।

आज इस्लाम के अनुयायियों के ख़िलाफ़ ज़बरदस्त दुष्प्रचार ही नहीं किया जा रहा, बल्कि उनके देशों को भी निशाना बनाया जा रहा है। उन्हें आतंकवादी, आतंकवाद के पोषक और न जाने क्या–क्या अनर्गल संज्ञाएं दी जा रही हैं।

इस घटाटोप अंधकार में भी यह हर्ष का विषय है कि उसी पश्चिमी मीडिया के एक अंग 'न्यूयार्क टाइम्स' ने विगत दिनों अपनी एक रिपोर्ट में इस सच्चाई को रहस्योद्घाटित किया है कि यूरोप के देशों में इस्लाम सबसे तेजी से फैल रहा धर्म है। चौकाने वाली बात तो यह है कि इतने व्यापक, भ्रामक एवं दुष्प्रचार के बावजूद इन देशों में तेजी से ईसाइ धर्म के अनुयायियों की संख्या लगातार घट रही है। 'इस पत्रिका की यह रिपोर्ट इस बात का खुला प्रमाण है कि इस्लाम और मुसलमानों के खिलाफ किये जा रहे दुष्प्रचार से आम जनता पर कोई असर नहीं पड़ा है।(कान्ति से ग्रहीत)

इस्लाम की प्रकृति में कमानी की लचक है
जितना इसे दाबोगे उतना ही यह उभरेगा।

●●●

एक बड़े आलिम हज्ज को जा रहे थे उन को विदा करने के लिए एक भीड़ जमा थी हर आदमी सलाम करके कहता कि हरम शरीफ़ में मेरे लिए दुआ कीजिएगा और मदीने में हुजूर के रौज़े पर मेरा सलाम पहुंचा दीजिएगा। कुछ लोगों को लगा कि हर एक से सलाम पहुंचाने का वअ़दा कैसे पूरा हो सकेगा। किसी ने मौलाना से पूछ लिया, तो आप ने कहा तुम लोग मुझ से सलाम पहुंचाने को कहो। मैं वहां यह कहूंगा कि जिन जिनलोगों ने मुझ से कहा है मैं सब की ओर से सलाम पेश कर रहा हूं।

# भारतीय धर्मनिरपेक्षवाद की आज़माइश

प्रफुल्ल विदवई

यदि सरकार एक करोड़ बूढी हो चुकी गायों और बैलों पर प्रतिवर्ष १८००० करोड़ रूपये या देश के सब स्कूलों में प्राथमिक शिक्षा पर प्रतिवर्ष होने वाले कुल ख़र्च की आधी से भी अधिक राशि ख़र्च करने लगे तो आपको कैसा लगेगा ? क्या आप चाहेंगे कि गायों की रक्षा करने के लिए एक विशेष उपसैनिक–केन्द्रीय टास्क फोर्स की स्थापना की जाए ? और क्या आप जानते हैं कि, 'चरमकोटि की क्रूरता' जन हत्या या मानव प्राणियों का नाजी–शैली का उत्पीड़न नहीं, बल्कि 'गायों' के साथ किया गया क्रूर व्यवहार होता है।

ये प्रश्न न तो कोई लफ्फाजी हैं और न अतिशयोक्ति पर आधारित हैं। उपर्युक्त लागत अनुमान इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट, बेंगलूर के पूर्व निदेशक और कभी भारत सरकार की मांस समिति और पशु कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष रह चुके प्रो० एन०एस० रामास्वामी द्वारा लगाये गये हिसाब पर आधारित है। भारत में २१ करोड़ गाय और बैल हैं जो विश्व की गायों और बैलों की संख्या का छठां भाग है। यदि हर वर्ष ज़िबह की जाने वाली एक करोड़ गायों को पांच वर्ष (५ करोड़ को एक वर्ष) तक जिंदा रखा जाए, तो उनके लिए उनकी चरागाह भूमि की जरूरत पड़ेगी जितनी कि भारत में इस समय है। यदि हर पशु पर हर दिन मात्र १० रूपये भी खर्च किये जाएं तो हर वर्ष यह खर्च १८,००० करोड़ रुपये होगा। गौ–संरक्षण बल की मांग पशु कल्याण बोर्ड के अध्यक्ष गुमानमल लोढ़ा द्वारा की गयी है जिन्होंने हाल में गुवाहाटीके चिड़ियाघर के अधिकारियों को शेरों और चीतों को गोमांस खिलाना बंद करने का आदेश दिया। श्री लोढ़ा के आग्रह पर उन्हें जिन्दा मुर्गे खिलाए गए, जिनके पंखों के कारण वे दम घुटने से मरते मरते बचे। चरमकोटि की क्रूरता पर बयान पिछले महीने लाये गये गायों के प्रति क्रूरता निरोध के विधेयक २००३ की प्रस्तावना में दिया गया है।

प्रस्तावना के आरंभ में गाय को प्रेम, करुणा, परोपकार, सहिष्णुता तथा अहिंसा जैसे दिव्य गुणों का मूर्त रूप बताकर उसकी स्तुति की गयी है। संभवतः ऐसा पहली बार हुआ है कि दैवत्व की गुहार लगाते हुए और एक धर्म के सिद्धांतों को पूरे समाज पर आरोपित करते हुए, मानो वे सार्वभौम हों, किसी विधेयक का मसौदा तैयार किया गया है। विधेयक में गायों और उनकी संतान के साथ किये जाने वाले दुर्व्यवहार को 'संज्ञेय और गैर–जमानती अपराध' करार दिया गया है और उनकी हत्या के लिए २ से ७ वर्ष तक के दंड की व्यवस्था की गयी है। यहं विधेयक भारतीय धर्मनिरपेक्षवाद की बहुसंख्यावादी दबाव का मुकाबला करने की क्षमता को आजमाने की कसौटी है। यह जानकर तसल्ली होती है कि भाजपा के धर्मनिरपेक्ष सहयोगी दलों ने अभी इस संबंध में क़ानून बनाये जाने की प्रकिया को रोकने के लिए उसे मजबूर कर दिया है। लेकिन इतना भर काफी नहीं है। इस बिल को तैयार किये जाने पर जो प्रतिक्रियाएं हुई हैं, वे प्रतिरक्षात्मक हैं। प्रतिकियाएं व्यक्त करने वालों में कांग्रेस और कुछ मुसलमान बुद्धिजीवी भी शामिल हैं।

यह मांग करने में किसी को खेद अनुभव नहीं करना चाहिए कि गौ–हत्या पर प्रतिबन्ध नहीं लगाया जाना चाहिए। इस प्रतिबंध से संविधान के दो महत्वपूर्ण मूल अधिकारों का उल्लंघन होगा, और वे हैं – अपनी इच्छानुसार जीने और व्यवहार करने (और खाने) की आजादी (बशर्ते कि उससे दूसरे लोगों के अधिकारों का अतिक्रमण न हो) और कोई पेशा, व्यापार या धंधा करने का अधिकार। यह उल्लंघन नाकाबिले बर्दाश्त है। इस लिहाज से यह और भी उद्वेगकारी है, कि किसी एक समुदाय की 'धार्मिक भावनाओं' का सम्मान करने के झूठे बहाने से यह विधेयक भारत में बहुसांस्कृतिक, बहुधार्मिक समाज में एक समूह विशेष की तुष्टि करता है। इससे असहिष्णुता की ताकतों से दरपेश ख़तरे के कारण पहले से जूझ रहा प्रजातंत्र और भी कमज़ोर पड़ जाएगा।

दूसरा इसमें संदेह है कि पूरी हिन्दू जाति या वे लोग जिनके पास मवेशी हैं, गौ हत्या पर प्रतिबंध चाहते हैं। अधिकतर हिन्दू जीवन के आध्यात्मिक और व्यवहारिक पहलुओं के सामंजस्य के प्रति द्वैधवृत्ति रखते

हैं। कुछ का मानना है कि गाय कुछ अर्थों में पूज्य है। लेकिन यह बात गाय के प्रति उनके व्यवहार में परिलक्षित नहीं होती। चारे की खोज में हमारी गलियों और सड़कों पर भटकती और यातायात में बाधा डालती अधभूखी, कमज़ोर पड़ी गायों पर निगाह डालने से किसी भी अविश्वासी को विश्वास हो जाएगा? बैलों के साथ किया जाने वाला व्यवहार तो और भी बर्बरतापूर्ण होता है। प्रो० रामास्वामी के अनुसार, उनसे उनकी क्षमता से अधिक काम लेने के लिए सामूहिक रूप से प्रतिदिन उन्हें पांच अरब मारें खानी पड़ती हैं।

अधिकतर हिन्दुओं का पशुओं के प्रति किसान का सा रवैया होता है। जब उनका उपयोगी जीवन समाप्त हो जाता है तो वे उन्हें कसाइयों को बेच देते हैं। भारत में मवेशी रखने वाले सबसे ज्यादा लोग हिन्दू हैं। इस प्रकार गौ–हत्या का मुद्दा हिन्दुओं के बीच की राजनीति से जुड़ा है। विदेशी नस्ल की गौओं के बछड़ों के प्रति (जिन्हें भारवाही पशुओं के तौर पर इस्तेमाल नहीं किया जा सकता) तो मवेशी–मालिकों का रवैया और भी बेसब्री भरा है। पैदा होने के फौरन बाद ही उनकी हत्या कर दी जाती है। जैसा कि पूर्व मुख्य न्यायाधीश एस.आर.दास ने १९५८ में कहा था, 'जब व्यक्ति या समुदाय का अंतःकरण किसी हिन्दू मवेशी मालिक को अपनी दूध न देने वाली गाय को कसाई को बेचने से नहीं रोक सकता, तो विधि निर्माण का दबाव ही उससे जुड़े 'दैवत्व और धार्मिकता' को सहारा दे सकता है। लेकिन कानूनी प्रतिबंध से चोरी छिपे की जाने वाली गौहत्या को बढ़ावा ही मिलेगा। लगभग आधे मांस–पशुओं की हत्या गैर कानूनी तौर पर ३००० प्राधिकृत नगरपालिका कसाई खानों से बाहर ही की जाती है।

तीसरा, गौहत्या बंद करने से, पूर्वोक्त १८,००० करोड़ रुपये से भी अधिक राशि के अलावा भी समाज पर एक बहुत बड़ा आर्थिक बोझ पड़ेगा। भारत में ४०–५० प्रतिशत चारे की कमी है। आर्थिक रूप से नाकारा, बीमार और बूढ़े मवेशियों को जबरदस्ती ज़िन्दा रखने से भूमि और लोगों पर दबाव और भी बढ़ेगा। इस विधेयक से गाय और उसकी 'संतान' जिसमें बैल भी शामिल हैं, की हत्या पर सामूहिक प्रतिबंध लग जाएगा। इससे किसानों को मजबूरन कुछ नाकारा मवेशियों को जिन्दा रखना पड़ेगा जिसके परिणमा स्वरूप दूध के दाम बढ़ जाएंगे। इसके अलावा चमड़े का निर्यात न हो पाने के कारण ७५ करोड़ डालर से भी अधिक का और मांस उत्पादों, मुख्यतः गोमांस के निर्यात से होने वाली २० करोड़ डालर की आमदनी का भी नुकसान उठाना पड़ेगा। इस के भी अलावा गोजातीय पशुधन अर्थव्यवस्था से जुड़े कम से कम डेढ़ करोड़ लोग, जो कि पशुओं के व्यापार से लेकर, मांस बिक्री, चमड़ा बनाने और उसके संसाधन तथा हड्डियों की बिक्री के काम में लगे हुए हैं, अपनी आजीविका खो बैठेंगे। इसका अर्थ है कि प्रतिवर्ष १५,००० करोड़ रुपये का मूल्य योजित नुक़सान।

और अंततः यह कहना गलत है कि हिन्दू गोमांस नहीं खाते और उनके मुख्य धर्मग्रन्थों में गोमांस के सेवन को वर्जित बताया गया है। लोगां की आहार संबंधी आदतों का सर्वेक्षण करने से पता चला है कि अनेक हिन्दू खासतौर पर निम्न जातीय और दलित हिन्दू नियमित रूप से गोमांस का सेवन करते हैं। उसी प्रकार १८ करोड़ गैर हिन्दू भारतीय भी नियमित रूप से गोमांस का सेवन करते हैं। उदाहरण के तौर पर केरल में गोमांस की खपत कुल खपत की ४० प्रतिशत है। वहां को ४/५ आबादी गोमांस खाती है। ऐसे लोगों में ७२ हिन्दू समुदाय भी शामिल हैं भारतीय गोमांस, बकरे या मुर्गे के मांस से दो गुना सस्ता है। ग़रीब लोगों के लिए बढ़िया क़िस्म के प्रोटीन का यह पसंदीदा स्रोत है। इसके न मिल पाने से उनके खाने का खर्च बढ़ जाएगा। विभिन्न राज्यों के सर्वेक्षण से यह पता चलता है कि गोमांस की तीन चौथाई खपत गैर मुसलमानों में होती है। भारत में गोमांस के उत्पादन में प्रतिवर्ष ७ प्रतिशत की वृद्धि होती रही है, जबकि उसकी तुलना में बकरे और मुर्गे के मास के उत्पादन में यह वृद्धि ४ से ५ प्रतिशत तक की होती है।

प्रस्तावित कानून के बारे में आपत्ति के दो और कारण हैं। इसके मूल में यह ग़लत विश्वास है कि भारत में गौहत्या के 'आक्रांता' मुसलमान अपने साथ लाये। किन्तु लब्धप्रतिष्ठ भारतीय और यूरोपीय इतिहासकारों ने सामुदायिक विवरणों के जरिये यह सिद्ध कर दिया कि गोमांस सेवन प्राचीन भारत की आहार प्रथाओं का अभिन्न अंग था। पशुबलि, जिसमें गोवध भी शामिल है, बहुत से भारतीय धर्मग्रंथों में विदित है, जिनमें वेद, उपनिषद (उदाहरण के तौर पर बृहदारण्यक उपनिषद) धर्मशास्त्र और अन्य धर्म ग्रंथ शामिल हैं। प्राचीन भारत में ब्राह्मणों सहित सभी वर्ग गोमांस

का सेवन करते थे। बाद में बहुत से ब्राह्मणों ने इसका सेवन बंद कर दिया। लेनिक वे कुल आबादी के पांच प्रतिशत से भी कम हैं।

दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर और 'दि मिथ ऑफ दि होली काउ' पुस्तक के लेखक श्री डी०एन०झा का कहना है कि 'किसी भी मुख्य धर्मग्रंथ में गोवध को उतना बड़ा या उतना गंभीर पाप नहीं बताया गया है, जितना कि मदिरापान या ब्राह्मण की हत्या को। १६वीं शताब्दी में आकर दक्षिणपंथी हिन्दू सम्प्रदायवादियों द्वारा, जो कि मुसलमानों की आहार प्रथाओं को 'अन्य देशीय' कह कर और उसका घोर विरोध करके मुसलमानों को अलग–थलग करने पर आमादा थे, व्यापक राजनीति लामबंदी के हथियार के तौर पर गौ–हत्या पर प्रतिबंध लगाने की मांग की गयी।' प्रो० झा की यह पुस्तक एक छोटे से भारतीय प्रकाशक द्वारा प्रकाशित की गयी थी और वर्ष २००१ में इस पर प्रतिबंध लगा दिया गया। जब प्रतिबंध हटाया गया तो उसके बाद कोई भी भारतीय प्रकाशक उसे छापने के लिए तैयार नीं हुआ। अंततः उन्हें इसको ब्रिटेन में प्रकाशित कराना पड़ा।

यह विधेयक पाखंडपूर्ण है क्योंकि इसमें पशुओं के अधिकरों के आधार पर प्रतिबंध लगाने की व्यवस्था की गयी है। इसमें पशुओं के विरुद्ध क्रूरता को रोकने के सांविधानक विजय को राज्य सूची से हटाकर समवर्ती सूची (जो कि केन्द्र और राज्यों के लिए समान है) में लाने की कोशिश की गयी है। यदि इसका उद्देश्य छलपूर्ण है। यदि इसका उद्देश्य पशुओं के प्रति क्रूरता को रोकना है, तो इसमें केवल गाय की ही बात क्यों कही गयी है, जब कि सैकड़ों दूसरे पशुओं के साथ भी दुव्यर्वहार किया जाता है ? ऐसा नहीं है कि भारतीय समाज पशुओं की खास देखभाल करता हो। अधिकतर गौएं सड़ी हुई सब्जियां, मांस और सबसे बढ़कर कूड़ेदानों में से बहुत बड़ी मात्रा में प्लास्टिक की थैलियां खाती हुई पायी जाती हैं। वे कई प्रकार की बीमारियों से पीड़ित रहती हैं, जिनमें खुर–मुखपका रोग भी शामिल हैं। बहुत से राज्यों ने आक्रोशपूर्वक बिल का विरोध किया है। उदाहरण के तौर पर मेघालय के मुख्यमंत्री ने कहा है कि 'एक आहार विशेष किसी एक समुदाय के लिए भोजन हो सकता है, जैसे कि उत्तर–पूर्व के पहाड़ी लोगों के मामले में, जिनका मुख्य आहार गोमांस है। मिजोरम के मुख्यमंत्री का यह तर्क है कि 'यदि विधेयक पास हो जाता है तो उससे सूअरों की हत्या पर प्रतिबंध लगाने के प्रयासों की शुरूआत हो सकती है। लेकिन गोमांस और सूअर का मांस दोनों ही हमारे आहार का हिस्सा हैं। यहां तक कि आंध्र प्रदेश भी गौ–हत्या पर प्रतिबंध लगाने के विरुद्ध है। सही बात तो यह है कि भाजपा ने एक हिन्दू 'परंपरा, गढ़ ली है, जिसे वह सभी भारतीयों के गले उतारना चाहती है। यहशुद्ध रूप से एक ख़तरनाक बहुसंख्यकवाद है। इसे संविधान के निदेशात्मक सिद्धान्तों के नाम पर भी उचित नहीं ठहराया जा सकता। अनुच्छेद ४८ कृषि और पशुपालन की व्यवस्था से संबंधित है। भाजपा का एजेंडा संकीर्ण और संप्रदायवादी है। इसे रद्दी के ढेर में डाल देना चाहिए।

## व्यायाम

स्वस्थ रहने के लिए हर व्यक्ति को व्यायाम (वरज़िश) अवश्य करना चाहिए। व्यायाम से शरीर के अंगों में चुस्ती और फुरती पैदा होती है। क़ब्ज़ दूर होता है, नीन्द अच्छी आती है। काम काज में मन लगता ह और शरीर स्वस्थ रहता है।

व्यायाम के लिए पाखाना पेशाब के पश्चात् सुब्ह का समय बहुत अच्छा होता है। अगर सुब्ह को वरज़िश न कर सकें तो शाम को कर लिया करें। वरज़िश (व्यायाम) रोज़ निश्चित पर होना चाहिए और केवल इतनी की जाए कि थक न जाएं। ज़ियादा वरज़िश में लाभ के बजाए हानि की शंका है।

पहले पहल पांच सात मिनट सेअधिक वरज़िश न करें। फिर धीरे धीरे बढ़ाते हुए आधे घन्टे तक पहुंचाएं। दीहातियों के लिए डंड, बैठक लगाना, दौड़ना, कबड्डी खेलना तैरना आदि अच्छी वरज़िश हैं। बूढ़े और निर्बल लोगों के लिए यह व्यायाम (कसरतें) अनुचित हैं। वह सुब्ह शाम खुले स्थानों पर टहल लिया करें। जिन लोगों के सर में दर्द रहता हो, दृष्टि कमज़ोर हो उनके लिए डंड़ बैठक वाली वरज़िश हानिकर है। गर्मियों में वरज़िश कम कर लेना चाहिए सर्दियों में बढ़ा देना चाहिए।

दवा कोई वरज़िश से बेहतर नहीं।
ये नुस्खा कम खर्च बाला नशीं।।
उठो सुब्ह और वरज़िश करो।
हर इक काम में चाक़ चौबन्द रहो।।